तीर्थंगुण माणेकमाला

संयोजक—
पं० माणेकविजय गणी

तीर्थगुण माणेकमाला

[स्तवन चौवीसी सज्झाय और तप विधियुक्त]

संयोजक—

पं० श्री माणेकविजय जी गणी

प्रकाशक—

शा०—कपूरचन्द् जी हांसा जी

जावाल (मारवाड)

सवत् १९९७ पचम आवृत्ति वीर स० २४६६

प्रति २०००

शुभेच्छा ना बे बोल

आ तीर्थगुण माणेकमाला नी चार आवृत्तियो पछी आ पांचमी अवृत्ति शास्त्री मां पगट करतां सहर्ष जणाववुं जोइये के सत्तर वर्ष नी वये जैनाचार्य श्रीमद् विजय मोहन सूरीश्वर जी महाराज साहव ना सदुपदेश नो लाभ मुंबइमां मलतां संसार ने असार जाणी आत्म कल्याण नो उत्तम मार्ग रूपी संयम वडोदरा मुकामें सं० १९७९ ना फागण मासमां अंगीकार करी गुरुदेव नी कृपा थी अल्पबुद्धि होवा छतां प्राप्त थयेल ज्ञान ना प्रतापे जिनेश्वर प्रभुना, तथा तीर्थपतिओ ना गुणो गावा मन प्रेरायुं ; जे थी आ तीर्थगुण माणेकमाला बनावी जनता समक्ष मुकतां जणावुं छुं के अनेक भव्य जीवो आ स्तवनावली थी, तीर्थ गुणो, प्रभु गुणो हृदय मां उतारि दिन प्रति दिन पोताना आत्म ने निर्मल बनावी अविचल पद ने पामो आ प्रयास नी शक्ति जैनाचार्य श्रीमद् विजय मोहन सूरीश्वर जी महाराज साहेब तथा गुरु श्री आचार्य महाराज श्री विजय प्रताप सूरी जी नी अमी द्रष्टिना प्रतापे मानी विरमुं छुं ।

वाचकोये अनुप्रास मिलन दोष या भूल ने गौण बनावी प्रभु भक्ति मां आगल बनी आत्म श्रेय साधो अेज महेच्छा ।

जणावनार—आचार्यदेव विजयमोहन सूरीश्वर जी म० ना पट्टधर आ० विजय प्रताप सूरी जी म० नो चरण किंकर—

सं० १९९६ पन्यास माणेक विजय

निवेदन

श्री जैन शासन मां अति उत्तम ग्रन्थरत्नो प्रगट करनार श्रीमद् मुक्तिकमल जैन मोहनमालाना ५६ मा पुष्प तरीके शासनमान्य १००८ श्री जैनाचार्य श्रीमद् विजयमोहन सूरीश्वरजी महाराज श्री ना पट्टप्रभावक प्रसिद्ध वक्ता आचार्य श्रीमद् विजयप्रताप सूरिजी महाराजना विद्वान् शिष्यरत्न पन्यासजी श्री माणेक विजयजी महाराज रचित श्री तीर्थंगु माणेकमाला पांचमी आवृत्ति मां प्रगट थाय छे। तीर्थंकर प्रभुओ ना कारण मां उत्तम उपयोगी पुस्तक छे। सदर पुस्तकना संयोजक पन्यास श्री नो गायकवाड राज्य मां वीसनगर पासे आवेल मालक नाम ना गाम मां धर्मप्रेमी शेठ देवचन्द शाकर-चन्द नी धर्मपत्नी समरत (समु) बाइये जन्म आप्यो जे नाम मगनदास स्थाप्युं वृद्धि पामता अभ्यास शरू थयो। माता पिता ना उत्तम संस्कारो थी मन मुंबई नी अंदर पूज्य गुरुदेव श्री विजयमोहन सूरीश्वरजी महाराज नी हृदय भेदक अपूर्व देशना थी वैराग्य पामी सं० १९७९ ना फागुण वदी ५ ना बडोदरा मां सत्तर वर्ष नी वयमां चारित्र अङ्गीकार करी गुरु सेवा न संयम नी आराधना करता प्रकरण कर्मग्रन्थ व्याकरण काव्य आदि ना अभ्यास करी श्री केसरियाजी आजी कुमारियाजी मारवाड नी नानी मोटी पंच तीर्थो तथा

जेसलमेर समेतशिखरजी, चम्पापुरी, राजगृही पावापुरी बिहार शरीफ, आदि पवित्र तीर्थो नी यात्राओ करता, सिरोही, पाली जोधपुरफलोधी, अजमेर, जयपुर, आग्रा बनारस (काशी जावाल मेवाड मां डुगरपुर, आसपुर, बनकोडा उदयपुर आदि गामो मा विचरण करि भव्य जीवों ने प्रतिबोधि उपधान तप आदि तपस्याओ तथा उद्यापन प्रतिष्ठा ओच्छवो करावता अमारा ग्रामने पण लाभ सारो आपेल छे आपना चारित्रना गुणे आर्कषाई जनता आगल आ तीर्थगुण माणेकमाला मुकीएछिए तेनो लाभ जैन जनता मेलवी प्रभु भक्ति मा आगल वधी आत्मकल्याण ने साधो, आप श्री पण निर्मल चारित्र पाली जैन शासन ने दीपाओ एज अभ्यर्थना।

आ तीर्थगुण माणेकमालानी चार आवृत्तिओ गुजराती तथा शास्त्री थई ४००० बुकोनो चार वर्प मा जनताए लाभ लीधो अधिक मागणी थतां आ पांचमी आवृत्ति शास्त्री नकल २००० नीकाली छी आ बुकोनो गुजराती मा थी शास्त्रीमां करनार महाशयोनो तथा आर्थिक सहायकोनो आभार मानीए छिए प्रेस दोष या दृष्टि दोष थी जे भूल रहेवा पामी होय तेने सुधारी वांचवा भलामण छे चार वर्ष मा पांचमी आवृत्ति एज आ बुकनी उपयोगिता जाहेर करे छे।

निवेदक —

वोरा० बाबुलाल विट्ठलदास

खेरालु (गुजरात, वाया मेहसाणा)

सहायता

१ धर्मप्रिय रायबहादुर सुखराज रायजी, भागलपुर
२ धर्मप्रिय बाबू दीपचन्दजी सेठीया, बीकानेर
३ धर्मप्रिय स्वर्गीया चम्पककुमारी भीमाल हस्ते लक्ष्मीकुमारी भीमाल, कलकत्ता
४ धर्मप्रिय बाबू निहालचन्दजी ओसतवाल की धर्म-पत्नी गुलाबकुमारी मु० बिहार
५ धर्मप्रिय राय साहेब लक्ष्मीचन्दजी सुचंती की धर्म पत्नी ताराकुमारी मु० बिहार
६ धर्मप्रिय बाबू केशरीचन्दजी सुचती की धर्मपत्नी नवल कुमारी मु० बिहार
७ माठीया हकमीचद धारसीकी धर्मपत्नी, अ०, सौ० जड़ावबेन मु० राजकोट

उपर्युक्त प्रत्येक सज्जनों तथा सन्नारियों ने इस 'दीपगुण भावकमाला' की १२५ प्रतियाँ भेंट स्वरूप वितरण करने के लिये आर्थिक सहायता दी है। मैं हृदय से उनका आभारी हूँ।

आश्विन सु पूर्णिमा १९९७ } केशरीचन्द सुचन्ती

तीर्थगुण माणेकमाला

जैनाचार्य श्रीमद् विजयमोहन सूरीश्वरजी महाराज ना पट्टालंकार आचार्य श्रीमद् विजयप्रताप सूरिजी महाराज ना विद्वान शिष्य

अनुयोगाचार्य

प्रवर्तक पद सं० १९९३ घोघा

पन्यास जी महाराज श्री **माणेकविजय जी** गणि

जन्म स्थान भालक (गुजरात) दीक्षा स्थान वडोदर

आर्हत धर्म्म प्रतापान्वित आराध्यचरण १००८ आचार्य्य श्रीमद् विजयमोहन सूरीश्वर सद्गुरोभ्यो नम ।

तीर्थगुण माणेकमाला

प्रभु पासे बोलवाना श्लोको

प्रभुना देरासर मां प्रवेश करतां पहेला त्रणवार निस्सीही करवी पछी प्रभु पासे नीचेना स्तुतिना श्लोको बोलवा ·

पूर्णानन्दमयं महोदयमयं कैवल्य चिद्दङ्मयं,
रूपातीतमयं स्वरूप रमणं स्वाभाविकी श्रीमयम् ।
ज्ञानोद्योतमयं कृपारसमयं स्याद्वाद विद्यालयं,
श्री सिद्धाचल तीर्थराज मनिशं वंदेऽहमादीश्वरम् ॥

* * * *

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ ।
तुभ्यं नमः क्षितितलामल भूपणाय;

तुभ्य नमस्त्रिजगत्त परमेश्वराय
तुभ्य नमो जिन भवोदधिशोषणाय ॥

*   *   *   *

अद्य मे सफल जन्म अद्यमे सफला क्रिया ।
शुभोदिनोदयोऽस्माकं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥

पछी साथियो करी प्रणयाण खमासणा देई चैत्यवंदन कर वुं

सकल कुशल वल्ली पुष्करावर्त मेघो
दुरित तिमिर भानु कल्पवृक्षोपमानः ।
भव जल निधिपोत सर्व सम्पत्ति हेतु
स भवतु सतत व श्रेयसे शान्तिनाथ ॥

आदि देव अलवेसरु, विनीतानो राय ।
नाभिराय कुलमंडनो, मरुदेवा माय ॥
पांचसो धनुषनी देहडी, प्रभुजी परम दयाल ।
चौरासी लाख पूर्वनु, जस आयु विशाल ॥
वृषभ लञ्छन जिनवर धरु ए, उत्तम गुणमणि खान ।
तस पद पद्म सेवन थकी, लहिये अविचल ठाम ॥

जं किंचि नाम तित्थं सग्गे पायालि माणुसे लोये ।
जाइं जिणविम्बाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सिहाणं पुरिस-वर-पुण्डरियाणं पुरिसवर गंध हत्थीणं, लोगुत्तमाणं लोग-नाहाणं लोगहियाणं, लोगपइवाणं लोगपज्जो अ गराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं वोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं अप्पड़िहयवर-नाण दंसणधराणं वियट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, वुद्धाणं वोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वनूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंत मक्खय मव्वा-वाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिय भयाणं जे अ अइया सिद्धा जे अ भविस्संति णागये काले संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ।

॥ अथ जावंति ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरि अ लोये अ ।
सव्वाई ताइं वन्दे, इह सन्तो तत्थ सन्ताइं ॥

पछी खमासमण देवुं

॥ अथ जावंत ॥

जावंत केवि साहु, भरहेरवय महा विदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदण्ड विरयाण ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्य्योपाध्यायसर्व साधुभ्य

पछी स्तवन कहवुं

सिद्धगिरिनु स्तवन

(राग—आशिक सरकार के पाले पड़े हैं)

सिद्ध गिरि मंडन आदि जिनंद हैं
आदि जिनंद है नाभि नन्दन हैं । सि०
सर्वार्थसिद्धथी चवी, विनीता नगरी आविया ।
माता मरुदेवी हर्ष अपार है सि० १
युगला धर्म निवारिया, प्रथम नरेश्वर थई
युगल का नपना सफल भई है । सि० २

आदि मुनिवर थई, घाति करम दुरे करी

केवली जिनवर आदि हुये है सि० ३

केवल आप्युं मायनें, मोकली शिवपुर मां

माता शिव वहु जोवा चले है। सि० ४

मोहन मूरत आपनी, प्रतापीये जगमां खरी

माणेक नें प्रभु तारो आधार है। सि० ५

जय वीयराय

जय वीयराय जगगुरु होऊ ममं तुह पभावंओ भयवं; भव निव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धि ॥ १ ॥ लोग विरुद्धच्चाओ, गुरुजण पूआ परत्थकरणं च, सुहगुरु जोगो, तव्वयण सेवणा आभव मखंडा ॥ २ ॥ (*हाथ जरा नीचे करवा*) वारिज्जई जईवि नियाणबंधणं, वीयराय ! तुह समये, तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे २ तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहि मरणं च बोहि-लाभोअ; संपज्जऊ महाएअं, तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥

सर्व मंगल माङ्गल्यं, सर्व कल्याण कारणम् ।
प्रधानं सर्व धर्म्माणां जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

(पछी खमासमण दई ने

अरिहंत चेइयाणं

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए बोहिलाभ वत्तिआए, निरुवसग्ग वत्तिआए, सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं—खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

पछी एक नवकार नो काउस्सग्ग करी —

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व साधुभ्य

कही थोय कहेवी ।

थोय

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया, ।
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया ॥
जगस्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया ।
केवल सिरिराया, मोक्ष नगरे सिधाव्या ॥

पछी यथाशक्ति पच्चक्खाण करवु,
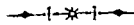
सिद्धगिरि नुं स्तवन

(राग-काली कमली वाले तुमको लाखों प्रणाम)

सिद्धाचल सणगार, आदि जिनने प्रणाम
नरक निगोदे मोहे भमियो, काल अनंते दुःखे गमियों
कहेता नावे पार । आदि० ॥ १ ॥
पशु पणुछे अति दुःखदायी, धर्म्म तणी गई वात भुलाई,
हवे शरणागत तार । आदि० ॥ २ ॥
देव गतिमां अति दु ख पायो, इन्द्रियना सुख काज धायो,
दुर्गति ना दातार आदि० ॥ ३ ॥

नर भव रुडा पुण्ये पाया, प्रभु दर्शन थी हरखायो
उतरशुं भवपार आदि० ॥ ४ ॥

कर्म्म महु जीवोनें दुःख आपे, धर्म्म भविनां दुःखा कापे
कर्म्म रहित करनार आदि० ॥ ५ ॥

जीव अनंता इण गिरि आवी शिव सुख पाम्या कर्म्म हटावी
कर्म्म सवि मुझ टाल आदि० ॥ ६ ॥

मुक्ति कमल छे मोहन गारु, भवि जीवों ने लागे प्यारु
"माणक" प्रभु आधार ॥ ७ ॥

गिरिनार भवन नेमनाथ प्रभुनु स्तवन

(राग-काली कमली वाले तुमको लाखों प्रणाम)

रैवतगिरिना वामी, नमि जिननें प्रणाम ।

शरण प्रभुजा आपनुं प्यारु, दुर्गति नें छे हरनारु
आपा शरणु आम नेमि० ॥ १ ॥

दिल धरि दया प्रभु सारि, पशुओं नें लीधां उगारी
दीधां अभय दान नेमि० ॥ २ ॥

मोह माया नें दूर हटावी, मुक्ति वधुनें मनमां लावी,
त्यागी राजुल नार नेमि० ॥ ३ ॥

नव भव केरी प्रीतिनें तोड़ी, मात पितादि राज्यनें छोड़ी
लीधू संजम धार नेमि० ॥ ४ ॥

कर्म्म खपावी केवल पाया, भवि जीवोंनें धर्म बताया,
सुरनर करतां सेव नेमि० ॥ ५ ॥

देशना देई राजुल नें तारी, पाम्या प्रभुजी भवजल पारी,
नेमीश्वर गिरनार नेमि० ॥ ६ ॥

मुक्ति मंदिर मां आप बिराजे, सूरि प्रताप थी सीजे काजे
करो माणेक सुखकार नेमि० ॥ ७ ॥
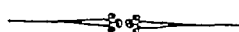
तारंगाजी तीर्थनुं स्तवन

(राग-खूने जिगर की पीती हु बस गममे तेरे यार)

तारंगा तीरथ स्वामी रे, उतारो भवपार
मैं अर्ज करूं शिरनामीरे, उतारो भवपार । १ ।

प्रभु क्रोध मानना त्यागी, माया लोभ गया भागी,
संसार ना नही रागी रे उतारो० । २ ।

प्रभु मुक्ति पुरी मां राजे, प्रभु पूजे मुक्ति काजे,
कुमति पूजवा लाजे रे   उतारो० । ३ ।

संसार सागर छे खारो, मुझ आसरो एक तुम्हारो,
भवसागर पार उतारो रे   उतारो० । ४ ।

ज्यां कोटी धील होवे, भवि सिद्ध शिलाने जोवे,
मुक्ति धारिये मन मोहे रे   उतारो० । ५ ।

में तारंगा तीरथे आव्या, अजितनाथ दर्शन पाया,
हरषे प्रभु गुण गाया रे   उतारो० । ६ ।

नन्दीश्वर द्वीपनी होवे, रचना त्यां सुन्दर जोवे
भयो भव नां पातिक खोवे रे   उतारो० । ७ ।

सूरि मोहन गुरु सारा, प्रताप सूरि पद धारा,
माणेक करो भव पारा रे   उतारो० । ८ ।

भरूच मंडन मुनिसुव्रत प्रभुनु स्तवन
(राग-श्री आदि जिनंदा)

मुनिसुव्रत स्वामी, कम्म नें वामी, शिव सुख पामी,
तुमे थया जिनराज ।

मुझ समकित आपो, दुःखड़ा कापो, दूर जाये पापो,
पामु सुख अपार । १ ।

घोर भवोदधि मांहे रुलियो, सह्यां दुःख अपार ।
ते दुःख प्रभुजी कह्यां न जाये, क्यां करु जई पोकार रे
। मुनि० २ ।

नरक निगोदे माहें भमियों, थयो विकल अज्ञान ।
पुण्य उदय थी नर भव पामी, कर्युं देशनामृतनुं
पान रे । मुनि० ३ ।

शरणे आव्यो प्रभुजी तमारा, भवजल तरवा काज ।
साचुं शरण प्रभु आपो मुझनें, पामु अविचल राज रे
। मुनि० ४ ।

दर्शन पूजन थी केइ जीवो, पाम्यां भवनो पार
कुमतिओ जे दूर रह्याते, भमिया घोर संसार रे
। मुनि० ५ ।

भरुच नगरे आप विराजो, तरण तारण जिनराज ।
सूरि प्रताप ना माणेक नें प्रभु, आपो अविचल राज रे
। मुनि० ६ ।

श्री स्थमन पार्श्व जिन स्तवन

(राग-मथुरा मां खेल खेली आया हो श्याम)

स्थमनपुर ना वासी हो देव, पास जिन प्यारा।
सूक्ष्म निगोद मां फरी आव्या हुं, जहां छे दुःख अपारा
हो देव पास० ॥ १ ॥

सूक्ष्म बादर मां भव घणेरा, कर्या अति दुःख दाया
हो देव पास० ॥ २ ॥

पृथ्वी अप तेऊ वायु काये, वनस्पति मां ज्यारा
हो देव पास० ॥ ३ ॥

विकल पणु पाम्यो पछीर, नर भव पायो सारा
हो देव पास० ॥ ४ ॥

अश्वसेन कुल मध आव्या, वामा मात मलारा
हो देव पास० ॥ ५ ॥

कष्ट सही कमठ नें वार्या, दिल धरी दया भारा
हो देव पास० ॥ ६ ॥

स्थमन पार्श्व जिन नाम तुमारु, भवा भव भीति मिटाया
हो देव पास० ॥ ७ ॥

दर्शन करी हुं अरज करूं छुं, हरो जन्म मरण ना वारा
हो देव पास० ॥ ८ ॥

सूरि मोहन गुरू राय प्रतापे, करो माणेक भव पारा
हो देव पास० ॥ ९ ॥

सिद्धगिरी जी नुं स्तवन

राग-सासरीये जईनें केजो एटलड्डु केजो एडलड्डु प्रीतमजी तेडा मोकले)

सिद्धगिरि ऊपर आदि जिनन्द जी, आदि जिनन्द जी
चालो विमल गिरि भेंटवा।

आदि जिनेश्वर जग परमेश्वर २
जग गुरु जग हितकारी भविका, कारी भविका चालो० १
पूरव नवाणु वार आदि जिन आव्या २
गिरिवर फरसन काज भविका, काज भविका चालो० २
रायण तरुतले देशना दीधी २
तारिया जीवो अनेक भविका, अनेक भविका चालो० ३
कारतकी पूनमें शीव पद पाम्या २
द्रावीड़ नें वारिखील्ल भविका, खील्ल भविका चालो० ४

पांच कोटि सह पुण्डरीक स्वामी २
चैत्री पूनमे शिव वास भविका, वास भविका चालो० ५
इण गिरि आवी जीवो अनता २
वरीया शिव पद सार भविका, सार भविका चालो० ६
मोहन गिरिना ध्यान प्रतापे २
वरशे माणेक शिव राज भविका, राज भविका चालो० ७

गिरनार मण्डन नेमनाथ प्रभुनु स्तवन
(राग-तीरथ नी आशातना नवि करिये)

गीरनारे नेमि जिनेश्वर वन्दो,
हरि ऐतो परम सुख ना कन्दो
हरि एतो टाले भवना फन्दो
हरि प्रभु तारण हार गिर० ॥ १ ॥

नार गतिना दु खनें दूर करवा,
हरि वन्द्या शूर वीर कर्म हरवा
हरि लीधू संयम भव जल तरवा,
हरि पाम्या चौथु रे ज्ञान गिर० ॥ २ ॥

घाती करम नी फौज नें हटावी,
हांरे श्रेणि क्षपक मनमां लावी
हांरे शुक्ल ध्यान नी श्रेणि चलावी,
हांरे लीधूं केवल ज्ञान गिर० ॥ ३ ॥
देई उपदेश नें तारी राजुल नारी
हांरे नव भवनी वात विचारी,
हांरे आप्युं संयम शिव सुखकारी,
हांरे लीधूं मुक्ति नुं राज गिर० ॥ ४ ॥
कर्म्म खपावी शिव सुख वरिया,
हांरे संसार समुद्र थी तरिया
हांरे मुक्ति मोहन दिल मां धरिया,
हांरे माणेक भव पार गिर० ॥ ५ ॥
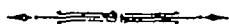
पुण्डरीक स्वामी नुं स्तवन

(राग-थई प्रेम वश पातालिया)

पुण्डरीक गिर पर जावुं, पुण्डरीक प्रभु ध्यान सोहावुं ।
नमि वंदने पावन थावुं जेथी अजर अमर पद पावुं रे ।
॥ पु० १ ॥

ए तीरथ छे सुख दाया, गिरिवर नी शीतल छाया।
श्रेयांस जिनवर तिहां आया, जेना सुर नर सेवे पाया रे।

॥ पु० २ ॥

ए तारक तीर्थ कहावे, इण गिरि जे हरखे आवे।
भवो भवना पाप गमावे, अविचल सुखड़ां पावेरे।

॥ पु० ३ ॥

पांच कोड़ी मुनि परिवरिया, पुण्डरीक शिव गुण भरीया।
कंचन गिरि ध्याने तरिया, चैत्री पूनमे केवल वरियारे।

॥ पु० ४ ॥

शिव पाम्या पुण्डरीक स्वामी, तेणे पुण्डरीक नाम गुणधामी
प्रसिद्ध थयु अभिरामी सयो अक्षय सुखना कामी रे।

॥ पु० ५ ॥

बार पर्षदा मांहि प्रभु भाखे, गुण सोहम थयु जग आखे।
शत्रुंजय महात्म्य साखे, सेवे ते शिव सुख चाखेर।

॥ पु० ६ ॥

मुक्ति कमल मोहन गारु, हरि भवापे लागे प्यारु।
भाविक नें ए आपो सारु, ए तीर्थ भवो भव तारु रे॥

॥ पु० ७ ॥

पुण्डरीक स्वामी नुं स्तवन

(राग—शोभा सोरठ देशनी शीरे कहुं)

पुण्डरीक गिरिवर सेविये, जेना नामे नव निधि थाय।
जाऊं वारीरे पुण्डरीक प्रभु नमो नेहशुं ॥
प्रभु आदि जिनंदना गणधरुं,
पुण्डरीक नामे विख्यात। जाऊं० ॥ १ ॥
प्रभु रायण तरु-तल उपदेशे,
गिरि महिमा अपरंपार। जाऊं० ॥ २ ॥
गिरि ध्याने केई शिव सुख वर्या
दूर करि भव संताप। जाऊं० ॥ ३ ॥
गिरि नामे गुण आवे घणा,
जेना नामे मंगल माल। जाऊं० ॥ ४ ॥
इम प्रभु मुखे महिमा सांभली,
पांच कोटि मुनि संगाथ। जाऊं० ॥ ५ ॥
इहां अनसन करी एक मासनुं,
घाति करम कर्य्या दूर। जाऊं० ॥ ६ ॥
केवल लही शिवपुर मां,
कीधों चैत्री पूनमें वास। जाऊं० ॥ ७ ॥

एम पुन्डरीक आगे प्रसु कहे,
इहां पामसोपद निर्वाण । जात्रु० ॥ ८ ॥
जेथी पुण्डरीक गिरि प्रसिद्ध हुओ,
जेना नामे भव भय जाय । यात्रु० ॥ ९ ॥
गिरि मोहन प्रतापे कीजिये,
माणेक नो शिवपुर वास । जात्रु० ॥ १० ॥

पुण्डरीक स्वामी नु स्तवन
(राग—अहा केवु भाग्य जाग्यू—)

धन्य दिवस आज नो भी,
पुडरीक प्रसु मल्या,
नयने अमीरस निरख्या,
पातिक सवि दूरे टल्या । धन्य ॥ १ ॥
आदि जिनवर आविया,
गिरि गुण हैड धारिया ।
समय शरणे दई देशना,
भवी जीव धणा तारिया । धन्य० ॥ २ ॥
गिरिराज ना ध्याने करी,
पाप करम दूरे हरी ।

पाम्या अने वली पामशे,
शिव सुखने केई भवतरी । धन्य० ॥ ३ ॥
पुण्डरीक गणधर आविया,
पंच कोटि मुनिवर लाविया ॥
चैत्री पूनमे कर्म वामी,
शिवपुर सिधाविया । धन्य० ॥ ४ ॥
पुण्डरीक नाम प्रसिद्ध पाम्युं,
जगति तल उपरे ।
मोहन प्रतापि गिरि पामी,
माणेक मुक्ति वधु वरे । धन्य० ॥ ५ ॥

तलाजा तीर्थ ना सांचा देव

श्री सुमति नाथ प्रभु नुं स्तवन

(राग—झट जावो चंदन हार लावो)

तुमे तालध्वज गिरि आवो, भवजल तरवानें,
ए तीरथ जगमां सार, पार उतरवा ने ।

शैर

सोरठ देशमां शोभतो, तालध्वज गिरिराय,
उत्तम ये गिरि पामी नें, करो सेवा सदा सुखदाय । भ० १ ।

शेर

देवो नें पण दोहिलो, मानव नो अवतार,

पामी धर्म नें आदरो, ये उतार भवपार । भव० ॥ २ ॥

शेर

साचा देव जगमां खरा, सुमतिनाथ महाराज,

आशा फले भवि जीवनी ये तारण तीरथ जहाज । भव० ३ ।

शेर

दुष्ट करम दूरे करो, हरो कुमति दूर,

सुमति आपो मुझने, प्रभु नित्य रहूं हजूर । भव० ॥ ४ ॥

शेर

मोहन मुक्ति मंदिरे, जावा मन ललचाय ।

तीर्थ प्रताप थे मल्ये, त्यारे माणेक सुखियो थाय ॥ भव० ५

सिद्ध क्षेत्र श्री गौड़ी पार्श्वनाथनु स्तवन

(राग-भवि भावे देरासर आवे—)

तुमे भजो गौड़ी जी पास, शिवपद वरवानें

प्रभु मेटे भव दुःख जाप शिव० ॥

शेर

माहे काशी देश मां, नगरी वणारसी सार ।

अश्वसेन कुल मण्डना, साहे पासकुमार मनोहार । शिव० १ ।

दिलवशी दया खरी, बलतो उतार्यो नाग ।
महामंत्र देई प्रभु, कर्यो सुखियो तेने अथाग । शिव० २ ।
सही परीसहो प्रेमथी, कमठादिकना जेह ।
केवल लही शिवसुखने, वर्या पार्श्व प्रभु गुण गेह । शिव० ३ ।
प्रकट प्रभावी भेटिया, गौड़ी जी प्रभु पास ।
वंदो पूजो प्रेम थी, जेथी थाये मुक्ति मां वास । शिव० ४ ।
सूरि मोहन पद सेवतां, नित्य प्रताप सुरीश ।
तस शिष्य माणेक चाहतो, प्रभु प्रतापे गुण जगीश । शिव० ५ ।

शंखेश्वर तीर्थनुं स्तवन

(राग-मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे—)

पास संखेश्वर स्वामी सार करो
मारा कर्म दलो सवि दूर करो ।
त्रण ज्ञाने प्रभु आविया, जननी उदर जिनराज ।
पोष वदि दशमी दिने, भवि जीवों नें काज ॥
प्रभु जन्म थी दुःख दोहग हरो० ॥ पास० ॥१॥
जन्म महोत्सव जेहनो, सुरपति सघला करे ।
पार्श्व प्रभु सेवा थकी, भव भय दूरे हरे ॥
भव भय थी मुज उद्धार करो० पास० ॥२॥

कष्टो सही कमठ तणा, कर्यो अति उपगार ।
फणीधरनें नवकार थी, आप्यु सुख अपार ॥
आपो सुख अक्षय हुं मांगु खरो ॥ पास० ॥३॥
सयमी नें केवली थई, अनेक जीवों तारिया ।
रागादि दुष्ट चोरटा, आपे दुर हटाविया ॥
रागादि हटावी मोहे पार्श्व करो ॥ पास० ॥४॥
मुक्ति कमल सोहामणु, थाई प्रभु दिलमांय ।
मोहन प्रतापी आप छो, प्रताप बीजे न कहाय ॥
प्रतापे माणेक भव पार करो ॥ पास० ॥५॥

शखेश्वर पार्श्वनाथनु स्तवन

(भार बढ़ाने हूं वो नाजुक नार)

पास शंखेश्वर साहिबारे लाल
भवि जीवों ना तारण हाररे, मन मदिर प्रभु आवजोरे लाल ।
चिन्ता मणि सम आपछोरे लाल,
भवो भवना दारिद्र हरो दूर रे । मन० ॥१॥
अखूट खजाना मां आपना रे लाल,
गुण रत्नो ना नहि पार रे । मन० ॥२॥
कर्म कटक जीति करी, जीति रागने रीस,

.ास्या दिक दूरे करी, आप थया जगदीश ।
तारो सेवक नें गही हाथ रे । मन० ॥ ३ ॥

.कट प्रभावी पास जी, बलतो उगार्यो नाग,
नवकार मंत्र सुनावी नें, कर्यो सुखियो तेने अथाग ।
तेम आपो अक्षय सुख सार रे ॥ मन० ॥४॥

देव विमाने पूजता, सुरेन्द्रादिक देव ।
पातालेन्द्रे पण करी, पास जिनेश्वर सेव ॥
कोटि देव करे तुम सेवरे ॥ मन० ॥५॥

वढ़ियार मां बिराजता, शंखेश्वर प्रभु पास ।
यादव नी जरा हरी, पूरी वांछित आस ॥
आश धरी मुक्तिनी तुम पास रे ॥ मन० ॥६॥

महिमा सुणी आपनो, देश देश ना लोक ।
भक्ति भेटणुं लावता, नर नारि ना थोक ॥
प्रभु गुण गावे श्रीकार रे ॥ मन० ॥७॥

मुक्ति मन्दिरे वसो, शिव रमणी संगाथ ।
अविचल पदवी आपीनें, दास दरो सनाथ ॥
गणी माणेक विजय कहे एहरे ॥ मन० ॥८॥

पानसर तीर्थपति महावीर प्रभु स्तवन

(राग-शी गति थासे हमारी—)

शी गति थासे हमारी, वीर शी गति थासे हमारी
पानसर तीरथे वीर जिनेश्वर, तुमे जगत उपगारा,
क्षत्रिय कुले लेई अवतारा, वर्तायो जयकारा। वीर० १।
चैत्र सुदि तेरस जयकारी, लागे अति मनोहारी।
ते दिन जन्म लियो गुणधारी, भविजन नें हितकारी। वीर० २।
छपन दिशि कुमरी मलि आवे, गुण प्रभुजीना गावे।
सुरपति आवी हरखे वधावी मेरुगिरिए लई जावे। वीर० ३।
बालपणो प्रभु क्रीडा करतां देव विहां एक दखे
फणीधर रूपे प्रभु ने चलावे, फर करी दुर नाखे। वीर० ४।
राय सिद्धारथ नंदन वीरजी, त्रिशला देवी जाया।
महादानी तुमें बिरुद धराया, तुमि सेवक में आया। वीर० ५।
चार गति दुःख वमन तुमे, छेदी थया निरागी।
ते गति ना सुख चमन कापो, ते लगनी मुझ लागी। वीर० ६।
गणी मुक्ति विजय गणधारी, कमलसूरी हितकारी।
मोहन प्रतापे प्रभु गुण गावे, मार्योक करो भव पारी। वीर०७।

केशरिया जो तीर्थनुं स्तवन

(राग - शी गति थासे हमारी)

तीर्थ केशरिया भारी देव, तीर्थ केशरिया भारी,
धुलेवा नगर ना स्वामी तुमे, श्री आदि जिन राया;
नाभिराय कुल मण्डन तुमे, विनीता नगरीना राया ।
देव भव जल पार उतारो ॥ १ ॥
युगला धर्म आपे निवार्यो, थई प्रथम नर राया
आदि मुनिवर थया प्रभुजी, आदि जिनवर कहाया दे०॥२॥
एक हजार वर्ष लगे विचरी, कर्म कठिन दूर कीधा
केवल पामी मायनें दीधूं, प्रेम प्रकट तिहां कीधा दे०॥३॥
काला बावा केशरियाजी, आदिश्वर वलीबोले,
हरिहर ब्रह्म पुरन्दर देख्या, नावे कोई तुम तोले ॥४॥
मुक्ती कमल नें लेवा काजे, ध्यान मोहन तुमारुं
सूरि प्रताप माणेक धरतो, अविचल पदले सारुं दे० ॥५॥

केशरिया जी तीर्थ नुं स्तवन

(राग तोरण वंधावो भविया प्रभुघर आयारे)

धुलेवा नगर के स्वामी, आदि जिन राया रे ।
आदि जिनरायारे, मरूदेवी जायारे
नाभि राय कुल आया ॥१॥

केइ नेसधारा केइ पास नारी माला
ऐसे कृपण के वारा ॥ आदि० ॥२॥
जिनवर देव ध्यावो, देमन मिले आवो
जन्म जन्म सुख पावो ॥ आदि० ॥३॥
तीर्थ श्वेताम्बर भारी, मूरति मोहन गारी,
नयना ने लागे प्यारी ॥ आदि० ॥४॥
अजब ज्योति भारी, आलम सेवे सारी,
केशर चढ़ावे भारी ॥ आदि० ॥५॥
पाड़ी जाड़ी का घेरा, बीचमें किया है डेरा
टालो जन्म के फेरा ॥ आदि० ॥६॥
मुक्ति का राज लेवा, आयो केशरिया देवा,
माणेक विजय की सेवा ॥ आदि० ॥७॥

आबुजी तीर्थनु स्तवन

(राग-आई बसन्त बहाररे प्रभु बैठे—)

अर्बुद गिरि सुखकार रे, ऐ तीरथ सेवो,
तीरथ सेवो नहीं जग ऐवो,
भवि जनने हितदाय रे ऐ० ॥१॥

मूल नायक आदि जिन पूजो,
चौमुखे पास जिनराय रे ऐ० ॥२॥
जिनवर उत्तम होवे,
शिव सुन्दरी भरतार रे ऐ० ॥३॥
द्रौपदी ए जिन प्रतिमा पूजी,
छट्ठे अंगे देखो रे ऐ० ॥४॥
सूरिआभ सूरे प्रतिमा पूजी,
रायपसेणी माहें रे ऐ० ॥५॥
अंग उपाशके भगवति मांहे,
महानिशीथे देखो रे ऐ० ॥६॥
जाण्या छतां तुजनें अवगणे,
होवे बहुल संसार रे ऐ० ॥७॥
वांदे पूजे ध्यावे जे प्राणी,
सुख अनंतु पावे रे ऐ० ॥८॥
सूरि प्रताप नो माणेक सेवी,
वरशे शिववधु नार रे ऐ० ॥९॥

तीर्थ पावापुरीनुं स्तवन

(राग मथुरामा खेल खेली आया हो—)

पावापुरी नगरी ना स्वामी, हो देव वीर जिनराया

वीर जिनराया प्रभु शिव सुखदाया

जन्म मरण हटाया हो देव० ॥१॥

गौतमादिक ना संशय फेटी,

मारग शुद्ध बताया हो देव० ॥२॥

चंडकौशिकनें अर्जुन माली,

तार्या तम मुझ तारो हो देव० ॥३॥

सोल पहोर प्रभु देशना देई,

शिवपुर मांहि सीधाया हो देव० ॥४॥

कार्त्तिक अमावस्या नी रयणीये,

अजर अमर पद पाया हो देव० ॥५॥

पावापुरी जल मन्दिरे बिराजो,

भवि मन तारण हारा हो देव० ॥६॥

हरि प्रताप ना माणेक नें प्रभु,

उतारो भव पारा हो देव० ॥७॥

पावापुरी तीर्थनु स्तवन

महावीर जिनन्दा रे, प्रभुजी मोरे वारना

दोष अठारह दूर निवारा, घाति च्यार करम हटाया

पाया केवल ज्ञान प्रभु० ॥१॥

समव शरण मणि रयणे जड़ीयुं, पीठे भामण्डल जलकीयुं,
वृक्ष अशोक रसाल प्रभु० ॥२॥
तिहां वेसी प्रभु देशना देवे, निज निज वाणीये समजीलेवे,
सुरनर तिरि हितकार प्रभु० ॥३॥
वर्द्धमान वीर महावीर तुमारां, नाम प्रसिद्ध हुआं गुणवालां,
तूंहीज तारण हार प्रभु० ॥४॥
चंड कोशिकनें अर्जुन तार्या, घोर करम करताने उगार्या,
मुजमें क्यों करो वार प्रभु० ॥५॥
तीन लोक मां महिमा भारी, संघ सहुआवे पावापुरी धारी,
मानें सफल अवतार प्रभु० ॥६॥
जल मध्ये जल मंदिर सोहे, वीर प्रभु देखी मन मोहे,
वंदना वार हजार प्रभु० ॥७॥
मुक्ति पुरिये मारा वास करावो, माणेक विजयनां कर्म हरावो,
वीनति वारंवार प्रभु० ॥८॥

पावापुरी तीर्थनुं स्तवन

आवो आवो पावापुरी ध्यावो, भवियाँ
पावापुरी मण्डन सवी अघ खण्डन
वीर को तनमें वसावो, भवियां आवो० ॥१॥

अतुल बली पण क्षमा के धारी,
　　　　धरम शरण चित्त लावो भवियां आवो० ॥२॥
पूजन कर रत्नत्रयी को पावो,
　　　　वेगे शिव पद पावो भवियां आवो० ॥३॥
जन्म क्षत्री कुण्ड निवाण पुरीये,
　　　　भेंट के पाप गमावो भवियां आवो० ॥४॥
नर भव फेरा सार यही है,
　　　　किये करम को जलावो भवियां आवो० ॥५॥
तीरथ सेवा शिव सुख मेवा,
　　　　लेवा ने झटपट आवो भवियां आवो० ॥६॥
जल मंदिरमां वीर जिन पूजी,
　　　　आतम ज्योति जगावो भवियां आवो० ॥७॥
मोहन प्रतापे माणेक जंपे,
　　　　भवो भव ताप मिटावो भवियां आवो० ॥८॥

कदम्ब गिरि तीर्थनु स्तवन

(वीर् वेकी वैसाख नो भावको)

तुमे कदम्ब गिरि ने जुहारजोरे
　　　　वेला गिरवर भेंग्या नें आवजो

वीर प्रभुनुं देहरूं मनोहार छे, देशी बावन सोहे अपार छे,
जेनी शोभानो नहीं पारछे रे, तुमे-कदम्ब० ॥१॥
वीर प्रभुनी बल अतुल छे, जेनुं धैर्य जगमां मशहूर छे,
जेना गुणो अति भरपूर छे रे, तुमे-कदम्ब० ॥२॥
गिरि उपर नेमि जिनचंद छे, प्रभु समुद्र विजय कुलचंद छे,
ए शिवा देवी ना नंद छे रे, तुमे-कदम्ब० ॥३॥
कदम्ब गणधर नां पगलां विशाल छे, करि अणशण यथा भवपार छे,
साथे मुनिवर कोड़ी सार छे रे, तुमे-कदम्ब० ॥४॥
ध्यान गिरिनुं अति सुखकार छे, सुख मुक्तितणु दातार छे,
प्रतापे माणेकनें आधार छे रे, तुमे-कदंब० ॥५॥

सम्मेत शिखर तीर्थनुं स्तवन

(राग मारुं वतन या मारु वतन)

सम्मेत शिखर गिरि तारण-तरण-
तारण तरण भव दुःख हरण। स० ॥१॥
अजित संभव नें अभिनन्दन जी,
सुमति पद्म प्रभु ध्यान धरण। स० ॥२॥
सुपार्श्व देवनें चन्द्र प्रभुजी,
सुविधि शीतल श्रेयांस जिनन्द। स० ॥३॥

विमल अनन्त नें धर्म जिनेश्वर,

शांति कुन्थु अर मल्ली शरण । स० ॥४॥

मुनिसुव्रत नमि पार्श्व वी आदि,

पाम्या मुक्ति पद कर्म हरण । स० ॥५॥

ए गिरि सेवा मुक्ति ना मेवा,

लेवा प्रभुजी हरख धरण । स० ॥६॥

सूरि प्रताप गिरि गुण गावे,

माणक पावे सुख अनन्त । स० ॥७॥

सेरीसा तीर्थनु स्तवन

(राग-अरसा करीने अमे आविया जिनन्दजी)

सेरीसा पास जिन वंदिये, जिनदजी, पाप पटल जाय दूर रे,

आव्यो सरीसे भेटवा जिनन्दजी ॥१॥

शांत मुद्रा प्रभु पासनी जिनदजी निरखत तृप्ति न थायरे,

आव्यो० ॥२॥

दर्शन विन भूलो पड्यो, जी० भमियो घोर संसार रे,

आव्यो० ॥३॥

भीस्लादिक पण दर्शने, जी० उतर्या भव अन्त पार रे,

आव्यो० ॥४॥

दर्शने दर्शने नीपजे जी० मिथ्यात्व कीजे दूर रे,
आव्यो० ॥५॥

विषय कषाय नें जीतवा जी० हरवा भव जंजाल रे,
आव्यो० ॥६॥

मुक्ति मोहन पद आपजे जी० थाये माणेक सुखकार रे,
आव्यो० ॥७॥

पालीताणा आदीश्वर प्रभुनुं स्तवन

(राग-बोल बोल आदीश्वर वाला काई थारी मरजी रे)

श्री आदीश्वर प्रभुजी प्यारा

मांशु बोलो रे के कयु अबोला रे

विनीता नगरी छोड़ी चल्या, छोड़ी राज्य नी ऋद्धि रे।
वनवासी थईने तुमे बेठा, मारी सार न लीधी रे॥
के कयुं० ॥ १ ॥

ऋषभ ऋषभ हूं दिन भर केती, वाटूं जोवूं तुम्हारी रे।
चीठी न दीधी सुख शाता नी, पामू दुःख अपारी रे॥
के कयुं० ॥ २ ॥

आई वधाई भरत नी आगे, प्रभुजी आव्या केरी रे।
हस्ती स्कंधे मरुदेवी माता, बेठा हर्ष अपारी रे॥
के कयुं० ॥ ३ ॥

देव दुन्दुभी सुणि माता, वीतराग प्रभु भावे रे।
पडल नयन ना दूर पलाया, ज्ञान केवल त्यां पावे रे॥
के कपु० ॥ ४ ॥

कमल दई माय नें सारी, सुत-प्रभु जोवा सिधार्या रे।
मुक्ति मंदिर मांहि विराज्यां, पाम्यां सुख सवायां रे॥
के कपु० ॥ ५ ॥

पालीताणे मोटे देहरे, आदि जिन सुखकारी रे।
सुकिनां मोहन सुख लेवा, पामू भवजल पारी र॥
के कपु० ॥ ६ ॥

सूरि प्रताप प्रभु गुण गावो, पावो मंगल माल र।
माणेक विजय नें प्रभु आपो, अक्षय सुख रसाल रे॥
के कपु० ॥ ७ ॥

भोयणीजी तीर्थनु स्तवन

(राग-अजित जिनन्द शुं प्रीतडी)

मल्ली जिनेश्वर वीनवी
अवधारो हो मुझे एकज आज।
गुणमयी रयण भंडार छो
भवसायरे हो तरवाने जहाज के। मल्ली०१।

राग द्वेष नें प्रभु ते जित्या,

वली जीत्या हो तें क्रोध मान ।

जीती ममता तें वली,

जेथी यथा हो तुमें भगवान के । मल्ली० २ ।

क्रोध मान थी हूं घेरियो

लोभ अजगर हो मुझ डस्यो आज ।

राग द्वेष दोय आकरा

दूर कीजे हो गुण निधि महराज के । मल्ली० ३ ।

कुकवाय भोयणी मध्यमां

केवल पटेलना हो क्षेत्र मझार ।

प्रगट हुआ पुण्य उदये

तिहां वरत्यो हो घणो जयजय कार के । मल्ली० ४ ।

वगर बलद नां गाडा मांहीं,

विराज्या हो प्रभु मल्ली जिनन्द ।

गाड़ी चाल्युं अचरिज हुयो

जेने सेवे हो नर नारी नरिन्द के । मल्ली० ५ ।

प्रभु शरणे आव्यो रे आपना

सेवक नो हो करो ने उद्धार ।

देव दुन्दुभी सुणि माता, वीतराग पण भावे रे।
पडल नयन नां दूर पलायां, ज्ञान केवल त्यां पावे रे॥
के रूपु० ॥ ४ ॥

केवल देई माय नें तारी, सुत-वहु जोवा सिधायां रे।
मुक्ति मंदिर मांहि विराज्यां, पाम्यां सुख सवायां रे॥
के रूपु० ॥ ५ ॥

पालीताणे मोटे देहरे, आदि जिन जुहारी रे।
मुक्तिनां मोहन सुख लेवा, पामूं भवजल पारी रे॥
के रूपु० ॥ ६ ॥

सूरि प्रताप प्रभु गुण गावो, पावो मंगल माल रे।
माणेक विजय नें प्रभु आपो, अक्षय सुख रसाल रे॥
के रूपु० ॥ ७ ॥

भोयणीजी तीर्थनु स्तवन

(राग-अजित जिनन्द शुं प्रीतडी)

मल्ली जिनेश्वर वीनती
अवधारो हो प्रभु एकज आज।
गुणमणी रयण भंडार छो
भवसायरे हो तरवाने जहाज के। मल्ली०१।

मातर तीर्थ स्वामी तुम्हें, साचा देव गुण खान ।
प्रभाव तुम्हारे नजरे निरखी, माने सहु तुम आन ॥तुम०६॥
मुक्ति तणा दातार तुमे छो, कमल सुगंधी जेम ।
मोहन प्रतापे माणेक प्रभुजी, याचे मुक्ति तेम ॥ तुम० ७ ॥

खेराळू मण्डन आदीश्वर प्रभुनुं स्तवन

(राग-केशरिया थासुं प्रीत करी रे साचा भाव से)

आदीश्वर वाला विनती मुज स्वीकार शो ।
नरक निगोदे माहें रुलियो, सह्यां दुःख अनन्त ।
तो पण प्रभुजी पार न आव्यो, अरज करूं भगवन्त रे
॥ आ० १ ॥
सर्वारथथी आप चवीने, नयरी, अयोध्या माहीं ।
करुणा सायर आप पधार्या, नाभिराय कुल ज्यांहि रे
॥ आ० २ ॥
चैत्र वदि आठम नें दिवसे, जेम पूरव मां सूर ।
जाया मरुदेवी , दीपे तेज सनूर रे ॥ आ० ३ ॥
युगला धर्म आपे निवार्यो, थई प्रथम महराया ।
प्रथम भिक्षुक तुमे गणाया, केवल आदि पाया रे ॥आ०४॥
केवल देई माय नें तारी, मोकली शिवपुर मांहि ।
कन्या मुक्ति जोवा माता, गयां अति उत्साही रे ॥आ०५॥

प्रभु ज्ञान खजानो दीजिये

जथी पामूं हो प्रभु भवनो पार के। मल्ली०६।

सूरि मोहन ना प्रताप नों

गुण मांगे हो माणक उदार।

एकज गुण मुज आपवा

जेम थाऊ हो मुक्ति भरतार के। मल्ली०७।

मातर तीर्थनु स्तवन

(राग-तुमतो भले बिराजो जी)

तुमतो भले बिराजो जी, मातर तीरथ स्वामी सुमति भले०

त्रण ज्ञान सहित अवतरिया, गुणनिधि महाराज।

छप्पन दिग कुमरि मिल आवे, सूति करम नें काज ॥तुम०१॥

इन्द्र आवि प्रणाम करीनें जिन बिम्ब ग्रहे हाथ।

सुर गिरि ऊपर लई जेइनें, हरि सहु सगाथ॥ तुम० २॥

जन्मोत्सव करी अति रूडो, मुके माता नी पास।

ए जिनजीनी सेवा करसे, सफली फलसे आस ॥ तुम० ३॥

संयम समय पाम्या प्रभुजी, मनःपर्य्यव मनोहार।

कर्म खपावी केवल पाम्या, थया मुक्ति भरतार ॥तुम०४॥

सुमति नाथ प्रभु नाम तुमारु, सुणि आव्यो हजूर।

सुमति प्रभुजी मुजनें आपो करो कुमति दूर॥ तुम० ५॥

मातर तीर्थ स्वामी तुम्हें, साचा देव गुण खान ।
प्रभाव तुम्हारे नजरे निरखी, माने सहु तुम आन ॥तुम० ६॥
मुक्ति तणा दातार तुमे छो, कमल सुगंधी जेम ।
मोहन प्रतापे माणेक प्रभुजी, याचे मुक्ति तेम ॥ तुम० ७ ॥

खेराळू मण्डन आदीश्वर प्रभुनुं स्तवन

(राग-केशरिया थासुंप्रीत करी रे साचा भाव से)

आदीश्वर वाला विनती मुज स्वीकार शो ।
नरक निगोदे माहें रुलियो, सह्यां दुःख अनन्त ।
तो पण प्रभुजी पार न आव्यो, अरज करूं भगवन्त रे
॥ आ० १ ॥
सर्वारथथी आप चवीने, नयरी, अयोध्या माहीं ।
करुणा सायर आप पधार्या, नाभिराय कुल ज्यांहि रे
॥ आ० २ ॥
चैत्र वदि आठम नें दिवसे, जेम पूरव मां सूर ।
जाया मरुदेवी , दीपे तेज सनूर रे ॥ आ० ३ ॥
युगला धर्म आपे निवार्यो, थई प्रथम महराया ।
प्रथम भिक्षुक तुमे गणाया, केवल आदि पाया रे ॥आ०४॥
केवल देई माय नें तारी, मोकली शिवपुर मांहि ।
कन्या मुक्ति जोवा माता, गयां अति उत्साही रे ॥आ०५॥

शिवपुर मांहि आप बिराज, शिवपुर मुझनें आपो ।
सेवी मेहर करो नें स्वामी, पामू सुख अमापोरे ॥आ० ६॥
सूरि मोहन ना शिष्य प्रताप ना, कहे माणक करजोड़ ।
दु खो छेदी मारा प्रभुजी, शिव सुख धो मजाड़ रे
॥ आ० ७ ॥

बिहार शरीफ मण्डन आदि जिन स्तवन

प्रभु श्री आदि जिनराय, मुझे दर्शन दीजो रे ।
मुझे दर्शन दीजो रे, मुझ दर्शन दीजो रे ॥ प्रभु० १ ॥
अनुपम ज्ञान के सिन्धु, मैंने पाया जगत बंधु ।
चौरासी लाख भारनको, मुझे दर्शन दीजो रे ॥ प्र० २ ॥
अनादि काल के फेरे, शरण आयो शरण तेरे ।
कृपा सिंधु कृपा करके, मुझे दर्शन दीजो रे । प्र० ३ ।
सुरासुर नर नें देवा, चाहे तुम चरण नी सेवा ।
लेवामे मुक्तिना मेवा, मुझे दर्शन दीजो रे । प्र० ४ ।
प्रभु का नाम सुखकारा, प्रभु का ध्यान हितकारा ।
प्रभु का ज्ञान भव तारा, मुझे दर्शन दीजो रे । प्र० ५ ।
अनादि काल से संगे, रहा तुम साथ उमंग ।

मोहे अब दूर क्यूं कीजे, मुझे दर्शन दीजो रे। प्र० ६।
विहार शरीफ में आया, आदि जिनवर दिल ध्याया।
मानू परम सुख पाया, मुझे दर्शन दीजो रे। प्र० ७।
मुक्ति मां वास करावो, स्वामी सेवक नो दावो।
माणेक नां दिल में आवो, मुझे दर्शन दीजो रे। प्र० ८।

वीर प्रभु नुं स्तवन

(राग—मेरी अरजी ऊपर प्रभु ध्यान धरो)

वाला वीर जिनन्द जरी मेहर करो,
शरणे आया सेवकनी सार करो।
सूक्ष्म निगोद मां थी निकली, वादर निगोदे आवियो।
अकाम निर्जरा योग थी, एकेन्द्री पणु पामियो॥
पामी हारी गयो जैन धर्म खरो। वाला० १।
विकल पणु पम्यां पछी, पंचेन्द्री पणुं पामियो।
अज्ञान नें अविवेक थी, पशु मां घणु पस्ताईयो॥
विवेक जागे मार्ग शुद्ध पामे खरो। वाला० २।
देव गति मां देवता हूं, भोगमां राची रह्यो,
नारकी नार दुःख ने पण, पर वशे बैठी रह्यो।
बैठो जन्म मरण नी दूर करो। वाला० ३।

मनुष्य पणु पाम्यो छतां सुदव गुण निरख्या नहीं ।
रखली रह्यो तेथी प्रभुजी सांसू करुं मानो सही ॥
मानो नहीं आगम से दु खी गणो । वाला० ४ ।
आजू आणी नें प्रभु जी, आपना शरणे रह्यो ।
शरणू प्रभु जी मुझ नें, तारवो बाकी रह्यो ॥
तारो वीर प्रभु मोक्ष मार्ग खरो । वाला० ५ ।
ओगणी अठासी सालनी, श्रावण सुदि एकम दिने,
ममी शहर रही चौमासु निश दिने ध्याया तुने ।
ध्यावे पाव अचल पद तेह खरो । वाला० ६ ।
सुक्ति कमल में हु भरी मोहन सुगन्धि वासना ।
वाचक प्रताप प्रभ थी, करु वीर नें उपवासना ॥
वीर सेव मायक वीर होवे खरा ॥ वाला० ७ ॥

श्री चमत्कारी चन्द्रप्रभु नु स्तवन

(राग सूत्र फिरा जग सारा जग मारा सिद्ध गिरि-स्वामी ना मिला)

चन्द्र प्रभु सुखकारा सुखकारा सेवो भविका भाव धरी ।
प्रभु की मूर्ति मनोहर सोहे देखि भविजन ना मन मोहे ।
अगे गुण गण धारा, गण धारा । सेवो० १ ॥

निर्दूपण नें निर्विकारी, सेवता कर्म्मों खरे भारी ।
अन्तरमल दूर कारी दूर कारी । सेवो० २ ॥
निरंजन प्रभु पड़िमा निरखी, अवर कोई नावे तुम सरखी ।
देव घ्याया में परखी में परखी । सेवो० ३ ॥
देव देवी नित्य प्रभु गुण गावे, प्रभु भक्ति थी नरभव पावे
करे सफल अवतारा अवतारा । सेवो० ४ ॥
जिन सेवा थी आधी जावे, व्याधि उपाधि पासे नावे ।
अजर अमर पद पावे पद पावे । सेवो० ५ ॥
तीर्थ संखेश्वर पासे राजे, मोटी चंदुर नगरे विराजे ।
चन्द्रप्रभु हितकाजे हितकाजे । सेवो० ६ ॥
मुक्ति कमल मां मोहन सूरि, कर्मों नाशे प्रतापे भूरि ।
करो माणेक हजूरी हजूरी ॥ सेवो० ७ ॥

जावाल मण्डन श्री शांतिनाथ प्रभु नुं स्तवन

(राग—भेख रे उतारो राजा भरथरी)

पुरुषोत्तम परमेश्वरुं, श्री शान्ति जिनराज जी ।
शरणे आव्यो रे आपना, आपो शरणुं आज जी ॥ पु० १
देव नरक तिर्य्यञ्च मां, सह्या दुःख अपार जी ।
नहीं आराध्यो जैन धर्मनें, पामी मनुष्य अवतारजी ॥पु० २

जन्म तणा दु ख भोगव्यां, केता नावे पार जी।
ते दुःख नें दूर करवा, आव्यो आप दरबार जी ॥ पु० ३
कर नाव आपा मुक्तनें, उतरवा भवपार जी।
वार न करू सर्व पछनी, ते आपो निरधार जी ॥ पु० ४
मनुष्य भवनें पामी नें, पामी निर्मल दृष्टि जी।
आराधी शुद्ध धर्म्मनें, करशे कर्म्म ने छेद जी ॥ पु० ५
मरुधर मंडिप सुरतरु, आबोल नगर मांय जी।
शांति सुमति पार्श्व प्रभु चन्द्र आदि जिनराय जी ॥ पु० ६
भक्ति कमल मनोहर, मोहन दिये सुवास जी।
माणिक प्रभु प्रतापथी, पामें शिव आवास जी ॥ पु० ७ ॥

तारणाजी तीर्थ नु स्तवन

(तर्ज-आवो चंदन हार लावो)

अजित जिनन्द मनोहारा, भवि प्रेम ध्यावो नें
ध्यावे तो शिव सुख पावे । भवि०
राग द्वेष दोष आकरा, करे जीव खूंवार।
तेहने वशगी से रह्या, ते दुःख पाम्यो अपार । भवि० १ ।
क्रोध मान अंधार, मां रह्यो बहु अपराध।
विवेक दीपककी भली, शुद्ध मारग अनाप । भवि० २ ।

चारे कषायों नें प्रभु, आपे कर्या चकचूर।
ते कषायो टालवा, आव्यो हूं आप हजूर। भवि० ३।
तारंगा तीर्थपति नमु, भवजल तरवा काज।
जितशत्रु विजया तणा, कुलमण्डन जिनराज। भवि० ४।
मुक्ति कमल मनोहार छे, जेनो मोहन वास।
सूरि प्रतापे आपजो, माणेक ने शिव पास। भवि० ५।

भालक मण्डन धर्मनाथ प्रभु नुं स्तवन

(राग—वोल वोल आदीश्वर वाला काइं तारी मरजी रे)

धर्म्म जिनेश्वर सुख कर सारा, सेवो भाव विशाला रे
के प्रभुजी प्यारा रे।
प्रभुजी प्यारा दुःख हरनारा, भव से पार उतारा रे
के प्रभुजी प्यारा रे।
भानुराय ना नन्दन प्रभुजी, सुव्रता माता ना जाया रे
धर्म बताया पाप हटाया, मिथ्या मार्ग तजाया रे।
के प्रभु०। १।
मुक्ति पुरीमां आप विराजो, अविचल पदना धामी रे।
मुक्ति कारणे तुमनें पूजे सुख पामे विशरामी रे।
के प्रभु०। २।

आगम मां प्रभु पडिमा भाखी, सुर नर नारी पूजे रे।
सूत्र उत्थाप प्रतिमा काजे, पूजता कुमति लावे रे।
के प्रभु० । ३ ।

ससार सागर थारो जानी, आव्यो शरणे तुमारा रे।
भालके भेटो भाग्य उदय थी, पाप पुञ्ज निवारा।
के प्रभु० । ४ ।

सूरि मोहन पट्ट प्रभावी, प्रताप सूरि मानो रे।
माणेक विजय प्रभु भलेभ्यी, जन्म जीवित प्रमाणो रे।
के प्रभु० । ५ ।

केशरियाजी तीर्थ नु स्तवन

(तोरण थकाथी मबियो प्रभु फेर आयारे)

धुलेवा नगर के स्वामी आदि जिन राया रे
आदि जिनराया रे मरुदेवी जाया रे
नाभिराय कुल आया । आदि० १

केईने खग धारा, केई पास नारिमाला
ऐसे दूषण के धारा। आदि० २

जिनवर देव ध्यायो, देव न मिले आवो
जन्म जन्म सुख पावो । आदि० ३

तीर्थ श्वेताम्बर भारी, मूरति मोहनगारी,

नयना नें लागे प्यारी । आदि० ४

अजव ज्योति धारी, आलम सेवे सारी

केशर चढ़ावे भारी । आदि० ५

पाड़ी जाडी का घेरा, बीच में किया है डेरा

टालो जनम के फेरा । आदि० ६

मुक्ति का राज लेवा, आयो केशरिया देवा

माणेक विजय की सेवा । आदि० ७

घोघा मण्डन श्री नवखण्ड पार्श्व जिन स्तवन

(राग—केशरिया थांसु)

नव खण्डो पूजो पार्श्व जिनेश्वर शामलो ।

संसार सागर मां प्रभुजी रुलियो काल अनन्त ।

पुण्यता नें संयोगथीरे मलिया श्री भगवन्त रे । नव० १

दया नीर वसावी नें वलतो उगार्यों नाग ।

महामंत्र प्रभावथीरे सुखी कियो अथाग रे । नव० २

कमठ तापस वोधियो धर्म्म वतावी सार ।

भव दव ताप निवारवा रे वीजे नहीं आधार रे । नव० ३

निज आतम नें तारवा उतरवा भवपार ।

मुक्ति पद परसा सहु रे आवे तुम दरबार रे। नव० ४

घोघा मण्डन पार्श्व जिनेश्वर प्रगट प्रभावी जानी
भवजल तरवा ईव आवे केई दुरथी प्राणी रे। नव० ५

शिवपुर नां सुख शाश्वतां मुख थी कहा न जाय
मोहन ए सुख आपजी रे मागिके भव भव सायरे। न० ६

भावसपुर मण्डन अमीजरा पार्श्व जिन स्तवन

(राग—काली कमळी वाळे तुमको लाखों प्रणाम)

पास अमीजरा जिन नें मारा क्रोडो प्रणाम

त्रण जगतना स्वामी मारा, जग बांधव छो प्राण थी प्यारा
तारक पदना धारे। मारा क्रो० १

शिव साधन जगदीश पामी, भव तारक छो गुण के धामी
रत्न त्रयी भंडार। मारा० २

रत्न त्रयी दानज दीजे, सेवक आपी सुखियो कीजे।
पोष सुख अपार। मारा० २

कल्पतरु पारसमणि जानी, सुरमणि काम धेनु वखानी
सहु माहें सिरदार। मारा० ४

कोटि गमे सुर सेवा करतां, भवो भव केरी पाप ने हरतां
करतो आगम सार। मारा० ५

मीजरे अमीजारा कहायो, आस पूरे बहु पुण्ये पायो

भव दरिये जेम जहाज ॥ मारा० ६

ने मोहथू मुक्ति सुख लेवा, मोहन प्रतापी देजे देवा

माणेक हर्ष अपार ॥ मारा० ७ ॥

पुजपुर मंडन शांति जिन स्तवन

(राग—चन्द्रप्रभु जी से ध्यान रे)

शान्ति जिनन्द भगवान रे भव पार उत्तारो;

पार उतारो जाणी तुम्हारो

पामुं सुख अपार रे । भव० १

सोहामणी मूरति तुम्हारी,

जोता हर्ष अपार रे । भव० २

अतिशय धारी विश्वोपकारी,

जन्म से मरकी निवार रे । भव० ३

करुणा सिन्धु विरुदु तुम्हारु

भव जल पार उतार रे । भव० ४

पारेवो पाली संयम धारी

हुआ चक्री जिनराय रे । भव० ५

सुर नर वंदे आन न खंडे,

हर मा कर्म्म जंजाल रे। भव० ६

अनुपम शांति आप मुजने

जन्म मरण हरनार रे। भव० ७

पुजपुर मण्डन सवि अघ खण्डन

चउगति चूरण हार रे। भव० ८

मुक्ति मंदिर मां वास करावो

होवे माण्क सुखकार रे॥ भव० ९

चनकोशा मण्डन चन्द्रप्रभु स्तवन

(राग—सूने जिगर की पीवी है)

चन्द्र प्रभु जिनराया रे उतारो भवपार

तुम दर्शन है सुखकारू, भव ताप जु हरनारु

मुख आतमे हित कारूरे उतारो० १

चन्द्र सम ज्योति भारी, अज्ञान तिमिर हरनारी

प्रभु मूरति मोहनगारीरे उतारो० २

अनन्त गुणां ना धामी, पंचमी गति ने पामी

शिव शय्या ना भिसरामीरे उतारो० ३

केई पासे राखे नारी, माला शस्त्र कई धारी

ऐसे दूषण निवारीरे उतारो० ४

भय सात ज वारो मारा, मद आठ नां हरनारा
अष्टमी गति दातारे उतारो० ५
प्रभु तारक विरुद धराया, मैं तारक जाणी आया,
वनकोड़े दर्शन पायारे उतारो० ६
प्रभु मुक्तिपुरी मनोहारि, ज्यां वास कियो सुखकारी,
माणेक नें आपो सारीरे उतारो० ७

पुण्याली मंडन आदि जिन स्तवन

(राग—वीर तारु नाम ह्लालु लागे हो श्याम)

आदि जिनन्द अलवेला हो देव मरुदेवी जाया
मरुदेवी जाया नाभिराय कुल आया
युगादि देव कहाया हो देव। मरु० १।
विनीता नगरी नें पावन कीधी
तिहा लेई अवतारा हो देव। मरु० २।
आदि राया आदि मुनि कहाया
आदि केवली जिनराया हो देव। मरु० ३।
केवल पामी मायनें दीधूं
सुत वहु जोवा सिधाया हो देव। मरु० ४।
पुत्र नवाणुनें तार्या प्रभु जी

हर वा कर्म्म जआल रे। भव० ६

अनुपम शांति आप मुजने

जन्म मरण हरनार रे। भव० ७

पुजपुर मन्डन सधि अघ खन्डन

चउगति चूरण हार रे। भव० ८

मुक्ति मदिर मां वास करासो

होसे मानेक सुखकार रे॥ भव० ९

वनकोडा मण्डन चन्द्रप्रभु स्तवन

(राग—म्हूने चिगर की पीवी छु)

चन्द्र प्रभु जिनराया रे उतारो भवपार

तुम दर्शन है सुखकारू, भव ताप नु हरनारु

मुज आतमे हित कारूर उतारो० १

चंद्र सम ज्योति भारी, अज्ञान तिमिर हरनारी

प्रभु मूरति मोहनगारीरे उतारो० २

अनन्त गुणा ना धामी, पचमी गति ने पामी

शिव शय्या ना विसरामीरे उतारो० ३

कई पास राख नारी, माला शस्त्र कई धारी

एसे दूषण निवारीरे उतारो० ४

भय सात ज वारो मारा, मद आठ नां हरनारा
अष्टमी गति दातारे उतारो० ५
प्रभु तारक विरुद धराया, मैं तारक जाणी आया,
वनकोड़े दर्शन पायारे उतारो० ६
प्रभु मुक्तिपुरी मनोहारि, ज्यां वास कियो सुखकारी,
माणेक नें आपो सारीरे उतारो० ७

पुण्याली मंडन आदि जिन स्तवन

(राग—वीर तारु नाम ह्वालु लागे हो श्याम)

आदि जिनन्द अलवेला हो देव मरुदेवी जाया
मरुदेवी जाया नाभिराय कुल आया
युगादि देव कहाया हो देव। मरु० १।
विनीता नगरी नें पावन कीधी
तिहा लेई अवतारा हो देव। मरु० २।
आदि राया आदि मुनि कहाया
आदि केवली जिनराया हो देव। मरु० ३।
केवल पामी मायनें दीधूं
सुत बहु जोवा सिधाया हो देव। मरु० ४।
पुत्र नवाणुनें तार्या प्रभु जी

क्षेम मुजने प्रभु सारो हो देव । मारु० ५ ।
सिद्ध निवासी थई ने बैठा
अक्षय सुख भडार हो देव । मारु० ६ ।
धर्म्म बताया पाप हटाया
श्रप भुवन ना राया हो देव । मारु० ७ ।
पुण्याली मण्डन नाभि के नदा
टालो जनम ना फन्दा हो देव । मारु० ८ ।
मुक्तिनां मोहन सुख लेवा नां
माणेक शरणे आया हो देव । मारु० ९ ॥

पन्यास प्रवर श्री माणेकविजयजी विरचिता स्तवन चतुर्विंशतिका

जावाल मडन आदि जीन स्तवन

(राग—जिनराजा ताजा)

प्रभु आदि जिनेश्वर, जावाल मडन सेविये
विनीता नगरी पावन कीधी, सर्वार्थसिद्ध थी आया
नाभीराय कुल मडन तुमे, मरुदेवी ना जायारे । प्र० १
युगल धर्मने दुर निवारी, शुद्ध मारग बताया

नरवर मुनिवर केवली जिनजी, आदि आप कहायारे। प्र० २

केवल पामी मायने दीधुं, शिवपुर मांहि सिधायां

तारो जाणी आयनो राया, तुम शरणे मैं आयारे। प्र० ३

अन्तरजामी आतमरामी, अलख निरंजन प्यारा

शिवपुर मांही सदा विराजो, अक्षय सुख भंडारारे। प्र० ४

गगनचुंवी मंदिर है भारी, मांही आप विराजो

सुरनर नरवर आण न खंडे, त्रण जगत शिरताजोरे। प्र० ५

मन मोह्युं मुक्ति सुख लेवा, देजो देवाधिदेवा

मोहन प्रतापी माणेक तारो, करो सफल मुज सेवारे। प्र० ६

बनकोडा अजितनाथनु स्तवन

(राग—महावीर तुमारि मनहर मुरती, देखि मन ललचाये)

प्रभु अजित जिनेश्वर मुखडु जोतां, हैये हर्ष अपार

जगदीश्वर जिनजी मारा, परमातम पदना धारा

मुज आतमना आधारारे, प्रभु गुणमणि भंडार। प्र० १

अनंत गुणोना धामी, मुरती प्रभुनी पामी

तारक ए दीलमें मानीरे, सुरनर मली गुण गाय। प्र० २

तुम नामे नवनिधि थावे, तुम ध्याने पातिक जावे

आधिव्याधि दूर हटावेरे, जे निशदिन तुमने ध्याय। प्र० ३

विएशत्रु कुले आपा, विजया माता ना जाया
अजित जिन नाम घरायारे, गज लछनना धरनार । प्र० ४
मध्ये अजित जिन राजे, रिषभ शान्ति शिवकाजे
वाम दक्षिण प्रभु बिराजर, जेनी शोभा अपरपार । प्र० ५
वनकोडा नगर राजा, आस पुरीये देहरे बिराजो
सहु संघ तणा शिरताजोर, करो दिन २ वृद्धि सवाय । प्र०
मुक्ति मोहन प्रभु आपो, चउगति ना बंधन कापो
निज चरणे सेवक थापोर, माणेक करी भवपार ॥ प्र० ७॥

सम्भवनाथ प्रभु नु स्तवन

(राग-अभिनदन जीन दर्शन तरसिये)

संभव जिनवर दिलमां धारीये धारिये अचल मन
सवो भवियण श्रीजा जिनन, सफल करा निज तन । सं० १
नाथ निरञ्जन नयने निरखी, हरखित होय रे मन
जीव अनादिना फेरा टालवा, सेव स धन धन । सं० २
अमृतधारा परमात्मा प्रभु, गुण पांत्रीस रसाल
अष्ट प्रतिहारथी शोभता, समवसरणे विशाल । सं० ३
वाणी सुणे सुर नर नारीयो पशु पंखी हितकार
वैर विरोधने छोडी हांस्थी, उतरवा भव पार । सं० ४

मुक्ति पुरीमां सुख अनंत छे, आदि अनंत सुखकार
सूरि प्रतापना माणेकना प्रभु, आवागमन निवार । सं० ५

अभिनंदन प्रभु नुं स्तवन

(राग-चतुर सनेही सांभलो)

अभिनंदन जिनराजजी, परमेश्वर परमान मेरे लाल
सिद्धस्वरुपी साहिबा
गुण निधि गिरुआ प्रभु, नहीं राग ने रीश । मेरे । सि० १
अंग अनोपम आपनु, नही शस्त्र सबंध । मेरे । सि० २
अर्धांगे नारी नहीं, नहीं करे जप माल । मेरे । सि० ३
आशा दुर निवारीने, तार्या प्राणी थोक । मेरे । सि० ४
चउगति बंधन चूरीने, पाम्या पद निर्वाण । मेरे । सि० ५
कपि लंछन जिनराजजी, आपो शिवपुर राज । मेरे । सि० ६
मोहन प्रतापी छो प्रभु, माणेकना शिरताज । मेरे । सि० ७

सुमतिनाथ प्रभु नुं स्तवन

(राग-आयो जिणंदारे, प्रभुजी मोहे तारना)

सुमति जिणंदारे, प्रभुजी मोहे तारना
प्रभुजी मोये तारना, जिणंद मोहे तारना
वारनारे भवांकी फेरि वारना,

नाथ निरंजन आप कहाया, रख अपी के निघाल । प्र० १
प्रण भुवनमां दूजा न दीठा, तुम सम देव दयाल । प्र० २
समोवसरणमां आप सोहाया, सुर नर सेवे अपार । प्र० ३
सुरनर सिरीका सापा प्रभुजी, दयना देह सुखकार । प्र० ४
सुमति आपो कुमति कापो, दूर हरो जंजाल । प्र० ५
भव दरीये से आप बचावो, साचा हो तारणहार । प्र० ६
तारक गुणी विरुद तुमारा, आयो तारो जिनराज । प्र० ७
मुक्ति मोहन प्रतापी आपो, माणेकने प्रभु आज । प्र० ८

पद्म प्रभुनु स्तवन

(राग—आइ बसंत बहार रे, प्रभु बैठे मगनमे)

पद्म प्रभु जिनराज रे, प्रभु प्रेमे निहालो
गुण अनंते भर्या प्रभुजी, मागु उत्तम गुण रे । प्रभु० १
स्पर्शपरने खोट शु होवे, हवा एक रतन रे । प्रभु० २
मिथ्या ज्ञान हटावो जिनजी, पद्म पदम नाणरे । प्रभु० ३
कर्म कलंकने दूर निवारी, वरीया शिवपुर धामर । प्रभु० ४
पद्म प्रभुका प्रेमे प्रणमी, टालो भवना फन्द रे । प्रभु० ५
मोहन प्रतापी ध्याने होवे, माणक सुख मकार रे । प्रभु० ६

सुपार्श्वनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग-मारु वतन आ वालु वतन)

मुने वाला लागे रे, सुपार्श्व जिणंद
सुपार्श्व जिणंद, काटे कर्मना फंद । मुने० १

देव न दीठा कोइ जगतमां,
दुजा प्रभुजी तारण तरण । मु० २

रतन चिन्तामणिने कामधेनु,
कल्पतरुथी अधिक जिणंद । मुने० ३

भव अटवीमां भुल्या जीवने,
एक प्रभुनुं खरुं शरण । मुने० ४

शरणागत वत्सल तुम निरखी,
पूजे सुरनर नारी नरेंद । मुने० ५

मोहन प्रतापे प्रभु गुण ध्याने,
माणेक पावे सुख अनंत । मुने० ६

जावाल मंडन चंद्रप्रभुनुं स्तवन

(राग-पार्श्व प्रभु ने हु तो वारंवार)

चंद्रप्रभु नित भेटीये रे लाल
प्रभु मुरती मोह[illegible]

आतम हितने कारणे, आव्यो श्रीजगनाथ
चउगति चूरी माहरी, दास करो सनाथ
अनाथने करो सनाथ रे मन० १
ध्याने चित्त करि निर्मलु, नाम रटण करे जेह
तस पातिक दूरे टले, निर्मल थाये देह
प्रभु देहनो करावो छेह रे मन० २
धन्य जे रसना मानिये, प्रभु गुण गावे सार
नयणां निरखी नाथने, विकसे वार हजार
प्रभु भेटवा दिल उलचाय रे मन० ३
चन्द्र किरण सम उजलु, गगनचु बि जेह
चन्द्रप्रभ मंदिर भलु वांकाल नयर एह
जिहां चन्द्रप्रभु जिनराज रे। मन० ४
मुक्ति पुरीने पामवा माहन प्रतापी देव
माणक निश दिन चाहता, चरण कमलनी सेव
प्रभु सवा शिव सुखदायक ॥ मन० ५

सुविधिनाथ प्रभुनु स्तवन

(राग—प्रभु आप भविष्य मामी छो)

सुविधि जिणद सुखकारा छो, भविपोने लागो प्यारा छो

प्यारा छो भववारा छो, प्रभु भवथी पार उतारोने। १

मोहराय ने दूर निवारो, दया प्रभुजी दिल मां धारो

स्वामी सेवक नो छे दावो, भवथी पार उतारोने। २

चार गतिमां फरियो स्वामी, तुम दर्शन न लह्यु गुणधामी

दया करी द्यो दर्शन स्वामी, भवथी पार उतारोने। ३

दर्शन पामी प्रभुजी तमारु, हैडु हरखे छे प्रभु मारु

ध्यान धरु छुं हुं मनोहारु, भवथी पार उतारोने। ४

दर्शने दुरित दूरज जावे, आधि व्याधि दुर गमावे

कुमति प्रभुजी पास न आवे, भवथी पार उतारोने। ५

मोहन दर्शन आपनु पामी, आव्यो प्रभु मुक्तिनो कामी

माणेकने ये पद आपोने, भवथी पार उतारोने॥ ६

शीतलनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग—नागरवेलीयो रोपाव, तारा शुद्ध चित्तोमा)

शीतल जिनने वसाव, तारा दिलने सोहाव

प्रभुनुं तान लगाव तारा दिलने सोहाव

प्रभु त्रण भुवन मां गाजे, त्रण गढमां विराजे

समोवशरण मां गाजे, तारा दिलने सोहाव। १

प्रभु वाणी अमृत प्याला, भवि पिये भर भर प्याला

पावे गुण रसाला, तारा दिलने सोहाव । २

प्रभु योजनगामिनी वाणी, सुणे सहु हित आणी

देखे सुखनी खाणी, तारा दिलने सोहाव । ३

हु कठिन करमने काप, धरी गुण अमाप

रहे न भवनो ताप, तारा दिलने सोहाव । ४

प्रभु मुक्ति मंदिर मां वास, अेनी मोहन सुवास

आपो माणेक ने खास, तारा दिलने सोहाव ॥ ५ ॥

श्रेयांसनाथ प्रभुन् स्तवन

(राग—जगजीवन जगवाल हो)

श्री श्रेयांसजिन सेवीये, आणी अधिक सनेह लालरे

देव सवि दगव्या सही,नावे तुम सम तेह लालरे । श्री० १

गुणमणि भंडार छो, कहेतां नावे पार ।

म लेखा आव्यो सही, दूजो नही दातार ला० श्री० २

भव समुद्रमां जीवने, प्रवहण अेम आधार ।

पार उतारो भव थकी, तुम विना नही तारनहार ला० श्री० ३

चउगतिनां दुख वारवा, हरवा कष्ट अजाल ।

वाव्या प्रभु शरण सही, आपी दीन दयाल ला० श्री० ४

मोहन ध्यान प्रभु तणु, थयु मुक्तिन काज ।

सुरि प्रताप मधुकर वर, माणक अविचल राज ला० श्री० ५

वासुपूज्य प्रभुनुं स्तवन

(राग—हवे सुवाहु कुमर इम विनवे)

वासुपूज्य प्रभु अवधारजो, विनंती जगदाधार,

प्रभुजी मोरारे

परम पदने पामीया, वरीया शिववधु नार । वा० १

राग निवार्यो वैरागथी, क्रोध शमथी कर्यो दूर । प्र०

लोभ वार्यो संतोषथी, माया करी चकचूर । वा० २

कर्म कलंक निवारीने, वरिया पंचम नाण । प्र०

समोवसरणमां बेसीने, वरसावी अमृत वाण । वा० ३

सेवा दर्शने जे दूर रह्या, भमिया घोर संसार । प्र०

सुर नर नृप सेवा करे, करवा सफल अवतार । वा० ४

नर भव पुन्ये पामीने, पाम्यो दर्शन आज । प्र०

सेवक जाणी तारजो, सीजे वंछित काज । वा० ५

मुक्ति तणां सुख मोटकां, वंछु हु लेवा तेह । प्र०

सूरि प्रतापना माणेकने, अक्षय सुख द्यो अेह । वा० ६

विमलनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग—भारी वेडाने हु नाजुक नार)

विमल जिनेश्वर साहिबा रे लाल

अवधारो सेवक अरदासरे, दीन दयाल मुने तारजोरे लाल,

दर्शन दुरित निकंद दूरे लाल ।

दुःख दारिद्र दुर पलायरे । दीन० १

सायर चंदने निरखी, पद्मिनी देखी सुर

तेम जिणंदने निरखी, होये आणंद पूर

प्रभु निरखी हरख उभरायरे । दीन० २

संसारमां सार जाण्यो सही, जिनवरनो आधार

ज्यां पीजे आयु हवे, भलीया तारणहार ।

तारो स्वामी दया प्रभु सारे । दीन० २

उपदेश देई तारीया, दुष्ट करम करनार

ते वाणी आव्यो सही, प्रभु तणे दरबार ।

आव्यो परम पदने कामरे । दीन० ३

मुक्तिनां सुख शाश्वतां, मुखथी कह्यां न जाय

केम करी पामु प्रभु, अर्पो एह उपाय ।

हरी कर्म पामु प्रभु पदरे । दीन० ४

मुक्ति मोहन कारणे, विमलता करो मुज

विमल जिनेश्वर साहिबा ए अरज छे मुज ।

करो माणक सुख भंडार रे । दीन० ५

श्री अनंतनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग—ईडर आवा आवली रे)

अनंत जिनेश्वर माहरारे, जग तारक जगदेव;
गुणनिधि माहे मानीलारे, सुरनर करता सेवरे।
भवियां वंदो अनंत जिनराय, सेवे सुरनर रायरे। भ० १
मोहनगारी मुरती रे, मोहे सुरनर वृन्द,
नयणां मांही अमी झरे रे, मुख पुनमनो चंदरे। भ० २
वदन कमल प्रभु आपनुं रे निरखी मन हरखाय,
लक्षण सोहे अति भलां रे, एक एक सवाय। भ० ३
रात दिवस प्रभु ताहरूं रे, नाम जपुं जिनराय;
आण वहुं शिर ताहरीरे, जव लगे होये आयरे। भ० ४
मोहन गुण छे आपना रे, कमल जेम सुवास।
सूरि प्रतापना माणेकनो रे कीजे शिवपुर वासरे। भ० ५

भालक मंडन धर्मनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग—जिणंद तोरे अब मैं शरणे आयो)

प्रभुजी मोरा धर्म जिनेश्वर प्यारा,
धर्म जिनेश्वर साचा साहिब, गुणमणि भंडारा। प्र० १
दर्शन तोरे आयो प्रभुजी, भव दुःखना हरनारा। प्र० २

धर्म जिनेश्वर धर्मज आपो, भवजल पार उतारा। प्र० ३
दु:ख दरियामां पडता जीवोने, प्रवहण ज्युं आधारा। प्र० ४
आधि व्याधि दूर हटावो, हावे सेवक सुखकारा। प्र० ५
मालक मदन धर्म खिणदक्षी, आपो अक्षय सुख सारा। प्र० ६
सूरिमोहन गुरुराज प्रतापे, करो मानेक भवपारा। प्र० ७

॥ ईडर गढ मंडन—शांतिनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥

(राग—महावीर तुमारी मनोहर मूरति निरखी मन हरखाय)

प्रभु शांति जिनेश्वर साहब निरखी, मन मारुं हरखाय;
तुम मूरत मोहनगारी, भवियाने लागे प्यारी
भव भवना दूर निवारीर, ए आप सुख भीकार। प्रभु० १
तुम भाल मनोहर सोहे, निरखीने मनडा मोहे;
कई पातिक दूर विछोहर तुम आणा धरी हितकार। प्र० २
प्रभ प्राण धर्मी छा प्यारा भव तापना हरनारा;
उम्मावा अमृत धागार तुम ध्यान धरू सुखकार। प्र० ३
प्रभ ... गढ विराजा परचा तुमारा साजो;
भ ...ाना मीठ काजा र भवभ्राति पाम अपार। प्र० ४
... ...नालय भाग नयनोन आनन्दकारी;
हमन ... भक्ति मारीर करी तन मन धन लगाय। प्र० ५

प्रभु मुक्ति कमलमें सारू, घ्यान मोहन कीधु तमारू;
प्रभु प्रतापे देजो प्यारू रे, गणि माणेक विजय गाय ।प्र० ६

कुंथुनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग भवियां नवपद जगमा सार)

कुंथु जिनेश्वर राय, भवियां सेवे सदा सुख थाय
शूरराय कुल भानु प्रगट्यो, कुल उदय कर नार । भवि० १
श्री राणी माताना जाया, दिककुमारि हुलराय । भवि० २
सुरगिरिये जिनवरजी केरा, जन्माभिषेक कराय । भ० ३
घाती अघाती कर्म खपावी, ज्ञान केवल प्रगटाय । भ० ४
नाथ निरंजन शरण लह्याथी, वेगे शिवपुर जाय । भ० ५
जगजन तारक जगत बंधु, सुरपति शीश नमाय । भ० ६
मोहन प्रतापे प्रभु मले तो, माणेक सुखीयो थाय । भ० ७

अरनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग—शांति जिनेश्वर साचा साहेब)

अढारमा अर जिनवर पामी, सेवे शिवपुर कामी;
हो जिनजी मुज मन्दिरीये प्रभु आवो १
नाथ निरंजन जगदाधारा, गुण मणि भंडारा । हो०मुज २
दुष्ट करमने दुरे करवा,करवा आतम सारा । हो०मुज ३

तारक वाणी सुरपति पूजे, कर्म रिपुओ ध्रु जे । हो०मुज ४

चक्री जिन होय पदवी पामी, शिवरमणीना कामी ।

हो०मुज ५

सूरि प्रतापे अरजी घ्याने, माणेक शिवपद पामे। हो०मुज ६

मल्लीनाथ प्रभुनु स्तवन

(राग—धण मसुमोर आभलगा राग)

मल्ली जिनेश्वर दर्शन दीजीये, कृपा करि जगनाथ

दर्शन दुर्लभ पामे जीवडा, ते होवेरे सनाथ । मल्ली० १

मिथ्या वासना कारमी गयी, दर्शने दुरित पलाय

कर्म पडल विखराये व समे, आपदा दुरे रे जाय । म०२

विण दरसने चउगतिमां रूल, रवल ठामोरे ठाम

दु खनो भणी तह पिना लहे,सीज न वछीत काम । म०३

नयणां चाह प्रभुन निरखवा, मन चाह मलवारे काज

रसना जिनवर गुण गावा भणी करवा आतम काज। म०४

शिवसुख भोगी शिव सुख आपीये, अविनाशी महाराज

अक्षय खजान खोट नही हुवे पाइ मुक्ति नु राज । म०५

मोहन गारा साहिब माहरा, गुणमणिना भंडार

सूरिप्रतापना माणेकना प्रभु, आवागमन निवार । म०६

मुनिसुव्रत प्रभुनुं स्तवन

(राग--साहेब शिव वसिया)

मुनिसुव्रत जिनराजजी रे, साहेब चतुर सुजान,

जिनवर दिल वसिया।

दिल वसे भवदुःख खशेरे,पामे अविचल ठाम। जिन० १

वदन कमल सोहे भलुं रे, जेम पूर्णिमा चंद। जिन० २

नैन प्रभुना निर्मलारे, गंगा सम जल नीर। जिन० ३

शांत सुधारस देहमांरे, लक्षण सहस्र ने आठ। जिन० ४

वाणी योजन गामिनीरे, बावना चन्दन शीत। जिन० ५

केवल लई मुक्ति वर्यारे, भोगवो सुख अनन्त। जिन० ६

जगबांधव प्रभु में लह्यारे, वरवा शिव वधुनार। जिन० ७

भवोदधि तारक माहरारे, दीन उद्धारक देव। जिन० ८

सूरि प्रतापे माणेकनो रे, कीजिए भवनो अन्त। जिन० ९

नमिनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग—मल्लि जिनजी व्रत लीजे रे)

नमि जिनराजजी प्रभु मारा रे, भवबंधनना हरनारारे ।

तुम नामे नव निधि सारा। नमि० १

मोहमायामां नवि लेपायारे, राग द्वेषथी नही घेराया रे।

शुभ ध्याने कर्म खपाया । नमि० २

प्रभु पंचम ज्ञानने लयवार, कोटि सुर ओच्छव करवारे

भवि जीवना पाप न हरता । नमि० ३

सुर नर नरेंद्रे पूजायारे, शिर उपर छत्र धरायारे,

बे बाजु चामर विंझाया । नमि० ४

दया भावे प्रभुजी तारोरे, हवे आशरो एक हमारोरे,

मारा आवागमन निवारोरे । नमि० ५

प्रभु तारक बिरुद धरावोरे, जन्म मरण दुःख हटावोरे

स्वामी सेवकनो छे दावोरे । नमि० ६

नेमिनाथ प्रभुनु स्तवन

(राग—आज तारा चरण पामी, हैडे हर्ष अपार है)

नेमि जिणंदनी मुरत भारी, निरखतां आनन्द है । ने० १

निर्विकारी ब्रह्मचारी, काया जस नीलवर्ण है । ने० २

भाल अष्टमी चन्द जाणा, वदन कमल मनोहार है । ने० ३

एक हजारने आठ अंग, लक्षणा सुखकार है । ने० ४

पशुओ उगारा राजुल तारी, किया शिवपुर धाम है । ने० ५

मल्लिकमलने ध्याय प्राणी, मोहन करी शुभ भाव है । ने० ६

धर्म प्रताप भ मलता, माणक सुख अपार है । ने० ७

जावाल मंडन गौडी पार्श्व स्तवन

प्रभु गौडी पार्श्व जिनने, दिल मां वसावोरे
अजर अमर पद पावो। दिल० १

प्रगट प्रभावी देवा, चाहुं चरणनी सेवा
देजो देवाधिदेवा। दिल० २।

दया के सिन्धु स्वामी, आतम गुणके धामी
मुक्ति वधु के कामी। दिल० ३।

कमठ कुं बोध किया, नाग बचाइ लिया
नवकार मंत्र दिया। दिल० ४।

नाग सुर पद पाया, विद्युन्माली भगाया
उपसर्ग दूर कराया। दिल० ५।

जावाल नयरे आया, गौडीजी दर्शन पाया
हरखे प्रभु गुण गाया। दिल० ६।

मुक्तिपुरीए मारा, वास करावो सारा
माणेक करी भव पारा॥ दिल० ७॥

वीर प्रभुनु स्तवन

(राग—परदेशी मुख्या टोपी वाला ना टोला उतर्यां)

प्रभुजी वीर जिणंद ने वंदिये

षट्सा भवोमनना दुख कापरे,

उपगारि प्रभु वीर जिनेश्वर साहिबा। १

प्रभुजी पुरुषोत्तम परमेश्वरु

साश्वत लह्यु मुक्ति केरु राज्यर। उप० प्र० वी० २

प्रभुजी अक्षय खजानो छे आपनो

शोभित ज्ञानरयणे भरपूर रे। उप० प्र० वी ०३

रत्नत्रयी ने समकित आपजो

जेथी पामु भव फेरो पाररे। उप० प्र० वी० ४

प्रभु तुमे इन्द्रभूत्यादिक उधर्या

तार्या रे घोर करम ना करनाररे। उप० प्र० वी० ५

मुक्ति कमले मन मोह्यु मारु

मोहन जेनी प्रतापी सुवासरे। उप० प्र० वी० ६

श्रात नदन प्रभुजी मुने तारजो

माणेकनो करो शिवपुर वास रे॥ उप० प्र० वी० ७

॥ स्थूलीभद्रनी सज्झाय ॥

(राग भरत जी घर बैठा बैरागी—)

नर भव रत्न चिंतामणि जाणी, जाणी अथिर संसार,

संयम लेई स्थूलीभद्रजी आव्या, कोश्या ने आगार,

मुनिवर स्थूलीभद्र हितकार ।१।

कोश्या कहे स्थूलीभद्र नेरे, एशुं किधूं काज,
कोण मल्यो तुमने धुतारो, कोणे भोलविया आज,
वालम जी नहि छोड़ूं हवे साथ ।२।

गुरु वयणे असार संसार ने, जाणी छोड़्यो परि-वार,
नरक नी खाण ने मुत्र नी क्यारी, जाणी ने छोड़ी नार,
कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।३।

गुरु आणा लेई तुम घेरे, प्रतिबोधवा हुं आयो,
सुख संसारी दुःख देनारा, मृग जल जेम जीव धायो,
कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।४।

मोहे भान भूलेलो ज्यारे, तुम आवासे वसियो,
तुम सामु हवे नहीं जोवुं, वैरागे मन धसियो,
कोश्या जी विपय थी मनडो वार ।५।

काम शत्रु में कबजे कीधो, मात समान तुम जाणी,
तारा चरित्र थी नही चलूं, पाप घणुं दुख खाणी,
कोश्या जी विपय थी मनडो वार ।६।

भोग ने विप किंपाक थी अधिका, जाण्या अति दुखदाय,
हवे हुं नथी भान भुलेलो, जाण्यो में धर्म सवाय,

कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।७।

विषय रावण राज्य गुमाव्यु, पद्मोत्तर राज्य भ्रष्ट,
चन्द्रप्रद्योतन दासीमां मोह्यो, नरके मणीरथ हुए,
कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।८।

शील यश कीर्ति होय जगमां, सङ्कट सवि दूर जाय,
अग्नि जल सम शीतल होय, सर्प कुसुमनी माल,
कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।९।

सुदर्शन नी आपदा नाठी, शूली सिंहासन थाय,
नर राय देव गन्धर्व गुण गाय, चरणों में शीश नमाय,
कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।१०।

शास विषय नी दूर निवारी, धर समकित सुखकार,
व्रत श्रावक ना बार पाली, कर सफल अवतार,
कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।११।

विषय मां अंध बनी हूं स्वामी, नाच गान बहु कीध,
पड रस भोजन लीधा साथ, आंख उघी नथि कीध,
मुनिवर सांचा कया उपगार ।१२।

क्षणिक सुख मां जन्म गुमाया धर्म न कीधा लगार,
मान्या गुरु मनामी तुम, कीधा मम उपगार,

मुनिवर सांचो कर्यो उपगार ।१३।
भवसमुद्रे पड़ती मुझ ने, समकित नाव देइ तारी,
धर्म जिनन्द नो पालीस प्रीते, तुमे खरा उपगारी,
मुनिवर सांचो कर्यो उपगार ।१४।
प्रतिबोधी कोश्या वेश्या ने, पाली संयम सार,
स्वर्ग मांहि मुनिवर जी पोंच्या, जाशे मुक्ति मझार,
मुनिवर सांचो कर्यो उपगार ।१५।
शियल व्रते सुखी कोश्या जी, निशदिन मुनि गुण गाय,
चौरासी चौवीसी नामज रहेशे, नामे नव निधि थाय,
मुनिवर साचो कर्यो उपगार ।१६।
विजय मोहन सूरि राय प्रतापे, माणेक विजय पन्यास,
निशदिन ए मुनिवर ने गावे, तन मन धरी उल्लास,
मुनिवर साचो कर्यो उपगार ।१७।

अमर कुमार नी सज्झाय ढाल १

(राग—ओधवजी संदेशो केजो मारा श्याम ने)

राजगृही नगरी नो श्रेणिक राजियो,
चित्रशाला करावे अतिमन भाय जो।
थाती दिने ते राती पड़ी जती,

जोइ बोलावे जोशी ने श्रेणिक राय जो।
कर्म तणी गति ने तुमे सांभलो ।१।
तीर्थपति पण दुःखो पामे कर्मथी,
कर्म बनाव क्षणमां रायने रंक जो।
रंक ने पण राज्यपति बनावशे,
सुख दुःख कर्म विना न देवे कोय जो। कर्म० २।
कहे जोशी बालक बत्रिस लक्षणो,
हामीज तो थाये महल तैयार जो।
राये ढिंढारा फरव्यो आखा शहर मां,
बालक साटे तोली दऊ सोना मोहर जो। कर्म० ३।
ब्राह्मण ऋषभदत्त भद्रा नारीए
होमवा आप्या बालक अमरकुमार जो।
माता मोहरो ताली आपी नें लीधो
होमवा माटे बालक अमरकुमार जो। कर्म० ४।
आंस नाखी अमर कहे मात तातनें
होमवा मुझनें क्यां आपो दयाल जो।
तात कहे माता बचे ताहरी
माता पण बोले वचन विशाल जो। कर्म० ५।

माता कहे सारु खावा ने जोइये
काम काज करवू नही लगार जो।
वालक रोतो सांभली दोड़ी आव्या,
काका काकी मासी फुवा ते वारजो। क० ६।
वेन पण तिहां कने आवी हती,
तो पण कोई ए बचाव्यो नहीं तेह जो।
भरे वजारे राय सेवक लेई गया,
वाल चण्डाले वेच्यो कहे एह जो। क० ७।
अमरकुमर कहे राखो कोईक मुजनें,
सेवक थइ नें रहीश हुं दिन रात जो।
लोको कहे मुलथी राजाये लीयो,
हवे केम अमारा थी रखाय जो। क० ८।
राज सभा मां वालक नें लेई आविया,
राजाने कहे कुमार शीश नमाय जो।
मुले दीधो मात पिता ये तुझनें,
माहरो दोप तेहमां नहीं कोय जो। क० ९।
ब्राह्मणो कहे जलदी करो हे राजवी,
विलम्ब करवो तेहमां नहीं सार जो।

गगोदके नवरावी मदन मरसिया,

फूलनी माला घाली गले मनोहार जो । क० १० ।

होमनी पासे लाव्या अमरकुमार नें

मदो भणे मायणो सर्पी धार जो ।

मोजो घन अनर्थ क्यां सुखी करे,

आसा वारो कहे मापक हितकार जो । क० ११ ।

ढाल ५ जी

(राग—लाल गुलाबी भांगी बनी रे)

हवे अमरकुमर मन चिन्तवे रे,

दीधो मुनिए नवकार हो लाल ।

दुखिया नों दुख चूरवो रे

मन्त्र माहे सिरदार हो लाल ॥

कीधां कर्म छूटे नहीं रे,

पिण भोगवियां नेह हो लाल । १ ।

अग्नि सिखा शीतल थन रे,

सप हाथ फूलनी माल हो लाल ।

दुख टले एना नामथी रे,

ध्यान धरु सुखकार हो लाल । की० २ ।

मंत्र ना ध्याने सुरेन्द्र आवियो रे,

अग्नि ज्वाला करी शीत हो लाल।

सोनाना सिंहासने थापीने रे,

सुरपति गुणगाय हो लाल। की० ३।

राय सिंहासन थी पड्यो रे,

मुखे छुटियां लोही हो लाल।

ब्राह्मण सहु लांबा पड्या रे,

बाल हत्या ना फल तेह हो लाल। की० ४।

नवकार मंत्रना जले करी रे,

कुमरे साजो कार्यो राय हो लाल।

राय कहे राज्य पाट ताहरूं रे,

तूं रायनें हूं दास हो लाल। की० ५।

राज्य न जोइये माहरे रे,

लेशूं संयम सुखकार हो लाल।

लोच करी संयम लियो रे,

करे श्मसाने काउसग्ग हो लाल। की० ६।

ऋषभदत्त भद्रा नारीये रे

वेंची लिधी सोना मोहरो हो लाल।

कांईक द्रष्टी मोयसो रे,
आवी कहे कोई वाल हो लाल । की० ७ ।
मात कहे मुञ्ज वयू रे,
राजा मन लखे सही हो लाल ।
वैरभावे छरी लेईने रे,
आवी मार्यो मुनिराय हो लाल । की० ८ ।
शुभ ध्याने स्वर्गे गया रे,
बारमे बावीश सागर आय हो लाल ।
भद्रा घेर जावे हांसथी रे,
बाघण मली वणी वार हो लाल । की० ९ ।
पापीनी मारी तेनी समे रे,
छठ्ठी नर्के जाय हो लाल,
बावीस सागर आउखु रे,
दुःख मय तिहां जाय हो लाल । की० १० ।
कर्म थी मित्रा शत्रु बने रे,
शत्रु मित्र ते थाय हो लाल ।
सर नर क देवेन्द्र ने र
कर्म न छाडे लगार हो लाल । की० ११ ।

ओगणी बाणु साल मां रे

सिद्ध क्षेत्र मांहे कीध हो लाल।

कर्म विपाक नवकार मंत्रनु रे

फल जाणवा कह्यु एह हो लाल। की० १२।

मुक्ति कमल मनोहार छेरे,

मोहन तेनी सुवास हो लाल।

सूरि-प्रतापे शिव सुख मलेरे,

होवे माणेक सुखकार हो लाल। की० १३।

श्री विजय हीर सूरीश्वरजी महाराज ना सज्झाय

(राग इडर आम्बा आमली रे)

प्रहलाद् पुर सोहामणु रे, तिहां वसे कूरा सेठ

दया धर्म सदा धरेरे, ओर ने माने वेठ।

चतुर नर वंदो हीरसूरिराय, वंदता पाप पलाय च० १

त्रण काले जिन पूजतारे, प्रतिक्रमण दोय वार

न्याय थी द्रव्य मेलवेरे, जिन आणा शिर धार च० २

शीयलवंती तेहनीरे, नाथी नामे नार

पुत्र प्रसवे शुभ दिनेरे, ओच्छव नो नहि पार च० ३

नाम थापे हीर जेहनु रे, वृद्धि पामे तेह

होव धार धरसनोरे, गुरु मल्या गुण गेह ध० ४
हीर ने प्रथम आपतारे, दानविजय सूरि राय
हीर हर्ष नाम पापतारे, पाटणे महोत्सव थाय ध० ५
अनुक्रम पंडित हुवारे, स्वपर शास्त्र ना जाण
वाचक पद नाडलाई मरि, सूरि पद सिरोहि खाण ध० ६
अकबर बादशाह एकदारे, बैठा झरोखा मांहि
श्राविका चम्पा नामनीरे, पैसे धर्मी त्यांहि ध० ७
कर्म क्षय करवा भणीरे, करवा सफल अवतार
छ मासनी तपस्या कररे, मघमां हर्ष अपार ध० ८
बादशाह पूछे वालावीनेरे, तप करो कोने पसाय
चम्पा कहे सुणो राजवीरे, देवगुरु पसाय ध० ९
देव वीतराग जाणीयेरे, गुरु महाव्रतधार
हीरविजय सूरिवररे, गुण गणना भंडार ध० १०
प्रभावी नाम गुरु तणु रे, सुणी हर्ष अपार
बोलाव्या गधारथीरे, शुभ दई समाचार ध० ११
विहार करता आवीयारे फतपुर मझार
संघ सकल स्वागत करे, ओच्छवनो नहीं पार ध० १२
अकबर सूरि सन्मुख जइ कर सूरीनो सत्कार

सूरिश्वर देशना दीयेरे, सयल जीव उपगार च० १३

मरण पामता जीवनेरे, दीये सोवन कोड

राज्यऋद्धी सवि जो दीयेरे, नावे अभयदाननी जोड च० १४

हिंसा करे जे जीवनीरे, दूर्गति जावे तेह

अभयदान जे दीयेरे, स्वर्गे जावे तेह च० १५

अकबर कहे सूरिजीनेरे, मुज सरखु कहो काम

सूरि कहे पर्वमां वडोरे, पर्युषणा अभिराम च० १६

पडह अमारि तणोरे, पर्युषणनी मांय

आठ दिवस लगे दीजीयेरे, अभयदान उत्साय च० १७

निर्लोभी गुरु तणुरे, सुणी वचन उदार

राय कहे सूरजीनेरे, ओर दिवस मुज चार च० १८

श्रावण वदी दशमी थकीरे, बार दिवस सुखकार

भादरवा सुद छठ दीनेरे, पालु पलावु दया सार च० १६

गुजरात मालव देशमांरे, अजमेरने फतेपुर

दिल्ली लाहोर मुलतानमारे, फरमान काढे सनुर च० २०

गुरु साथे लेइ आवीयारे, डामर सरोवर पास

सर्वे जीवोने छोडी दीधारे, अभयदान देइ खास च० २१

वांचक शाति चंद्रनारे, उपदेशथी बादशाह

छमास अमारि घोषणारे, करावे उत्साह   च० २२

सवाक्रोर सकलां तणीरे, छीम त्यागे नरराय

अटक देश जीवी करीरे, गुरु गुण मावे गाय च० २३

गुरु श्री हीर परिवाररे, ऊना नगरे आम

सोलसे बावन सालमांरे, गुरु स्वर्ग सीधाय   च० २४

ओगणी नेवु सालमांरे, फलोधी करि चोमास

धरि मोहनना प्रतापथीरे, मागे माणेक शिववास च० २५

श्री मेघकुमारनी सज्झाय

(राग—हवे सुबाहु कुमार एम विनवे)

हवे मेघकुमार एम विनवे, तुमे सांमलजो एक वात
माडी मोरीरे

मा में देशना सुणी प्रभु तणी, हवे छोडीस हुं संसार
माडी मोरीरे, अनुमति आपो मारि मातजी १

हांरे आया श्रेणिक तस नरस्वरू, रुडी राजग्रही नां
शिरताज आया मोरार

मणि हीरा माणेक अति घणां, ए सहु बाहर काज
जाया मोरार, मत लयो अति दोहलो २

हांरे माजी नरक निगोदमां दुख सह्यां, कहेतां न आवे
पार माडी मोरारे

जन्म मरण दुख टालवा, अमे लेइशु संयमभार माडी
अनु० ३

हांरे जाया आहार करवो काचलीये, सुवुं भांय संथार
जाया मोरारे

पाय अणवाणे चालवुं, तुं छे अति सुकुमार जा० व्रत० ४

हांरे माडी बत्रीश नारीओ परिहरि, शालीभद्रं व्रत काज
माडी मोरीरे

शिवकुमारे पांचसो तजी, कीधां आतम काज मा० अ० ५

हांरे माजी सुबाहु कुमारे तजी, परिहरि पांचशे नार मा०
राज्य ऋद्धि दुरे तजी, सुख पाम्या अपार मा० अ० ६

हांरे जाया आठ नारीयो ताहरी, रुपे छे रंभा समान जा०
छोडी न जाये जोबन वये, तारा नित करे गुणगान
जाया० व्रत० ७

हांरे दुर्गतिनि ए दीवडी, ए छे नरकनी खाण माडी०
नागणथी पण दुखकरि, जाणी सुणी जिनवाण मा०
अनु० ८

हांरे जाया शीयाले शीत अति गणी, उनाले वा वाय जा०

परशालो लागे दोहलो, परस घडीये न जाय
आया० प्रत० ९

हरि भाजी नरभव उत्तम पामीने, सुणी जिनवर वाण
माडी मोरीरे

अथिर संसार में जाणीयो, जाणीयो दुखनी खाण
मा० अनु० १०

हरि जाया अंतराय हवे नहीं करु, तुमे लेज्यो संयम सार
जाया०

ओच्छव कर्यों अति भलो, लीधु संयम वीर प्रभु पास
जाया० मा० सुखेथी संयम पालज्यो ११

हरि जाया आगधी संयम सुखकरु, सहीया परिसह घोर
जाया०

अनुत्तर विमाने उपना नही दुखनो जिहा जोर
जाया० सुखे० १२

हरि जाया महाविदहे नरभव लेइ, लेइ संयमभार
जाया०

पंचम ज्ञानने पामीने जासी मुक्ति मझार
। जा मु० १३

हांरे जाया ओगणीश बाणु सालमां, तीर्थ तलाजा मझार
जाया०
साचादेव सुपसायथी, रची जेठ मासे सुखकार
। जाया० सुखे० १४
हांरे जाया मोहनसूरिजीना पटधरु, नामे प्रताप सूरीश
जाया०
तस शिष्य माणेक विजये, गाया गुण जगीश
। जाया० सुखे० १५

कर्म राजानी सज्झाय

कर्म करे सो होइ, जगतमां कर्म करे सो होई
हृदये विचारि जोइ, जगतमां कर्म करे सो होइ ।
देवेंद्रने तीर्थंकर आदि, कर्मथी सुख दुख पाम्या
बांध्यां कर्म विना भोगवियां, रहे सदा ते जाम्या ।ज० १
साठ हजार पुत्र सगरना, विणसतां लागी न वार
चक्री सगरने सोले रोगे, कीधो अति खुवार । ज० २
सुभुम चक्री सायर पडियो, ब्रह्मदत्त अंधो होइ
लक्ष्मण रावण मारीयोरे, कर्म विना न होइ । ज० ३
छपन्न क्रोड़ जादवनो राणो, कृष्ण जल विना मुवो

पांचे पांडवे द्रौपदी हारी, बार बरस दुख छुनो । ज० ४
वेचाया पामी राणी सुतारा, कुमार नाग डसाया
भरी पण घर पाणी लाव्या, जुवो हरिश्चन्द्र राया । ज० ५
पुराणा पांजर भणीक राजा, मदनमाला वेचाणी
धरमी नर पण कर्मथी पावे, सुख दुख ल्यो आणी । ज० ६
सूर्य चन्द्र दाष छे प्रतापी, रात दिवस रहे फरता
नलराजा पण जुगटे हार्या, बार बरस रह्या फरता । ज० ७
सुदर्शन शूलीये चडाव्या, सिंहासन थयु आणो
राय खभाते पाय पडीने, ते करमथी जाणो । ज० ८
चौद पुरवन धारण करता जीव निगोदे पडीया
आद्र कुमारन नर्मापणने कम पुरवनो नडीया । ज० ९
कम न छाडे काइन प्राणी, रंक होय के राया
एम जाणी कम मत बांधो एम कहे जिनराया । ज० १०
मुक्तिकमलने व्याय प्राणी कम रहित थई जाय
माणेकविजय कम हणावी अजर अमर पद पाय । ज० ११

गजसुकुमुनिनी सज्झाय

(मेतारज मुनिनी ढाली)

मुनि साधु मन मारजी, देवकी कहे मुनिराय

त्रणवारे आव्या तुमेजी, लेवा शुद्ध आहार ।
मुनिवर धन दिवस मुझ आज १
मुनि कहे सुण देवकीजी, छ छीये अमे भाइ
त्रण जोडीये निसर्याजी, शुद्ध आहार मन लाइ । मु० २
सरखी वय सरखी कलाजी, सरखा संप शरीर
देखी तु भूली पड़ीजी, ते जाणो तुम धीर । मु० ३
पूछे स्नेहथी देवकीजी, कोण गामे तुम वास
कोण माता तुम तणीजी, कोण पिता तुम खास । मु० ४
भदीलपुर पिता वसेजी, गाहावइ सुलसा मात
नेम प्रभुनी सुणी देशनाजी, हुओ वैराग्य विख्यात । मु० ५
बत्रीश क्रोड सोवन मुकीजी, मुकी बत्रीश नार
एक दिने संयम लियोजी, जाणी असार संसार । मु० ६
कर्म कठिन ने बालवाजी, छठ तप कीधो उदार
ते तपना अमे पारणेजी, आव्या नगर मझार । मु० ७
नाना मोटा घेर जइजी, तुम घेर आव्या जाण
कही प्रभु पासे गयाजी, गुरु आणा प्रमाण । मु० ८
सुणी वचन साधु तणांजी, देवकी करे विचार
बालपणे निमीत्तीये जी, कह्यु पोलास मझार । मु० ९

पांचे पांडवे द्रौपदी हारी, बार वरस दुख सुखो । ज० ४
वेचाण पामी राणी सुतारा, कुमार नाग डसाया
भरी सण घर पाणी लाव्या, सुखो हरिश्चन्द्र राया । ज० ५
पुराणा पांजर भणीक राखा, मदनपाळा वेषाणी
धरमी नर पण कर्मथी पावे, सुख दुख स्यो जाणी । ज० ६
सूर्य चन्द्र दाय छे प्रतापी, रात दिवस रहे फरता
नळराजा पण जुगट हार्या, बार वरस रह्या फरता । ज० ७
मदयनन शूलीये चढाव्या, सिंहासन प्रभु जाणो
राय सभाने पाप पहीने, ते करमथी जाणो । ज० ८
चौद पुरवने धारण करता, जीव निगोद पडीया
आद्र कुमारने नदीपेणने कर्म पुरवनां नडीया । ज० ९
कर्म न छोडे काइन प्राणी, रंक हाय क राया
एम जाणी कर्म मत बांधो, एम कहे जिनराया । ज० १०
मुक्तिकमलन ध्याव प्राणी, कर्म रहित थई जाय
माणेकविजय कर्म हटावी अजर अमर पद पाय । ज०११

षड्मुनिनी सज्झाय

(मेतारज मुनिनी —देशी

मुनि मोक्ष मन माहरूमी, देवकी कहे मुनिराय

तपगच्छ गगने दीपताजी, सुर्य सम सूरि राय
मोहन प्रतापनो जाणीयेजी, माणेक प्रणमे पाय। मु० १६

रात्री भोजननी सज्झाय

(राग—कहे जो चतुर नर ए कोण नारी)

सांभलजो तुमे मधुरी वाणी, वीर जिनेश्वर केरीरी
नरभव रुडो पुण्ये पामी, धर्म करो सुख कामीरे। सां०१
जीवदया पुन्यवंता पालो, आरंभ दुर निवारीरे
व्रत पचखाण धरो बहु प्रीते, रात्रि भोजन निवारीरे। सां०२
रात्री भोजनमां पाप घणेरु, ए जिनवरनी वाणीरे
दुर्गतिनु दातार ए जाणी, दूरे तजो भवि प्राणीरे। सां०३
घुवड वींछीने मांजर केरा, कागादिना भव पावेरे
परमाधामीनी नरके पीडा, जीव अतुल ते पावेरे। सां०४
मांसनो दोष रात्रि भोजनमां, पाणीये रुधिर जाणोरे
मारतंड रुषी एणी परे बोले, ते जिनवाणी प्रमाणोरे। सां०५
हंस वणिक घणु दुख पायो, ए व्रत लेइ विराधीरे
केशव तेहना नाना भाईये, पाली राज्य ऋद्धि लीधीरे। सां०६
शरीरे छिद्र घणा ते पडीयां, दुर्गंध थइ अपाररे
नरक सम वेदना उपनी, कोइ करे नही साररे। सां०७

पुत्र प्रमाची आठनांजी, तुमे होधोरे मास
जा मीजी जन्म दीये जी, तों पुठी मुस घात । मु० १०
नेमी जिन सम्रय टालशेजी, जइ पूछु मन भाय
रथमां येमी दवकीजी, जइ पाया जिनराय । मु० ११
नेमी कहे सुणो ववकीजी, पुत्र तणो अधिकार
मुनिवर दखी तुमनेजी, स्नेह हुआ अपार । मु० १२
सुत छ ये छ ताहराजी, उदर घर्या नव मास
हरीणगमेषी दवताजी, जन्मतां ह्या तुस पास । मु० १३
मक्या सुलमानी कनजी मुलमा हर्ष अपार
पुन्य प्रभावे पामीयाजी घन नारी अपार । मु० १४
सुणी वाणी प्रमु तणीजी, जइ पाया मुनिराय
गुण गाये पुत्रा तणांजी दवकी विसा थाय । मु० १५
कृष्ण रुष आराधीयाजी दवकीन सुम्न हत
गजसुकुमाल खलावीयाजी त पण मयम लेत । मु० १६
कम खपावा पामीयाजी छ मुनि कवल नाण
गजसुकुमाल लघाजी सुम्य मुक्तिनां जाण । मु० १७
आगणा नवु माल्मांजी करि फलोघी चोमास
मादरवा वदी मातमजा मुनि गुण गाया खास । मु० १८

तपगच्छ गगने दीपताजी, सुर्य सम सूरि राय
मोहन प्रतापनो जाणीयेजी, माणेक प्रणमे पाय । मु० १६

रात्री भोजननी सज्झाय

(राग—कहे जो चतुर नर ए कोण नारी)

सांभलजो तुमे मधुरी वाणी, वीर जिनेश्वर केरीरी
नरभव रुडो पुण्ये पामी, धर्म करो सुख कामीरे । सां० १
जीवदया पुन्यवंता पालो, आरंभ दुर निवारीरे
व्रत पचखाण धरो बहु प्रीते, रात्रि भोजन निवारीरे । सां० २
रात्री भोजनमां पाप घणेरु, ए जिनवरनी वाणीरे
दुर्गतिनु दातार ए जाणी, दूरे तजो भवि प्राणीरे । सां० ३
घुवड वींछीने मांजर केरा, कागादिना भव पावेरे
परमाधामीनी नरके पीडा, जीव अतुल ते पावेरे । सां० ४
मांसनो दोष रात्रि भोजनमां, पाणीये रुधिर जाणोरे
मारतंड रुषी एणी परे बोले, ते जिनवाणी प्रमाणोरे । सां० ५
हंस वणिक घणु दुख पायो, ए व्रत लेइ विराधीरे
केशव तेहना नाना भाईये, पाली राज्य ऋद्धि लीधीरे । सां० ६
शरीरे छिद्र घणां ते पडीयां, दुर्गंध थइ अपाररे
नरक सम वेदना उपनी, कोइ करे नही साररे । सां० ७

इमना रोगने दुर निवार्यो, व्रत तमे पसायेर
मात पिता राजादिक जीवो, पाली सुरपद पायेरे। सां०८
मुक्तिकमलने लेशो प्राणी, मोहन ए व्रत पालीरे
सूरि प्रतापे माणक पावे, शिवप्रभु छटकालीरे॥ सां०९

श्री पुर्युषण पर्वनी गहुली

(राग—वीरे समकीत दीपक मेल्यो)

वीरे पर्व पजुसण आवीयां,
" कीजे धर्मना काजरे, गुणवता प्राणी,
वीरे पर्व पजुसण आवियां,
" आरम सवि टालीये,
" दीजिये अभय दानर। गु० पर्व।
" मासमां भाद्रवा मलो,
" आठ दिवस सुखकाररे। गु० पर्व।
" दलसून खांडयु नही,
" नायु धायु त्यागरे। गु पर्व।
" जिन पूजाने पासह पली,
" गुरु वदनने दानरे। गु० पर्व।
" सायापा करी फल मूकीने,

" पछी सुणीये जिनवाणरे। गु० पर्व।
" नव वाचना कल्पसूत्रनी,
" सांभलजो धरि बहु मानरे। गु० पर्व।
" अमारी पडह वगडावजो,
" धरजो धरमनु ध्यानरे। गु० पर्व।
" मोहनसूरि गुरुराजनो,
" माणेक विजय सुखकाररे, गु० पर्व।

२

(पुखल वड विजये जयोरे)

पर्व पजुसण आवीयांरे, पर्व मांहे शिरदार
अमारी घोपणा करावीयेरे, आठ दिवस सुखकार
भविकजन जिनवाणी सुखकार। भवि०
आरंभ सवि छोड़ीयेरे, करिये वृत पचखाण
भावे गुरुने वंदीयेरे, सुणीये जिनवर वाण। भवि०
सोहागण सवि मलीरे, गावे मंगल गीत
पारणां स्वामी भाइनांरे, कीजिये मन प्रीत। भवि०
सत्तरभेदी पूजा करोरे, करो धरमनां काम
प्रभु पूजो भला भाव शुंरे, पामो मुक्तिनु धाम। भवि०

कल्पसूत्रनी वाचनारे, सुणे एकवीस वार

सवि सामग्री साधतु रे, तो पामे भवपार । भवि०

दान दया पूजा भलीरे सामायिक पौषध

करीये ने करावीयेरे, श्रावक सुखी समृद्ध । भवि०

मुक्तिकमल आशा भणीरे, मोहन कीजे भाव

माणकविजयने स्वरूप, एहीज मुक्तिनु भाव ॥ भवि०

६

(राग—साहेबजी)

कल्पसूत्रनी देशना साहेबजी, सुणता हरख अपार रे

भवि सुणो, जिनवर देशना साहेबजी

गुणमां विनय गुण छे सा० दानमां अभयदान रे । भवि०

गिरिवरमां सुरगिरि, सा० तीर्थमां विमलगिरींद रे । भ०

मंत्र माहे नवकार छे सा मंत्रमां कल्पज हाय रे । भ०

नवमा पूर्वथी उधयु सा० भद्रबाहुय सार रे । भ०

वीर निर्वाणथी जाणाय सा नवमा शत मास । भ०

ध्रुवसेन नृप शोक कारण सा कल्पमांपर मझार । भ०

नृप अग्गमना काजाय सा पर पजुसण मांय रे । भ०

ए तपना महिमा घणा सा कनो नाव पार रे । । भ

अचल शक्र सिंहासन, सा० चलीयु ं तपने प्रभाव रे । भ०
रायनी पीडा संहरी सा० कीधी संघनी सार रे । भ०
अठम तप नागकेतुये, सा० कीधो बालपणा मांय रे । भ०
राज्य लही नगरी तणु, सा० अनुक्रमे पंचमज्ञान रे । भ०
मुक्तिमदिरमां जइ वस्या, सा०पामिया सुख अपार रे । भ०
मोहनसूरि गुरुराजनी, सा० पाटे प्रताप सूरी होय रे । भ०
तेहनो बालुडो विनवे, माणेक प्रणमी पाय रे । भ०

४

(मालण गुंथी लाव गुणीयल गजरो)

जंबुद्वीप दक्षिण भरतमा, माहणकु ंड नाम नगरमां
हांरे आषाढ शुद छट्ठे आव्या, भविजन सुणजो एक चित्ते
सुरलोकथी रुषभदत्त गेहे, देवानदा ब्राह्मणी देहे ।
हांरे अवतरीया गुण गेह । भवि०
चौद सुपन देखे मनोहार, प्रभु आव्या गर्भ मझार ।
हांरे देवानंदा, हरख अपार भवि०
पियु आगल सुपननी वात, कहे देवानदा सुप्रभात ।
हांरे पुत्र होशे कुल विख्यात । भवि०
ब्राह्मण घेर आव्या जाणी, स्तवे शक्र भावना आणी ।

कल्पसूत्रनी वाचनारे, सुणे एकवीस वार
सवि सामग्री सापडु रे, तो पामे भवपार । भवि०
दान दया पूजा वलीरे सामायिक पौषध
करीये ने करावीयेरे, श्रावक सुखी समृद्ध । भवि०
मुक्तिकमल आवा मणीरे, मोहन कीजे भाव
माणकविजयने खरुं, एहीज मुक्तिनु भाव ॥ भवि०

३

(राग—साहेबजी)

कल्पसूत्रनी देशना साहेबजी, सुणता हरख अपार रे
भवि सुणा, जिनवर देशना साहेबजी
गुणमां विनय गुण छे, सा० दानमां अभयदान रे । भवि०
गिरिवरमां सुरगिरि, सा० तीर्थमां विमलगिरिंद रे । भ०
मंत्र मांहे नवकार छे सा० सूत्रमां कल्पज होय रे । भ०
नवमा पूर्वथी उधर्यु सा० भद्रबाहुए सार रे । भ०
वीर निर्वाणथी जाणाय सा० नवसो अंशी साल । भ०
ध्रुवसेन नृप नाके भाग्य सा० वलभीपुर मझार । भ०
नृप अर्थमनां काजाय सा० पर्व पजुसण मांय रे । भ०
ए तपना महिमा घणा सा कहेतां नावे पार रे ।। भ०

अचल शक्र सिहासन, सा० चलीयुं तपने प्रभाव रे । भ०
रायनी पीडा संहरी सा० कीधी संघनी सार रे । भ०
अठम तप नागकेतुये, सा० कीधो बालपणा मांय रे । भ०
राज्य लही नगरी तणु, सा० अनुक्रमे पंचमज्ञान रे । भ०
मुक्ति मंदिरमां जइ वस्या, सा० पामिया सुख अपार रे । भ०
मोहनसूरि गुरुराजनी, सा० पाटे प्रताप सूरी होय रे । भ०
तेहनो बालुडो विनवे, माणेक प्रणमी पाय रे । भ०

४

(मालण गुंथी लाव गुणीयल गजरो)

जंबुद्वीप दक्षिण भरतमां, माहणकुंड नाम नगरमां
हांरे आषाढ शुद छठ्ठे आव्या, भविजन सुणजो एक चित्त
सुरलोकथी रुपभदत्त गेहे, देवानंदा ब्राह्मणी देहे ।
हांरे अवतरीया गुण गेह । भवि०
चौद सुपन देखे मनोहार, प्रभु आव्या गर्भ मझार ।
हांरे देवानंदा, हरख अपार भवि०
पियु आगल सुपननी वात, कहे देवानंदा सुप्रभात ।
हांरे पुत्र होशे कुल विख्यात । भवि०
ब्राह्मण घेर आव्या जाणी, स्तवे शक्र भावना आणी ।

हरि धर्मशास्त्रथी उत्तम जाणी   भवि०
श्रेणिक सुत मेघकुमार, प्रभु देशना सुणी सार ।
हारे लीधु संयम सुख भंडार ।   भवि०
पूरव भव मेघने जणावी, हाथी भवे दया जे भावि ।
हारे स्थिर कीधा दुख हरावी ।   भवि०
तेम मुजने प्रभुजी तारो, कहे माणेक दास तुमारो ।
हारे मारा आवागमन निवारो ।   भवि०

५

(राग-भरतनी पाटे भूपति रे)

इन्द्र इव मन चींतवेर, ए अणधार्यु होय ।   मलुणा
जिन प्रभु पलटावजीर नीच कुल न होय ।   मलुणा
काया कर्म छेद नहीं र त्रिण भागवीयां गेह ।   मलुणा
मरिचा भव नार गोत्रथीर आव्या ब्राह्मण गेह । म० की०
नीर [illegible] मुकाव्या उत्तम कुल ।   म०
ए आधार मुज [illegible] भाव गेह अमल ।   म० की०
[illegible] ।   म०
[illegible] ।   म० की०
[illegible] ।   म०

मुको जइ श्री वीरनेरे. ए आणा सनुर । स० की०

जे रयणी प्रभु संहर्यारे, क्षत्रिय कुल मझार । स०

सुपन चर्तुदश मोटकारे, जोवे त्रिशला मनोहार । स० की०

बीजे वखाणे सांभलोरे, चार सुपन अधिकार । स०

सूरि मोहन पद सेवतारे, माणेकविजय जयकार । स० की०

६

(राग-आछे लाल)

त्रिशला राणी जेह, सुदर स्वपनां एह

आछे लाल, पांचथी चौदे जोवतांजी ।

सिद्धारथ राय कुल, धन धान्ये भरपुर

आछे लाल, राय राणा सेवा करेजी ।

रयण सोवनने फूल, जेनु न थाये मूल

आछे लाल, कुबेर वृष्टि तिहां करेजी ।

होस्ये पुत्र रतन, करशु तेहना जतन

आछे लाल, वर्द्धमान नाम थापशुजी ।

अंग चालनथी जोय माताने दुख होय

आछे लाल, ए जाणी स्थिर रह्याजी ।

माताने दुख अपार, वरत्यो हाहाकार

जेनी वृद्धि थइ अति घणी, तेथी गुण निष्पन्न नाम । प्र०
नाम रुडु वर्धमान थापीयुं, क्रीडा करे मित्रोनी साथ । प्र०
आंबली क्रीडा करता हता, तिहां मिथ्यात्वी देव । प्र०
सर्प रुपे देवने जालीने, दूर फेंक्यो प्रभुये ताम । प्र०
हस्ति स्कंध उपर प्रभु निसरी, जावे निशाले भणवा काज। प्रभु०
इन्द्र ब्राह्मणनु रुप लेइने, तिहां आव्यो ते ततकाल । प्र०
बेसाड़ी पंडितना आसने, प्रभुने पुछया संदेह, प्र०
टाल्या संदेह पंडित तणा, पंडित करे गुणगान । प्र०
योवन वय प्रभु पामीया, नारि यसोदा परण्या ताम । प्र०
लोकांतिक देवनी विनती, तीर्थ प्रवर्तावो नाथ । प्र०
वार्षिक दान देइ प्रभु निसर्या, वरघोड़े संयमने काज ।प्र०
नरनारी टोले मली हरखतां, जोवे श्री वर्द्धमान कुमार। प्र०
संयम लेइ प्रभु पामीया, चोथु मनःपर्यव ज्ञान । प्र०
सूरि मोहन प्रतापथी ए कह्यो, माणकविजये अधिकार। प्र०

८

(राग-पीतल लोटा जले भर्या रे)

देश विदेश प्रभु विचरेरे, कर्म कटक करवा दूररे साहेली ।
उपसर्ग जीतिने पामीयारे, केवलज्ञान मनोहाररे । साहेली
वीर वंदने चालीयेरे ।

देवेंद्रना हुकमथीरे, केवलज्ञानने स्थानरे, सा
समोवसरण दवे रच्युरे, सुरनर मल्या तिणे ठामरे । वीर०
देखो उतरता आकाशथीरे, जोवे इन्द्रभूति तामरे सा
मारा प्रभावे दवतारे, यज्ञमां आवे सामरे । वीर०
समोवसरण जाता जोइनेरे, चिंता करे मन मांहीरे सा
वांदीने आवता लोकनेरे, पूछे इन्द्रभूति त्यांहीरे । वीर०
कोनी पासे जइ आवियारे, ते कहो मुजने आमरे सा
सर्वज्ञ देवने वांदीनेरे, कीधो आतम कामरे । वीर०
सर्वज्ञ जाणी कोपीयोरे, मुज बेठे बीजो कोणरे सा
वादिया वाद जीतियारे, मुजथी जावे दुरमाणरे । वीर०
मुज शिष्यो पण आइनेरे, आय जीतिने तहरे सा
तापण सिहां जाइनेरे, सर्वज्ञ जोवुं एहरे । वीर०
पांच सात शिष्ये आवीयारे, दखी प्रभुने तेहरे सा
प्रभा फ महाव्वजीर विष्णु मम नही केहरे । वीर०
नमा आदि फाइ छ नहीं र, ए छ सिद्धारथ नद रे सा
अतिम तीर्थपनिज छ र वीर नाल मव फद रे । वीर०
मुक्ति कमळन पामशा र माइन प्रभु गुण गान रे, सा
माणक विनय गावना र प्रभु माणानु करी पान रे । वीर०

६

(राग—काली कमलीवाले तुमको लाखो प्रणाम)

समोवसरणमां वीर, प्रभुजी, करे बखाण ।

वीर प्रभु तिहां संशय जाणी, इन्द्रभूति नाम लीधु जाणी।
प्रतिबोधवा तिणे ठाम । प्रभुजी०

संशय टाल्यो गोयम केरो, जेथी न थाये भवनो फेरो ।
शुद्ध मारग सुखकार । प्रभुजी०

वीर चरणोमां शीश नमावी, संयम लीधु मान हटावी ।
थया प्रथम गणधार । प्रभुजी०

इन्द्रभूतिनु संयम देखी, आव्या वादे प्रभुने देखी ।
लीधु संयम सार । प्रभुजी०

एकादश गण प्रभुना, चौद हजार मुनि विभुना ।
साध्वी छत्रीस हजार । प्रभुजी०

एक लाखने उपर जाणो, ओगणसाठ श्रावको प्रमाणो ।
जे समकिती धार । प्रभुजी०

त्रण लाखने अढार हजार, सोहे श्राविका प्रभुनी सार ।
प्रभुजीनो परिवार । प्रभुजी०

पावापुरीमां प्रभुजी आवी, देवशर्मा प्रतिबोधने लावी ।
कर्या गोयमने दूर । प्रभुजी०

देवेंद्रना हुकमथीरे, केवलज्ञानने स्थानरे, सा

समोवसरण देवे रच्युरे, सुरनर मल्या तिणे ठामरे। वीर०

देखो उतरता आकाशथीरे, जोवे इन्द्रभूति तामरे सा

मारा प्रभावे देवतारे, यज्ञमां आवे गामरे । वीर०

समोवसरण जाता जोइनेरे, चिंता करे मन मांहीरे सा

वांदीने आवता लोकनेरे, पूछे इन्द्रभूति त्यांहीरे । वीर०

कोना पासे जइ आवियारे, ते कहो मुजने आजरे सा

सर्वज्ञ देवने वांदीनेरे, कीधा आतम काजरे । वीर०

सर्वज्ञ आपणी कापीयारे, मुज बेठे वीजो कोणरे सा

वादीका वाद कीतिकारे, हुवजो काले पुरकाजरे । वीर०

मुज शिष्या पण जाइनेरे, आवे कीर्तिने तहरे सा

तोपण तिहां जाइनेरे, सर्वज्ञ जोवु एहरे । वीर०

पांच सम शिष्य आवीयारे देखी प्रभुने तेहरे सा

प्रभुत्व क महात्मजीरे विष्णु सम नही वहरे । वीर०

ब्रह्मा आदि कोइ छ नहीरे, ए छ सिद्धारथनंद रे सा

अंतिम तीर्थनिज्ञ छ रे वीर नस्ले भव फन्द रे। वीर०

मुनि कमल न पामशो रे मोहन प्रभु गुण गान रे, सा

मोणक विनय गावना रे प्रभु वाणीनुं करी पान रे। वीर०

६

(राग—काली कमलीवाले तुमको लाखो प्रणाम)

समोवसरणमां वीर, प्रभुजी, करे वखाण।

वीर प्रभु तिहां संशय जाणी, इन्द्रभूति नाम लीधु जाणी।
प्रतिबोधवा तिणे ठाम। प्रभुजी०

संशय टाल्यो गोयम केरो, जेथी न थाये भवनो फेरो।
शुद्ध मारग सुखकार। प्रभुजी०

वीर चरणोमां शीश नमावी, संयम लीधु मान हटावी।
थया प्रथम गणधार। प्रभुजी०

इन्द्रभूतिनु संयम देखी, आव्या वादे प्रभुने देखी।
लीधु संयम सार। प्रभुजी०

एकादश गण प्रभुना, चौद हजार मुनि विभुना।
साध्वी छत्रीस हजार। प्रभुजी०

एक लाखने उपर जाणो, ओगणसाठ श्रावको प्रमाणो।
जे समकिती धार। प्रभुजी०

त्रण लाखने अढार हजार, सोहे श्राविका प्रभुनी सार।
प्रभुजीनो परिवार। प्रभुजी०

पावापुरीमां प्रभुजी आवी, देवशर्मा प्रतिबोधने लावी।
कर्या गोयमने दूर। प्रभुजी०

अमावस्या कारतिक मास केरी, देशना देइ अति भलेरी।
पाम्या शिवपद सार। प्रभुजी०
देवेन्द्र करे सिहां दिवाली, राग गोयमे लीधो वाली।
पाम्या केवल सार। प्रभुजी०
कर्म खपावी शिवपद लीधु, माणेकविजयनु कारज सीधु।
पामे भवजल पार॥ प्रभुजी०॥

१०

(राग—भविजन धोगधा शहेरनी मांयके)

वेनी पालोने खाय मेलांके, व्याख्यान सुणवारे लोल
,, काशी देशनो राधोके, अश्वसेन छे रे ,,
,, वामादेवीना नदके, पास कुमर भलारे ,,
, नाग उगार्यो एकके, दया दिल लावीनेरे ,,
,, कमठने प्रतिबोध्योके, धर्म बतावीनेरे ,,
,, नवकार मंत्र सुणावीके, धरणेन्द्र कर्योरे ,,
,, कमठ थया मरी त्यके, विद्युन्मालीयोरे ,,
, पार्श्वकुमार शुभके, मयम आदर्योरे ,,
परिसह मह्या अनकके कमठादिकनारे ,,
कर्म खपावी पाम्याके, केवल ज्ञान पदरे ,,

बेनी प्रतिबोधी भवि जीवके, शिवपद पामीयारे लोल
,, माणेक विजय एहके, शिवपद चाहतोरे ,,

११

(वाडीना भमरा द्राख मीठीरे सोरठ देशनी)

जीरे शौरिपुरे सोहे भलो, जीरे राय समुद्रविजयरे
गुणवंती बेनी, चालोने जइये उतावली ।
जीरे शिवादेवीना नंदला, जीरे होवे नेम कुमाररे गुण०
,, आयुधशाले बतावीयु, जीरे कृष्णने निज बलरे गुण०
,, कुमारपणे गृहे रह्या, जीरे लीधो संयम भाररे गुण०
,, कर्म खपावी केवल वर्या, जीरे तारी राजुल नाररे गुण०
,, आंतरा बावीश जिनतणा, जीरे सुणता हर्ष न मायरे गुण०
,, इक्ष्वाकु कुल चंद्रमा, जीरे मरुदेवानो नंदरे गुण०
,, शस्त्रकलाने शास्त्रकला, जीरे बताव्यु नीतिने व्यवहाररे गुण०
,, आदिरायने आदिमुनिवरु, जीरे आदि जिनवर एहरे गुण०
,, संयम आपीने तारीया, जीरे पुत्र पौत्रादि परिवाररे गुण०
,, केवल पामी दीधु मायने, जीरे जइ रह्या मुक्ति आवासरे गुण०
,, स्थवीरावलीने समाचारि, जीरे सुणीये धरि बहुमानरे गुण०
,, स्थूलिभद्रने वज्रस्वामीना, जीरे एह सुणो अधिकाररे गुण०

अमावस्या कारतिक मास करी, देशना देइ अति

पाम्या शिवपद

देवेन्द्र करे तिहां दिवाली, राग गोयमे

पाम्या केवल

कर्म खपावी शिवपद लीधु, माणेकविजयनु

पामे भवजल पार

१०

(राग—भविजन धोगन्मा शहेरनी मा

सेनी पालोने स्वरूप खेलाके, व्याख्यान

,, काशी देशनो रायोके, अश्वसेन छ

,, वामादेवीना नन्दके, पास कुमर भ

,, नाग ठगार्यो एकके, दया दिल ल

,, कमठने प्रतिबोध्याके, धर्म बतावे

,, नवकार मन्त्र सुणावीके, धरणेन्द्र

,, कमठ थयो मरि देवके, विद्युन्मा

,, पार्श्वकुमारे शुद्धके, संयम आदय

,, परिसह सह्या अनेकके, कमठा

कर्म खपावी पाम्याके, केवल

मात पिता सम कोण हवेजी, करशे अम संभाल
व्यसनथी कोण निवारशेजी, कोण छुडावे जंजाल मो० ९

जीवाजीव पुन्य पापनेजी, आश्रवने वली बंध
संवरने निर्जरा वलीजी, वली मोक्ष छे तत्व मो० १०

हेय ने छाड़ावताजी, उपादेय ओलखाय
ज्ञेय ने अंगी करवुजी, कोण देशे बताय मो० ११

विहार विहार शुं करोजी, पाछा वलो गुरुराज
भव सागरमां वुडातांजी, खरा तुमे जहाज मो० १२

शुन्य पड्यो उपासरोजी, जोइ दुखज थाय
पाछा वली थोडु रहोजी, दिल दया जरी लाय मो० १३

गुरु कहे तुम सांभलोजी, ए साधुनो आचार
चोमासुं पुरु थयेजी, जावुं बीजे सार
श्रावकजी जैन धर्म सुखकार । १४

वहेतु पाणी निर्मलुजी, वांध्यु गंदुरे होय
विचरे ते साधु भलाजी, डाघ न लागे कोय श्रा० १५

छती शक्ति ये नवी रहेजी, एक ठामे मुनिराय
रहेतां संयम नचि रहेजी, ए जिनवाणी जोय श्रा० १६

जीरे मुक्तिकमलने ध्यावजो, जीरे मोहन करी ध्यानरे गुण॰
,, धर्म प्रतापे पामशो, जीरे माणेक कहे एहरे ॥ गुण॰

गुरु महाराज नगरमां पधारे ते वखतनी गहुंली

जीरे उत्सव रंग वधामणां,
जीरे पधार्यां सद्‌गुरुराज, गुरुने वधावीय ।
जीरे पुन्य उदय थयो माहरो,
जीरे पधार्यो सद्‌गुरु राय । गुरु॰
जीरे शांत दांत महंत छे,
जीरे ज्ञानी गुरु गुरु गुणवंत । गुरु॰
जीरे पंच महाव्रत पालता,
जीरे पालता पांच आचार । गुरु॰
जीरे छकाय रक्षा नित करे,
जीरे जीव दया प्रतिपाल । गुरु॰
जीरे प्राण जतां पण नवि करे,
जीरे रात्रि भोजन सेव । गुरु॰
जीरे मात पिता परिवारने,
जीरे छोड्या संयम काज । गुरु॰

जीरे सद्गुरु शीख भली परे,
जीरे शिर धरे गुरु राय । गुरु०
जीरे गुरु सेवाथी ज्ञानी थइ,
जीरे विचरे देश विदेश । गुरु०
जीरे उपदेश देई प्रतिबोधतारे,
जीरे देता धरमनु दान । गुरु०
जीरे समकित सुद्धज आपीने,
जीरे करावे दूर मिथ्यात्व । गुरु०
जीरे पुन्य उदय थयो संघनो,
जीरे पधार्या ज्ञानी गुरुराज । गुरु०
जीरे आलस प्रमाद दूरे करी,
जीरे सांभलो जिनवरवाण । गुरु०
जीरे सांभली धर्मने आ धरो,
जीरे नित करो व्रत पचखाण । गुरु०
जीरे मोहन मुक्ति मंदिरे,
जीरे खरो धरम प्रताप । गुरु०
जीरे सूरि प्रताप पसादथी,
जीरे माणेक विजय कहे एह । गुरु०

गुरु महाराज विहार करती वखतनी गहुली

पाय लागीने विनवूँ जी, विनवूँ शीश नमाय
वात विहारनी सांभलीजी, देवे दुखज थाय।
मोरा गुरुजी, मत करो आप विहार। १
दर्शन थातु आपनुजी, भवजल तरवा जहाज
तुम दर्शन विण किम जशेजी, दहाडा कहो गुरुराज। मो० २
वखाण सुणवा दिल घणु जी, तलसी रहे गुरुराज
दोडी दोडी आवताजी व्याख्यान सुणवा काज। मो० ३
वात सुणी विहारनीजी, नयने वछुट्या रे नीर
दिल दया मन आणजोजी, रहो रहो समय धीर। मो०४
उपदेश विना किम फलजी, मुज मन करीरे आस
धर्म कर्म करी सुणीशुजी, गुरु विना फ्ळे स्वास। मो० ५
व्याख्यान कोण सुणावशेजी, कोण देश धर्मलाभ
पच्चखाण करशु क्यां जइजी विना गुरु अन्य आम। मो०६
सम न लिधां पातगोजी अमुलख हवा र हाथ
कर वीर्मान व्वाल्यिाजी लइ घलाने साथ । मो० ७
धीर वचन पाण आपशजी, कोण करश उपगार
भव वनमां आ जीवन जी तुम छो तारणहार। मो० ८

मात पिता सम कोण हवेजी, करशे अम संभाल
व्यसनथी कोण निवारशेजी, कोण छुडावे जंजाल मो० ९
जीवाजीव पुन्य पापनेजी, आश्रवने वली बंध
संवरने निर्जरा वलीजी, वली मोक्ष छे तत्व मो० १०
हेय ने छाड़ावताजी, उपादेय ओलखाय
ज्ञेय ने अंगी करवुजी, कोण देशे बताय मो० ११
विहार विहार शुं करोजी, पाछा वलो गुरुराज
भव सागरमां बुडातांजी, खरा तुमे जहाज मो० १२
शुन्य पड्यो उपासरोजी, जोइ दुखज थाय
पाछा वली थोडु रहोजी, दिल दया जरी लाय मो० १३
गुरु कहे तुम सांभलोजी, ए साधुनो आचार
चोमासुं पुरु थयेजी, जावुं बीजे सार
श्रावकजी जैन धर्म सुखकार । १४
वहेतु पाणी निर्मलुजी, बांध्यु गंदुरे होय
विचरे ते साधु भलाजी, डाघ न लागे कोय श्रा० १५
छती शक्ति ये नवी रहेजी, एक ठामे मुनिराय
रहेतां संयम नवि रहेजी, ए जिनवाणी जोय श्रा० १६

मुक्ति मदिर जवा मणीजी, मोहन करजोरे माथ
माणेक विजय कहे एहवुजी, जैन धर्म छे नाव भा० १७

अत समयनी आराधना

मुजने चार शरणां होजो, अरिहत सिद्ध सुसाधुजी।
केवली धर्म प्रकाशियां, रत्न अमुलख लाध्युंजी। मु० १
चउगति तणां दु ख छेदवा, समरथ सरणां एहोजी।
पूव मुनिवर जे हुआ, नणे शरणां कीधां तहोजी। मु०२
ससार मांह जीवने समरनां शरणां चारोजी।
गणि समयसुंदर एम भणे कल्याण मगलकारोजी। मु०३

लाख चोराशी जीव खमावीये मन धरि परम विवेकोजी
मिच्छामि दुक्कड दीजिये जिनवचन लहिये टेकोजी।
लाख। १
सातलाख भुईग नउ वाउना दस चौद वनना भेदोजी
षट् विगल्मरतिरि नारका चउसउचउद नरना भेदोजी।
लाख। २
मुज रग नरा काइ न मा भा मित्र स्वभावाजा
गणि समयसुन्दर एम कह पामीय पुण्य प्रभावाजी।
लाख। 3

पाप अदार जीव परिहरो, अरिहंत सिद्धनी साखेजी
आलोयां पाप छुटीये, भगवंत एणी परे भाखेजी । पाप० १
आश्रव कषाय दोय बंधवा, वली कलह अभ्याख्यानोजी
रति अरति पैशुन्य निंदना, माया मोह मिथ्यातोजी । पाप ० २
मन वचन कायाये जे कर्यां, मिच्छामि दुक्कड तेहोजी
गणि समय सुन्दर एम कहे, जैन धर्मनो मर्म
एहोजी । पाप० ३

धन्य धन्य ते दिनमुज क्यारे होशे, हुं पामीश संयम शुद्धोजी
पूर्व ऋषि पंथे चालशुं, गुरु वचन प्रतिबुद्धोजी । ध० १
अंत प्रांत भिक्षा गोचरी, रण वन काउसग्ग लहीशुंजी
समता शत्रु मित्रे भावशुं, सम्यक सुद्धो धरशुंजी । ध० २
संसारनां संकट थकी, हुं छुटीश, जिन वचने अवतारोजी
धन्यधन्य समयसुंदर ते घड़ी, तो हु पामीश भवनो
पारोजी ॥ धन्य० ३

श्री शत्रुंजय तीर्थना एकवीस नाम ना। गुणगर्भित
एकवीस खमासमण ना दोहा

१ सिद्धाचल समरूँ सदा, सोरठ देश मझार ।
मनुष्य जन्म पामी करी, वन्दू बार हजार । १ ।

अगवसन मन भूमिका, पूजोपगरण सार।
न्याय द्रव्य विधि शुद्धता, शुद्धि सात प्रकार। २।
कार्तिक सुदि पूनम दिने, दश कोटि परिवार
द्राविड ने वारिखिल्लजी, सिद्ध थया गिरधार। ३।
तिण कारण कार्तिक दिने, दश कोटि परिवार।
आदि जिन सन्मुख रही, खमासमण बहुवार। ४।
एकवीस नामें वर्णव्यो, तिहां पहिलु अभिधान।
शत्रुंजय शुकरायथी, जनक वचन बहुमान। ५।
(अहिंया दरेक सिद्धाचल समरू सदाए दुहो कहेवो
एम दरके खमासमणा देतां कहेवो)
१ समोसर्या सिद्धाचले, पुंडरीक गणधार,
लाख सवा महातम कह्युं, सुरनर सभा मझार। ६।
चैत्री पूनम ने दिन, करी अणसण एक मास,
पांच क्रोड मुनि साथशु, मुक्ति निलय मां वास। ७।
तिण कारण पुंडरीक गिरि, नाम थयुं विख्यात,
मन वच काय वन्दिये उठी नित्य प्रभात। सि० ८।
३ वीश क्रोडशु पांडवा मोक्ष गया इण ठाम,
एम अनंत मुगते गया सिद्धक्षेत्र तिण नाम। सि० ९।

४ अडसठ तीरथ न्हावतां, अंग रंग घडि एक
तुंबी जल स्नाने करी, जाग्यो चित्त विवेक । १० ।
चन्द्रशेखर राजा प्रमुख, कर्म कठिन मलधाम,
अचल पदे विमला थया, तेणे विमलाचल नाम ।
सि० ११ ।

५ पर्वत मां सुरगिरि वडो, जिन अभिषेक कराय,
सिद्ध हुआ स्नातक पदे सुरगिरि नाम धराय । १२ ।
भरतादि चौदे क्षेत्रमां, ए समो तीरथ न एक
तेणे सुरगिरि नामे नमो, जिहां सुरवास अनेक ।
सि० १३ ।

६ अस्सी योजन पृथुल छे, ऊंचपणे छव्वीस,
महिमां ए मोटो गिरि, महागिरि नाम जगीश । सि० १४ ।

७ गणधर गुणवंता मुनि विश्व माहे वंदनीक
जेहवो तेहवो संयमी, विमलाचल पूजनीक । १५ ।
विप्रलोक विषधर समा, दुखिया भूतल मान
द्रव्य लिंग कण क्षेत्र सम, मुनिवर छीप समान । १६ ।
श्रावक मेघ समा कह्या, करता पुन्यनं काम,

पुण्यनी राशि वधे घणी, तेणे पुण्यराशि नाम ।
सि० १७

८ संयमधर मुनिवर घणा, तप तपता एक ध्यान ।
कर्म वियोग पामिया, केवल लक्ष्मी निधान । १८ ।
लाख एकाणु शिव वर्या, नारदशु अणगार ।
नाम नमु तेण आठमु, श्रीपद गिरि निरधार ।
सि० १९ ।

९ श्री सीमधर स्वामीये, ए गिरि महिमा विलास ।
इन्द्रनी आगे वर्णव्या, तेणे ए इन्द्र प्रकाश । सि० २० ।
१० दश कोटि अणुव्रत धरा, भक्त जमाडे सार ।
जैन तीर्थ यात्रा करे, लाभतणो नहि पार । २१ ।
तेह थकी सिद्धाचल, एक मुनिने दान ।
देतां लाभ घणा हुवे महातीर्थ अभिधान । सि० २२ ।
११ प्राय ए गिरि शाश्वता, रहेशे काल अनंत ।
शत्रुंजय महात्म्य सुणी, नमो शाश्वत गिरि संत ।
सि० २३ ।

१२ गौ नारी बालक मुनि, चउहत्या करनार ।
यात्रा करतां कारतकी, न रहे पाप लगार । २४ ।

जे पर दारा लम्पटी, चोरीना करनार ।
देवद्रव्य गुरुद्रव्यना, जे वली चोरन हार । २५ ।
चैत्री कारतकी पूनमे, करे यात्रा इन ठाम ।
तप तपतां पातिक टले, तेणे द्रढ़शक्ति नाम ।
सि० २६ ।

१३ भव भय पामी निकल्या, थावच्चा सुत जेह ।
सहस मुनिशु शिव वर्या, मुक्तिनिलय गिरि तेह ।
सि० २७ ।

१४ चन्दा सूरज वेउ जणा, उभा इण गिरि शृंग ।
वधावियो वरणव करी, पुष्पदंत गिरि रग । सि० २८ ।
१५ कर्म कठिण भवजल तजी, इह पाम्या शिव सद्म ।
प्राणीपद्म निरंजनो, वंदो गिरि महापद्म । सि० २९ ।
१६ शिववहु विवाह उत्सवे, मंडप रचियो सार ।
मुनिवर वर बैठक भणी, पृथ्वी पीठ मनोहार । सि० ३० ।
१७ श्री सुभद्रगिरि नमो, भद्र ते मंगल रूप ।
जल तरु रज गिरवर तणी, शीश चढ़ावे भूप । सि० ३१ ।
१८ विद्याधर सुर अप्सरा, नदी शेत्रुंजी विलास ।
करता

१९ बीजा निरवाणी प्रभु, गई चौवीसी मझार।
 दस गणधर मुनिमां वडा नामे कदंब अणगार ॥ २३।
 प्रभु वचन अणसण करी, मुक्तिपुरी मां वास।
 नाम कदंबगिरि नमो, तो होय लील विलास। सि० २४।
२० पाताले जस मूल छे, उज्वल गिरिनो सार।
 त्रिकरण योग वन्दता, अल्प होये संसार। सि० २५।
२१ तन मन धन सुत वल्लभा, स्वर्गादिक सुख भोग
 जे वछे ते संपजे, शिव रमणी सयोग। २६।
 विमलाचल परमेष्ठिनो, ध्यान धरे षट् मास।
 तेज अपूर्व विस्तरे, पूरे सघली आस। २७।
 त्रीजे भव सिद्धि लहे ए पण प्रायिक वाच।
 उत्कृष्ट परिणाम थी, अन्तर मुहुर्त साच। २८।
 सव काम दायक नमो, नाम करी ओळखाण।
 श्री शुभवारविजय प्रभु, नमता कोडिकल्याण। सि० २९।

श्री विजयकमल सूरीश्वरजी महाराज नी
जयन्ती नु काव्य

सूरिवर हे सुखकार, सूरिवर हे सुखकार; भवियां।
पावन तारण जाणिवर, सिद्धाचल शुभस्थान। भ० सूरि

देवचन्द सेठि तिहां वसेरे, मेघबाई पुत्र कल्याण । भ० सूरि
दुःखनी खाण संसार नेरे, त्यागी थया अणगार । भ० सूरि
मुक्तिविजय गुरु धारियारे मुक्ति मारग दातार । भ० सूरि
कमलविजय नाम जेहनु रे, गणिसूरि पदना धार । भ० सूरि
शान्त स्वभावी जे हतांरे, गुण गुणी ना लेनार । भ० सूरि
मरुधर मालव दक्षिणेरे, गुजरातने सौराष्ट्र । भ० सूरि
विचर्या देश विदेश मांरे, करता भवि उपगार । भ० सूरि
बारडोली चौमासु करेरे, संघमा हर्ष न माय । भ० सूरि
ओगणी चुम्मोतेर आसो मासनीरे, विजया दशमी जाण
भ० सूरि
समाधि थी सुरीश्वरोरे स्वर्गे सिधाव्या जाण । भ० सूरि
गुणी नां गुण गावतांरे गुण प्रकटे मनोहार । भ० सूरि
मोहन प्रतापे पामशेरे, माणेक गुण जगदीश । भ० सूरि

आ० विजयकमल सूरीश्वर स्वर्ग जयंतीनुं गीत

(राग-पितल लोटा जले भर्या रे)

पावन तीरथ जाणिये रे, नामे शत्रुंजय जाण रे
साहेली स्वर्ग जयंति ने उजवोरे
तिहां देवचन्द सेठियो रे, मेघबाई पुत्र कल्याण रे सा० स्व०

दुखनी खाण ससार ने रे, स्वामी लिये सयम भार रे
सा० स्व०

मुक्तिविजय गुरु धारिया रे, कमलविजय जे थाय रे
सा० स्व०

पन्यास गणि पद धारता रे, पछी सूरि पद ना धार रे
सा० स्व०

प्रतिबोधी केई जीवने रे, साचा देई उपदेश रे
सा० स्व०

सूरतादिक नगर ना रे, दूर कर्या घणा कलेश रे
सा० स्व०

बारडोली गाम ना माग्यथीर, छेल्लु चौमासु थायरे
सा० स्व०

ओगणी चुमाघर आसो मासनीर, विजया दशमी जाणरे
सा० स्व०

समाधीया सूरीश्वरार, स्वर्ग सिधाव्या जेहरे
सा० स्व०

गुणीना गुण गावतार, गुण प्रगट भवि आयरे
सा० स्व०

सरि माटनला प्रताप नार माणक गुरु गुण गायरे
सा० स्व०

आत्महित सिखामण पद

तेरो जन्म सफल तूं कर लेरे तेरो जन्म०

सिद्ध स्वरूपी साहेब पामी,
ध्यान प्रभु का धर लेरे तेरो० ,,

चिन्तामणि सम नर भव पायो,
मोह माया कुं तज देरे तेरो० ,,

मिथ्या वासना दूर हटावी,
नरक तिरी गति हर देरे तेरो० ,,

शुद्ध देव गुरु निश दिन ध्यायी,
समकित निर्मल कर लेरे तेरो० ,,

धरम करम कुं करले प्राणी,
तम तिमिर कुं हर लेरे तेरो० ,,

शुद्धातमे जिणंद ने सेवी,
मुक्ति वधू कुं वर लेरे तेरो० ,,

मोहन प्रतापी जिनवर ध्याने,
माणेक शिवपद वर लेरे तेरो० ,,

श्री नेम प्रभुजी नी जान

जादव कुल सोहे भलुं रे, जिहा नेमि जिन अवतार
प्रभुजी तारी जानमां रे

दुखनी साथ ससार ने रे, मापी लिये सयम भार रे
सा० स्व०

मुक्तिविजय गुरु धारिया रे, कमलविजय जे माय र
सा० स्व०

पन्यास गणि पद धारता रे, वली सूरि पद ना धार रे
सा० स्व०

प्रतिबोधी केई जीवने रे, तार्या देई उपदेश रे
सा० स्व०

सूरतादिक नगर ना रे, दूर कर्या घणा क्लेश रे
सा० स्व०

बारडोली गाम ना भाग्यथीरे, छेल्लु चौमासु थायरे
सा० स्व०

ओगणी चुमोत्तर आसो मासनीर, विजया दशमी जाणर
सा० स्व०

समाधीथी सूरीश्वरोर, स्वर्गे सिधाम्या जेहरे
सा० स्व०

गुणीना गुण गावतारे, गुण प्रगटे सवि आयरे
सा० स्व•

सरि मोहनना प्रताप नोरे, माणेक गुरु गुण गायरे
सा० स्व•

भव भ्रमणाने वारवा, आव्यो तुम दरबार
प्रभु तुंहीज तारणहार खरो । प्र० २

दर्शन लेवा आवियो, द्यो दर्शन जिनराज
दर्शन थी दर्शन लही, पामु अविचल राज
पामे दर्शन तरे संसार खरो । प्र० ३

धन्य दिवस माहरो, धन्य घड़ी सुखकार
जे दिने प्रभु भेटिया, सफल थयो अवतार
अवतार हवे मुज दूर करो । प्र० ४

चउगतिना दुःखमां, रुलीयो काल अनंत
नाथ हवे हुं आवियो, सार करो भगवंत
भगवंत भव निस्तार करो । प्र० ५

भालक नगरमां भाग्यथी, भेट्या धर्म जिणंद
शरण लह्यु प्रभु आपनु, वारो कर्म ना फंद
हरे कर्म होवु भवपार खरो । प्र० ६

मुक्ति मोहन मंदिरे, वास करावो नाथ
अवर न याचु हे प्रभु, तुम पासे जगनाथ
प्रतापे माणेक सनाथ करो । प्र० ७

कई दिशे जाना आवसर, किहां उड़े अबीर गुलाल प्रभु०
कौण घाड़ कौण हाथीयेरे, कौण छे रथ पलाण प्रभु०
कृष्ण घाड़ बलदेव हाथीयेर, नेमजी रथ पलाण प्रभु०
राजुल उभी गोखड़ेर जुवे जानोनी वाट प्रभु०
आया रथड़ा पाछा वालतां र, मूर्च्छा पाम्या राजूल प्रभु०
चन्दन जल छांटे पछी रे, थयां राजुल सावधान प्रभु०
वरसी दान न दइनेर, सहसावने दीक्षा लीध प्रभु०
दीन पचावन में पामियां रे, पामियां केवल ज्ञान प्रभु०
राजुले संयम आदयुं रे, प्रतिबोध्या रह नेम प्रभु०
नेम राजुल मुगत गयां र, रह नेमी शिवधाम प्रभु०
सूरि प्रतापे शिवपुरमरि, माणिक विनय करे वास प्रभु०

मालक मजन धर्मनाथनु स्तवन

प्रभु धर्म जिणंद भवपार करो
मारी भव अनवनी फरी हरो।
वदन चंद्र मन मोहतु, काया कंचनवान
लक्षणे लक्षीत देहड़ी, कहतां पामु न मान
एक हजार आठ लक्षणा सारां। प्र० १
तुम चरणे शिर नामरु, नमतां लागे न वार

भव भ्रमणाने वारवा, आव्यो तुम दरबार
प्रभु तुंहीज तारणहार खरो। ३

दर्शन लेवा आवियो, द्यो दर्शन जिनराज
दर्शन थी दर्शन लही, पामु अविचल राज
पामे दर्शन तरे संसार खरो। प्र०

धन्य दिवस माहरो, धन्य घड़ी सुखकार
जे दिने प्रभु भेटिया, सफल थयो अवतार
अवतार हवे मुज दूर करो। प्र० ४

चउगतिना दुःखमां, रुलीयो काल अनंत
नाथ हवे हुं आवियो, सार करो भगवंत
भगवंत भव निस्तार करो। प्र० ५

भालक नगरमां भाग्यथी, भेटया धर्म जिणंद
शरण लह्युं प्रभु आपनुं, वारो कर्म ना फंद
हरे कर्म होवुं भवपार खरो। प्र० ६

मुक्ति मोहन मंदिरे, वास करावो नाथ
अवर न याचुं हे प्रभु, तुम पासे जगनाथ
प्रतापे माणेक सनाथ करो। प्र० ७

राजगृही तीर्थनु स्तवन

नयना सफल भयी, आज मोरी नयना सफलभयी
राजगृहीमें मुनिसुव्रतकी, मुरती गुणे भरी । आ० न ।
च्यवन जनम दीक्षाने केवल, मुनिसुव्रतना सही । आ० न
चौद चोमासां वीर जिणंदे, किया इहां आवी करी । आ० न
गौतमादि गणधर प्रभु वीरना, शिव गया भव तरी । आ०न
वैभव त्यागी संयम धार्यो, धन्ना शालीभद्र सही । आ० न
वैभारगिरि पर अणसण करके सुरपद पाया सही । आ० न
विपुलगीरिने रत्नगिरी ज्यों, उदय सोवन गीरि । आ० न
पंचम वैभारगिरीवर वंदो, भवोभव दुख हरी । आ० न
मोहन प्रतापी माणेक तारो, भवभय दूर करी । आ० न

पच्चक्खाण सूत्र

॥ दिनके पच्चक्खाण ॥

१ नमुक्कार सहिय मुट्ठसहिय पच्चक्खाण

उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया गारेणं वोसिरइ ॥

२ पोरसी साढ़पोरसी पच्चक्खाण

उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं पोरसि, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ । उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं-अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेण, वोसिरइ ।

३ पुरिमुड्ढ-अवड्ढ-पच्चक्खाण

सूरे उग्गए, पुरिमुडढं, अवड्ढं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

४ एगासण, बियासणा का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं पोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ । उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, . दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । विगइओ पच्चक्खाइ-अन्न-

त्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्त विवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं। पारिट्ठावणिया गारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। एगासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहार-असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउन्टणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहु लेवेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ।

५ आयंबिल का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, नमुक्कार-सहियं पोरिसिं, साड्ढ पोरिसिं मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ। उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। आयंबिलं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्त विवेगेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। एगासणं

पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं-असणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं आउंटण-पसारेणं, गुरुअभुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं। पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ।

६ तिविहार उपवास पच्चक्खाण

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं-असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणभोगेणं, सहसा-गारेणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं। पाणहार पोरिसिं, सांढ पोरिसिं मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाई-चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्न-कालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं। पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा, अच्छेणवा बहु लेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ।

त्यणाभोगेण सहसागारेण, लेवालेवेण, गिहत्थ संसट्ठेण, उक्खित्त विवेगेण, पडुच्चमक्खिएण। पारिट्ठावणिया गारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण। एगासण पच्चक्खाइ तिविहंपि आहार-असण, खाइम, साइम-अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेण, सागारियागारेण, आउण्टणपसारेण गुरुअब्भुट्ठाणेण, पारिट्ठावणियागारेण, महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण। पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहु लेवेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ।

५ आयंबिल का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, नमुक्कार-सहिअं, पोरिसिं, साड्ढ पोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ। उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं, खाइमं साइमं-अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। आयंबिलं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्त विवेगेणं, पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। एगासणं

पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं-असणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं. सागारियागारेणं आउंटण-पसारेणं, गुरुअभुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं। पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ।

८ तिविहार उपवास पच्चक्खाण

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं-असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणभोगेणं, सहसा-गारेणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं। पाणहार पोरिसिं, सांढ पोरिसिं मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाई-चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्न-कालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं। पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा, अच्छेणवा बहु लेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ।

७ चउव्विहार पच्चक्खाण उपवास

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ। चउव्विहंपि आहार असणं, पाणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

रात के पच्चक्खाण

८ पाणहार पच्चक्खाण

पाणहार दिवस चरिमं पच्चक्खाई-अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

९ चउव्विहार पच्चक्खाण

दिवस चरिमं पच्चक्खाई चउव्विहंपि आहार-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरई।

१० तिविहार पच्चक्खाण

दिवस चरिमं पच्चक्खाई तिविहंपि आहार, असणं, खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरा-गारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरई।

११ दुविहार पच्चक्खाण—

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ-दुविहंपि आहारं, असणं खाइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरई।

१२ देसावगासिधं पच्चक्खाण

देसावगासिअ उवभोगं परिभोगं पच्चक्खाइ—अन्न-त्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्तियागारेणं वोसिरई॥

पोसह पच्चक्खाण सूत्र

करेमि भते ? पोसहं, आहार पोसहं देसओ सव्वओ, शरीरसकार पोसहं सव्वओ वंभचेर पोसहं सव्वओ, अव्वावार—पोसहं सव्वओ, चउव्विहं पोसहं ठामि। जावदिवसं आहोरत्तं पज्जुवासामि। दुविहं तिविहेणं। मणेणं, वायाए, कायेणं, न करेमि, न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

पोसह पारने का सूत्र

सागर चन्दो कामो, चंन्द वडिंसो सुदंसणो धन्नो।

जेसिं पोसह पडिमा, असंखिआ जीवी अंतेमि ॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवाय, जास पससइ भयव दढव्व यत्त महावीरो ॥ २ ॥ पौषधव्रत विधि से लिया, और विधि से पूर्ण किया, तथापि कोई अविधि हुई हो सो मन, वचन, और काया से मिच्छामि दुक्कड ।

श्री वीश स्थानक तप विधि

पदनु नाम	काउ सग्ग	साथी या	खमा समणा	प्रद क्षिणा	नौकर वाली
नमो अरिहंताणं	२४	२४	२४	२४	२०
,, सिद्धाणं	१५	१५	१५	१५	२०
,, पवयणस्स	४५	४५	४५	१५	२०
,, आयरियाणं	३६	३६	३६	४५	२०
,, थेराणं	१०	१०	१०	३६	२०
,, उवज्झायाणं	२५	२५	२५	१०	२०
,, लोयेसव्व साहुणं	२७	२७	२७	२७	२०
,, नाणस्स	५	५	५	५	२०
,, दंसणस्स	६७	६७	६७	६७	२०
,, विणयस्स	१०	१०	१०	१०	२०
,, चरित्तस्स	७०	७०	७०	७०	२०
,, बंभवयधारिणं	६	६	६	६	२०
,, किरीयाणं	२५	२५	२५	२५	२०
,, तवस्स	१२	१२	१२	१२	२०
,, गोयमस्स	२८	२८	२८	२८	२०
,, जीणाणं	२०	२०	२०	२०	२०
,, संयमधारिणं	१७	१७	१७	१७	२०
,, अभिनवनाणस्स	५१	५१	५१	५१	२०
,, सुयस्स	२	१२	१२	१२	२०
,, तित्थस्स	५	५	५	५	२०

सूचना

आतपमा दरके पदना वीश वीश उपवासकरी आपवा जोइये, ऐम एकेक पदनीओलीपुरी थाय ते एकेक ओली छ महिनामां पुरी थवी जोइये ऐटले दश वर्षे विस ओली पूरी थाय ।

वीश वीश उपवास सुधी एकेक पदनु आराधन करवु, ऐटलेएकेक पदनु वीशवार गणणु काउसग्ग, खमासमणां साथीया आदि करवां कोई कोई पद नाममां फेरफार छे ते आ-रीते १५ मु दान १६ वैयावच्च, २० मु प्रवचन ।

वीस स्थानक तपमां खमासमण देतां बोलवाना

दोहा

जे जे पदना जेटला खमासमण देवाना होय त्यारे तेटला दुहो वरंवार बोली खमासमण देवां

पहलुं अरि-	परमपंच परमेष्ठीमां, परमेश्वर भगवान
हंत पद	चार निक्षेप ध्याइये, नमो नमो जिनभाण १
बीजुं सिद्ध	गुण अनंत निर्मलथया, सहज स्वरूप उजास
पद	अष्टकर्ममल क्षय करी, सिद्ध भय नमो तास २
त्रीजुं प्र	भावामय औषध समी, प्रवचन अमृत वृष्टि
वचन पद	त्रिभुवन जीवने सुखकरी जय २ प्रवचन दृष्टि ३
चोथुं आ	छत्रीस छत्रीसी गुणे, युग प्रधान मुणिंद
चार्य पद	जिनमत पर जाणता, नमो नमो ते सूरींद ४
पांचमुं	तजी परपरणती रमणता, लहे निज भाव स्वरूप
स्थविर पद	स्थिर करता भविलोकने जय २ थीविर अनुप ५
छठ्ठुं उ	बोध सुक्ष्म विणु जीवन न होय तत्त्व प्रतीत
पाध्याय पद	भणे भणावे सूत्रने जय जय पाठक गीत ६
सातमुं साधु पद	स्याद्वाद गुण परिणम्या रमता समता संग
	साधे शुद्धानन्दना नमो साधु शुभ रंग ७

आठमुं ज्ञान	अध्यातम ध्याने करी, विघटे भवभय भीति
पद	सत्य धर्मते ज्ञान छे नमो नमो ज्ञाननी रीति
नौमु दर्शन	लोकालोकना भावजे, केवली भाषित जेह
पद	सत्य करि अवधार तो, नमो नमो दर्शन तेह ६
दशमु वि-	शौचमूलथी महागुणी, सर्व धर्मनो सार
नय पद	गुण अनंतनो कंदए, नमो २ विनय अचार १०
ग्यारमु चा-	रत्नत्रयी विणु साधना, निष्फल कही सदीव
रित्र पद	भावरयणनु निधानछे, जय जय संयम जीव ११
बारमु ब्रह्म-	जिन प्रतिमा जिनमदिरा, कंचनना करे जेह
चर्य पद	ब्रह्मचर्यथी बहु फल लहे, नमो नमो सीयल सुदेह १२
तेरमु क्रिया	आत्मबोध विणु जे क्रिया, ते तो बालक चाल
पद	तत्वारथथी धारीये, नमो क्रिया सुविसाल १३
चौदमु तप	कर्म खपावे चीकणां, भाव मंगल तप जाण
पद	पच्चास लब्धि उपजे, जय जय तप गुण खाण १४
पदरमुं गोयम	छट्ठ छट्ठ तप करे पारणु, चउनाणी गुणधाम
पद	ए सम शुभ पात्र को नही, नमो नमो गोयम स्वाम १५

सोलसमुं जिन पद — दोष अढारे क्षय गया, उपन्या गुण जस अंग
वैयावच्च करिये मुदा, नमो नमो जिनपद संग १६

सतरमु संयम पद — शुद्धातम गुणमे रमे, तजी इन्द्रिय आशंस
थीर समाधि संतोषमां, जय जय संयम वंश १७

अढारमु अभिनव ज्ञान पद — ज्ञानवृक्ष सेवो भविक, चारित्र समकित मूल
अजर अमर पद फल लहो,
जिनवर पदवी फूल १८

उन्नीसमुं श्रुत पद — वक्ता श्रोता योगथी, श्रुत अनुभव रस पीन
ध्याता ध्येयनी एकता, जय जय
श्रुत सुख लीन १६

वीसम तीर्थ पद — तीर्थयात्रा प्रभाव छे, शासन उन्नति काज
परमानन्द विलासतां, जय जय तीर्थ जहाज २०

श्री सिद्धचक्र (नवपद) ओली विधि

क्रम	पदना नाम	नवकारवाली	काउसग्ग लोगस्स	खमासमण	साथीया	प्रदक्षिणा	वर्ण	जात
१	ओं ह्रीं नमो अरिहंताणं	२०	१२	१२	१२	१२	श्वेत	चोखा
२	„ नमो सिद्धाणं	२०	८	८	८	८	रकल	घउं
३	„ नमो आयरियाणं	२०	३६	३६	३६	३६	पीलो	चणा
४	„ नमो उवज्झायाणं	२०	२५	२५	२५	२५	नील	मग
५	„ नमो लोए सव्व साहुणं	२०	२७	२७	२७	२७	कृष्ण	अड़द
६	„ दंसणस्स	२०	६३	६३	६३	६३	श्वेत	चोखा
७	„ नानस्स	२०	५१	५१	५१	५१	„	„
८	„ चरित्रस्स	२०	७०	७०	७०	७०	„	„
९	„ तवस्स	२०	१२	१२	१५	१२	„	„

आतप आसो अने चैत्रनी सुद ७ थी १५ सुधी रोज आंबिल थी करवो, एम वर्षमां बे वार करीने साडा चार वर्षे नव ओली पुरी करवी, अने यंत्र प्रमाणे क्रिया, गणणु विगेरे करवां, त्रिकाल, देववंदन, पूजा, पडिलेहणा, पडिक्कमणादि करवु, विस्तारे करनारे महामंडलनी स्थापना, विधान, वर्ण, मुजब आराधन गुरुगमथी जाणवा योग्य छे।

सोलमु जिन पद — दोप अढारे क्षय गया, उपन्या गुण वस अंग
वैयावच्च करिये मुदा, नमो नमो जिनपद संग १६

सतरमु संयम पद — शुद्धातम गुणमे रमे, तजी इन्द्रिय आशंस
थीर समाधि संतोषमां, जय जय संयम वंश १७

अढारमु अभिनव ज्ञान पद — ज्ञानवृक्ष सेवो भविक, चारित्र समकित मूल
अजर अमर पद फल लहो,
जिनवर पदवी फुल १८

उनीसमु श्रुत पद — वक्ता श्रोता योगथी, श्रुत अनुभव रस पीन
ध्याता ध्येयनी एकता, जय जय
श्रुत सुख लीन १९

वीसमु तीर्थ पद — तीर्थयात्रा प्रभाव छे, शासन उन्नति काज
परमानंद विलासतां, जय जय तीर्थ जहाज २०

सातमु ज्ञानपद

ज्ञानावरणी जे कर्मछे, क्षय उपसम तस थायेरे
तो हुये एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जायेरे वी० ७

आठमु चारित्र

जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतोरे
लेश्यासुद्ध अलंकर्यो, मोह वने नवि भमतोरे वी०८

नवमु तप पद

इच्छा रोधे संवरी, परिणति समता योगेरे
तप ते एहिज, आतमा वर्ते निज गुण भोगेरे वी०९

श्री सिद्धचक्रनु, चैत्यवंदन, स्तवन अने थोय

चैत्यवन्दन

जय जय श्री अरिहंत भानु, भविक कमल विकासी
लोका लोक स्वरूप रूपी, समस्त वस्तु प्रकाशी १
समुद्‌धात शुभ केवली, क्षयकृत मल राशी
शुक्ल चरम सुचि पादसे, भयो वर अविनाशी २
अंतरंग रिपुगण हणीये, हुआ अप्पा अरिहंत
तसु पद पंकज नित रहे, हीर धरण विकसंत ३

स्तवन

नवपद धरजो ध्यान भवियां, नवपद धरजो ध्यान
ए नवपदनु ध्यान करतां, जीव पामे विशराम भवि० १
अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु सकल गुणखाण भ० २

नवपद ओलीमां दररोज के पदे बोलवाना दुहा

पहलु अरि- हंत पद

अरिहतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पर्यायरे
भेद छेद करी आतमा, अरिहंत रूपी थायरे
वीर जिनेश्वर उपदिशे, सांभलजो चित लाइरे
आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मिले सवि
आइरे, वी० १

बीजु सिद्ध पद

रूपातीत स्वभाव ज, केवल दंसण नाणीरे
ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण
खाणीरे वी० २

त्रीजु आचार्य पद

ध्याता आचारज भला, महामन्त्र शुभ ध्यानीरे
पञ्च प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणीरे वी० ३

चोथु उपाध्याय पद

तप सज्झाय रत सदा, द्वादश अंगना ध्यातारे
उपाध्याय ते आतमा, जग बांधव जग
भ्रातारे वी० ४

पांचमु साधु पद

अप्रमत्त ज नित रहे, नवि हरखे नवि सोचेरे
साधु सधा ते आतमा, शु मुंडे शु लोचेरे वी० ५

छट्ठु दर्शन पद

शम संवेगादिक गुणा, क्षय उपशम जे आवेरे
दर्शन तेहिज आतमा, शु होय नाम धरावेरे, वी० ६

सातमु ज्ञानपद — ज्ञानावरणी जे कर्मछे, क्षय उपसम तस थायेरे
तो हुये एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जायेरे वी० ७

आठमु चारित्र — जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतोरे
लेश्यासुद्ध अलंकर्यो, मोह वने नवि भमतोरे वी०८

नवमु तप पद — इच्छा रोधे संवरी, परिणति समता योगेरे
तप ते एहिज, आतमा वर्ते निज गुण भोगेरे वी०९

श्री सिद्धचक्रनु, चैत्यवंदन, स्तवन अने थोय

चैत्यवन्दन

जय जय श्री अरिहंत भानु, भविक कमल विकासी
लोका लोक स्वरूप रूपी, समस्त वस्तु प्रकाशी १
समुद्धात शुभ केवली, क्षयकृत मल राशी
शुक्ल चरम सुचि पादसे, भयो वर अविनाशी २
अंतरंग रिपुगण हणीयें, हुआ अप्पा अरिहंत
तसु पद पंकज नित रहे, हीर धरण विकसंत ३

स्तवन

नवपद धरजो ध्यान भवियां, नवपद धरजो ध्यान
ए नवपदनु ध्यान करतां, जीव पामे विशराम भवि० १
अरिहत सिद्ध आचारज पाठक, साधु सकल गुणस्वाण भ० २

दर्शन ज्ञान चरित्र ये उत्तम, तप तपो करी बहुमान भ० ३
आसो चैत्रनी सुदी सातमथी, पुनम लगे परमान भ० ४
एम एकाशी आंबील कीजे, वर्ष साडा चारनु मान भ० ५
पडिक्कमणा दोय टकना कीजे, पडीलेहण बे वार भ० ६
देववदन त्रण टकना कीजे, देवपूजा त्रिकाल भ० ७
बार आठ छत्रीस पचीसनो, सत्यावीस सडसठसार भ० ८
एकावन सीत्तर पचासनो, काउसग्ग करो सावधान भ० ९
एकेक पदनु गणणु गणीये दोय हजार प्रमाण भ० १०
ए विधिसे जे तप आराधे, ते पामे भवपार भ० ११
करजोडी सेवक गुणगावे, मोहन गुणमणि माल भ० १२
तास शिष्य मुनि हंस कहेछे, जनम मरण दुःख वार भ०१३

बोध

जिन शासन वांछीत पुरणदेव रसाल, भावे भवि भणिये सिद्धचक्रगुण माल तिहु काल एहनी, पूजा करे उजमाल, ते अजर अमर पद सुख पामे सुविशाल। १

—॥—

श्री पाट परम्परा

श्री वर्धमानस्वामीने नम श्री गौतमस्वामीने नम.

श्री सुधर्मास्वामीथी वीर प्रभुनी

५८	पाटे जगत्गुरु अकबर बादशाह प्रतिबोधक श्री विजयहीरसूरिजी	
५९	श्री विजयसेनसूरिजी	महाराज
६०	श्री विजयदेवसूरिजी	"
६१	श्री विजयसींहसूरिजी	"
६२	पं० श्री सत्यविजयजी	"
६३	पं० श्री कपुरविजयजी	"
६४	पं० श्री क्षमाविजयजी	"
६५	पं० श्री जिनविजयजी	"
६६	पं० श्री उत्तमविजयजी	"
६७	पं० श्री पद्मविजयजी	"
६८	पं० श्री रुपविजयजी	"
६९	पं० श्री कीर्तीविजयजी	"
७०	पं० श्री कस्तुरविजयजी	"
७१	पं० श्री मणिविजयजी दादा	"
७२	पं० श्री बुद्धिविजयजी (बुटेराय)	"

चार शाखा

७३	गच्छपति श्री मुक्तिविजयजीगणी	(मुलचंदजी)
७४	विजयकमलसूरिजी	"
७५	विजयमोहनसूरिजी	"

तीर्थगुण माणेकमाला का प्राप्ति स्थान

शा:—कपूरचन्दजी हांसाजी

जावाल (जि० सिरोही, मारवाड़)

खेरा बाबूलाल विट्ठलदास

पता— जैन मन्दिर के पास

खेरा, वाया मेहसाणा (गुजरात)

रायसाहब बाबू लक्ष्मीचंद सुचंती

पता—जैन श्वेताम्बर कारखाना

पावापुरी, (बिहार जि० पटना)

सेठिया-जैन-ग्रन्थमाला पुष्प नं० ३६

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

प्रतिक्रमण-सूत्र

(मूल विधि-सहित)

अखिल भारतवर्षीय श्रीश्वेताम्बर स्थानकवासी
जैन कान्फ्रेन्स द्वारा प्रमाणित

प्रकाशक—

भैरोंदान जेठमल सेठिया
बीकानेर

वीर नि० सं० २४६१ | पचमावृत्ति २००० | विक्रम सं० १९९१

तीर्थंगुण माणेकमाला का प्राप्ति स्थान

शा:—कपूरचन्दजी हांसाजी
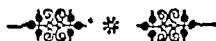
आबाल (जि० सिरोही, मारवाड)

बोरा बाबूलाल विट्ठलदास

पता— जैन मन्दिर के पास

मेरा बाया मेहसाणा (गुजरात)

रायसाहब बाबू लक्ष्मीचंद सुचंती

पता–जैन श्वेताम्बर कारखाना

पावापुरी, (बिहार जि० पटना)

सेठिया-जैन-ग्रन्थमाला पुष्प नं० ३६

॥ श्रीवीतरागाय नम. ॥

प्रतिक्रमण-सूत्र

(मूल विधि-सहित)

अखिल भारतवर्षीय श्रीश्वेताम्बर स्थानकवासी
जैन कान्फ्रेन्स द्वारा प्रमाणित

प्रकाशक—

भैरोंदान जेठमल सेठिया

बीकानेर
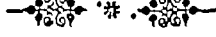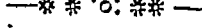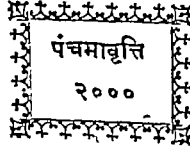
वीर नि० सं० २४६१ | पंचमावृत्ति २००० | विक्रम सं० १९९१

श्रावक प्रतिक्रमण

मूल पाठ

—.※※०.※०※※—

।। अथ इच्छामि णं भंते का पाठ ।।

इच्छामि णं भंते तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे देवसियं पडिक्कमणं ठाएमि, देवसियणाणदंसणचरित्ताचरित्ततवअइयार चिंतणट्ठं करेमि काउस्सग्गं ॥

।। अथ इच्छामि ठामि का पाठ ।।

इच्छामि ठामि*काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइ-

---

* आवश्यक आगमो० पृष्ट ७७८ में 'ठाइउ' (करने के लिए) है। किन्तु 'ठामि' पाठान्तर प्रचलित हैं। इसलिए यही रक्खा गया है।

यारा कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे तह दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं, कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडियं, जं विराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २ ॥

॥ ज्ञान के अतिचार का पाठ ॥

आगमे तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—सुत्तागमे, अत्थागमे, तदुभयागमे, इस तरह तीन प्रकार आगमरूप ज्ञान के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—जं वाइद्धं, वच्चामेलियं, हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं, विणयहीणं, जोगहीणं, घोसहीणं सुट्ठुदिण्णं, दुट्ठुपडिच्छियं, अकाले कओ सज्झाओ, काले न कओ सज्झाओ, असज्झाए सज्झाइयं, सज्झाए न सज्झाइयं, भणतां गुणतां विचारतां ज्ञान और ज्ञानवन्त की आशातना की हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ३ ॥

॥ दर्शन सम्यक्त्व का पाठ ॥

अरिहंतो मह देवो जावज्जीवाय सुसाहुणो गुरुणो
जिणपण्णत्तं तत्तं इअ सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥
परमत्थसंथवो वा सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि ।
वावण्णकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २ ॥

इअ सम्मत्तस्स पंच अइआरा पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते आलोउं—"संका, कंखा, वितिगिच्छा, परपासंडपसंसा, परपासंड-संथवो" इस प्रकार श्रीसमकितरत्न पदार्थ के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—श्रीजिन वचन सच्चा कर श्रद्धया न हो, प्रतीत्या न हो, रुच्या न हो १, परदर्शन की आकांक्षा की हो २, पारपाखंडी की प्रशंसा की हो ३, परपाखंडी का परिचय किया हो ४, धर्मफल प्रति संदेह किया हो ५, मेरा सम्यक्त्वरूपरत्न पर मिथ्यात्वरूपी रज—मैल लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ४ ॥

बारह स्थूल अतिचार ।

पहला स्थूल—प्राणातिपातविरमणव्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—रोष वश

से गाढ़ा बन्धन बांधा हो १, गाढा घाय घाला हो २, अवयव का छेद (चाम आदि का छेद) किया हो ३, अधिक भार भरा हो ४, भात पाणी का विच्छेद किया हो ५, जो मे देवसिओ अइयारे कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं, अर्थात् जो मैंने दिवस सम्बन्धी अतिचार किया हो तो उससे उत्पन्न हुआ मेरा पाप निष्फल हो ।

दूजा स्थूल-मृषावाद विरमणव्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—सहसाकार से किसी के प्रति कूड़ा आल (मृषादोष) दिया हो १, रहस्य (गुप्त) बात प्रगट की हो २, स्त्री पुरुष का मर्म प्रकाशित किया हो ३, मृषा (झूठा) उपदेश दिया हो ४, कूड़ा लेख लिखा हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तीजा स्थूल-अदत्तादान विरमणव्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—चोर की चोराई हुई वस्तु ली हो १, चोर को सहायता दी हो २ राजविरुद्ध काम किया हो ३, कूड़ा तोल कूड़ा माप किया हो ४, वस्तु में भेल संभेल की हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

चौथा स्थूल*स्वदारसंतोष-परदारविवर्जनरूप मैथुन विरमणव्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं+ इत्तरियपरिग्गहिया से गमन किया हो १, ÷अंपरिग्गहिया से गमन किया हो २, अनंग-क्रीड़ा की हो ३, पराये का विवाह नाता कराया हो ४, कामभोग की तीव्र अभिलाषा की हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

पांचवां स्थूल–परिग्रह–परिमाणव्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं–खेत्त-वत्थु का परिमाण अतिक्रमण (उल्लंघन) किया हो १, हिरण्य सुवर्ण का परिमाण अतिक्रमण किया हो २, धन-धान्य का परिमाण अतिक्रमण किया हो ३, दोपद–चौपद का परिमाण अतिक्रमण किया हो ४, कुविय–सोना चांदी के सिवाय और धातु का

---

*स्वदारसतोष परदारविवर्जनरूप, ऐसा पुरुष को बोलना चाहिये और स्त्री को स्वपतिसन्तोष परपुरुषविवर्जनरूप, ऐसा बोलना चाहिये। +छोटी उम्रवाली विवाहिता स्वस्त्री से गमन किया हो ।

÷अपरिगृहीता—अपरिग्गहिया—वाग्दान (सगपन) होने पर भी विधि के अनुसार विवाह होने से पहले उससे गमन किया हो ।

परिमाण अतिक्रमण किया हो ५, ज मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

छठे दिशिव्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—उड्ढ (ऊंची) दिशा का परिमाण अतिक्रमण किया हो १, अधो (नीची) दिशा का परिमाण अतिक्रमण किया हो २, तिरछी दिशा का परिमाण अतिक्रमण किया हो ३, क्षेत्र बढ़ाया हो ४, क्षेत्र-परिमाण के भूल जाने से पंथ का संदेह पड़ने पर आगे चला हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

सातवां उपभोगपरिभोग—परिमाणव्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—पच्चक्खाण उपरान्त सचित्त का आहार किया हो १, सचित्त पडिबद्ध का आहार किया हो २, अपक्क (अपक्व) का आहार किया हो ३, दुपक्क (दुष्पक्व) का आहार किया हो ४, तुच्छौषधि का आहार किया हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

पन्द्रह कर्मादान सम्बन्धी कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—इंगालकम्मे १, वणकम्मे २, साडीकम्मे

३, भाडीकम्मे ४, फोडीकम्मे ५, दन्तवाणिज्जे ६, लक्खवाणिज्जे ७, रसवाणिज्जे ८, केसवाणिज्जे ९, विसवाणिज्जे १०, जंतपीलणकम्मे ११, निल्लंछण-कम्मे १२, दवग्गिदावणया १३, सर दह-तलाय-सोसणया १४, असईजणपोसणया १५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

आठवें अनर्थदंड-विरमण व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं--कामविकार पैदा करने की कथा की हो १, भंड--कुचेष्टा की हो २, मुखरीवचन बोला हो ३, अधिकरण* जोड़ रक्खा हो ४, उपभोग--परिभोग अधिक बढ़ाया हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

नववें सामायिक व्रत के विषय जो कोई अति-चार लगा हो तो आलोउं--मन वचन और काया के अशुभ योग प्रवर्त्ताये हों ३, सामायिक की स्मृति न की हो ४, समय पूर्ण हुए विना सामायिक पारी हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

---

*अधिकरण—आरम्भ का साधन—हथियार—औज़ार ।

दसवें देसावगासिक-व्रतके विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउ–नियमित सीमा के बाहिर की वस्तु मंगवाई हो १, भेजवाई हो २, शब्द कर के चेताया हो ३, रूप दिखा करके अपने भाव प्रगट किए हों ४, कंकर आदि फेंककर दूसरे को बुलाया हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

ग्यारहवें पडिपुन्न-पौषध-व्रतके विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउ–पौषध में शय्या संथारा न देखा हो या अच्छी तरह न देखा हो १, प्रमार्जन (पडिलेहण) न किया हो या बेदरकारी से किया हो २, उच्चार-पासवण की भूमि अच्छी तरह न देखी हो या अविधि से देखी हो ३, पुंजी न हो या पुंजी हो तो अच्छी तरह न पुंजी हो ४ उपवासयुक्त पौषध का सम्यक् प्रकार से पालन न किया हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

बारहवें अतिथिसंविभाग-व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-सूजती (कल्पनीय) वस्तु सचित्त में डाली हो १ सचित्त से ढांकी हो २,

आप सुजता होते हुए—दुसरा के पास से दान दिराया होय (अपनी वस्तु पराई कही) हो ३, मच्छर (ईर्ष्या) भाव से दान दिया हो ४, भोजन समय टाल कर साधुओं से प्रार्थना की हो अथवा दान देने की भावना न भाई हो ५, जो मे देवसिओ अइआरो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

॥ संलेखना के पांच अतिचार का पाठ ॥

संलेखना के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे, (मा मज्भ हुज्ज मरणंतेवि सड्ढापरूवणम्मि अन्नहाभावो) अर्थात् मरणान्त कष्ट के होने पर भी मेरी श्रद्धा प्ररूपणा में फरक आया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

॥ अठारह पापस्थान का पाठ ॥

अठारह पापस्थान आलोउं (१) पहिला प्राणातिपात, (२) दूजा मृषावाद, (३) तीजा अदत्तादान, (४) चौथा मैथुन, (५) पांचवां परिग्रह, (६) छट्ठा क्रोध, (७) सातवां मान, (८) आठवां माया, (९) नववां लोभ, (१०) दशवां राग, (११) ग्यारहवां

॥ तस्स सव्वस्सका पाठ ॥

तस्स सव्वस्स देवसियस्स अइयारस्स दुब्भासियदुच्चिंतिय-दुचिट्ठियस्स आलोयंतो पडिक्कमामि ।

॥ चत्तारि मंगलका पाठ ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंतसरणं पवज्जामि, सिद्धसरणं पवज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।

अरिहंतोंका शरणा, सिद्धोंका शरणा, साधुओं का शरणा, केवलिप्ररूपित धर्मका शरणा, चार शरणा, दुर्गति हरणा, और शरणा नहीं कोय । जो भवि प्राणी आदरे, तो अक्षय अमर पद होय ॥

॥ दंसण समकित का पाठ ॥

दंसणसम्मत्त—परमत्थसंथओ वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि । वावण्णकुदंसणवज्जणा य सम्मत्त सद्दहणा । एवं समणोवासएणं सम्मत्तस्स पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा

द्वेष, (१२) बारहवाँ कलह, (१३) तेरहवाँ अभ्याख्यान, (१४) चौदहवाँ पैशुन्य, (१५) पनरहवाँ परपरिवाद, (१६) सोलहवाँ रतिअरति, (१७) सतरहवा माया मृषावाद, (१८) अठारहवा मिथ्या दर्शन-शल्य, इन अठारह पापस्थानों में से किसी का मैंने सेवन किया हो कराया हो या करते हुए का अनुमोदन किया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

॥ इच्छामि खमासमणो का पाठ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो-कायं कायसंफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्प किलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसियं वइक्कमं। आवस्सियाए पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ तस्स सव्वस्सका पाठ ॥

तस्स सव्वस्स देवसियस्स अइयारस्स दुब्भासियदुच्चिंतिय-दुचिट्ठियस्स आलोयंतो पडिक्कमामि ।

॥ चत्तारि मंगलका पाठ ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंतसरणं पवज्जामि, सिद्धसरणं पवज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।

अरिहंतोंका शरणा, सिद्धोंका शरणा, साधुओं का शरणा, केवलिप्ररूपित धर्मका शरणा, चार शरणा, दुर्गति हरणा, और शरणा नहीं कोय । जो भवि प्राणी आदरे, तो अक्षय अमर पद होय ॥

॥ दंसण समकित का पाठ ॥

दंसणसम्मत्त—परमत्थसंथओ वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि । वावण्णकुदंसणवज्जणा य सम्मत्त सद्दहणा । एवं समणोवासएणं सम्मत्तस्स पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा

ते आलोउं-संका, कंखा, वितिगिच्छा, परपासंडीप संसा परपासंडीसंथवो, एवं पांच अतिचार मध्ये जो कोई अतिचार लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

बारह व्रतों तथा अतिचारों के पाठ ॥

पहिला अणुव्रत—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं त्रसजीव—बेइंदिय तेइंदिय, चउरिंदिय, पंचिंदिय जान के पहिचान के सङ्कल्प करके उसमें स्वसंबन्धी–शरीर के भीतर में पीडाकारी, सापराधी को छोड़ निरपराधी को आकुट्टी की बुद्धि [हनने की बुद्धि] से हनने का पच्चक्खाण जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा वयसा, कायसा एसे पहिले स्थूल प्राणातिपातविरमण व्रत के पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा न समाय रियव्वा, तंजहा ते आलोउं-बंधे वहे छविच्छेए अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। जो मे देवसिओ अइयाराकओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

दूजा अणुव्रत थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, कन्नालिए, गवालिए, भोमालिए, णासावहारो (थापणमोसो) कूडसक्खिज्जे संधिकरणे मोटी कूडी साख इत्यादिक मोटा झूठ बोलने का पच-

क्खाण, जाव जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा, कायसा, एवं दूजा स्थूल मृषावादविरमण व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं सहसब्भक्खाणे, रहस्सब्भक्खाणे, सदारमंतभेए, मोसोवएसे, कूड-लेहकरणे जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तीजा अणुव्रत-थूलाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, खात खनकर, गांठ खोलकर, ताले पर कुंजी लगाकर, मार्ग में चलते को लूट कर, पड़ी हुई धणियाती मोटी वस्तु जानकर लेना इत्यादि मोटा अदत्तादान का पच्चक्खाण, सगे सम्बन्धी, व्यापार सम्बन्धी तथा पड़ी निर्भ्रमी वस्तुके उपरान्त अदत्ता-दान का पच्चक्खाण जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं, न करेमि न कारवेमि मणसा, वयसा, कायसा, एवं तीजा स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत के पंच अइआरा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं तेनाहडे, तक्करप्पओगे, विरुद्धरज्जाइक्कमे, कूडतुल्ल-कूडमाणे, तप्पडिरूवगववहारे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

चौथा अणुव्रत—थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं, सदारसंतोसिए, अवसेस मेहुणविहि का पच्चक्खाण जाव जीवाए, देवदेवी सम्बन्धी दुविहं तिविहेणं न करमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा, तथा मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धी एगविहं एगविहेणं न करेमि कायसा, एवं चौथा थूल मेहुणवेरमणव्रतके पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं—इत्तरियपरिग्गहियागमणे, अपरिग्गहियागमणे, अनंगक्रीडा, परविवाहकरणे, कामभोगतिव्वाभिलासे, जो मे देवसिओ अइआरो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

पांचवां अणुव्रत—थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं, धन-धान्य का यथापरिमाण, खेतवत्थु का यथापरिमाण, हिरण्ण सुवण्ण का यथापरिमाण, दुपयचउप्पय का यथापरिमाण, कुवियधातु का यथापरिमाण, जो परिमाण किया है, उसके उपरान्त अपना करके परिग्रह रखन का पच्चक्खाण, जावजीवाए, एगविहं तिविहेणं न करमि मणसा वयसा कायसा, एवं पांचवां स्थूल परिग्रहपरिमाण—व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं—धण-

धन्नप्पमाणाइक्कमे, खेत्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे हिरण्णसुवण्णप्पमाणाइक्कमे, दुपयचउप्पयप्पमाणाइक्कमे कुवियप्पमाणाइक्कमे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

छठा दिशिव्रत-उड्ढदिशि का यथापरिमाण अहोदिशि का यथापरिमाण, तिरियदिशि का यथापरिमाण एवं यथापरिमाण किया है, इसके उपरान्त आगे जाकर पांच आस्रव सेवन का पच्चक्खाण, जाव जीवाए* दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, एवं छठे दिशिव्रत के पंच अइआरा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं— उड्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे, अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे, तिरिअदिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुड्ढा, सइअन्तरद्धा, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

सातवां अणुव्रत–उवभोगपरिभोगविहिं पच्चक्खायमाणे उल्लणियाविहि १, दंतणविहि २, फलविहि ३, अब्भंगणविहि ४, उवट्टणविहि ५, मज्जणविहि ६, वत्थविहि ७, विलेवणविहि ८, पुप्फविहि ९, आभरणविहि १०, धूवविहि ११, पेज्जविहि १२, भक्खणविहि १३,

* 'एगविह तिविहेण' भी कोई कोई बोलते हैं।

ओदणविहि १४, सूपविहि १५, विगयविहि १६, साग विहि १७, महुरविहि १८, जिमणविहि १९, पाणी अविहि २०, मुखवासविहि २१, वाहणविहि २२, उवा णाहविहि २३, सयणविहि २४, सचित्तविहि २५, दव्व विहि २६, इत्यादि का यथापरिमाण किया है, इसके उपरान्त उपभोग परिभोग वस्तु को भोगनिमित्त से भोगने का पच्चक्खाण, जावज्जीवाए, एगविहं तिविहेणं, न करेमि मणसा वयसा कायसा, एवं सातवां उपभोग परिभोगे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—भोयणाओ य, कम्म-ओ य, भोयणाओ समणोवासयाणं पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं— सचित्ताहारे, सचित्तपडिबद्धाहारे, अप्पोलिओसहि-भक्खणया, दुप्पोलिओसहिभक्खणया, तुच्छोसहि भक्खणया, कम्मओणं समणोवासयाणं पन्नरस कम्मा दाणाइं जाणियव्वाइं न समायरियव्वाइं तंजहा ते आ लोउं—इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, रसवाणि-ज्जे, केसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसो-सणया, असईजणपोसणया जो मे देवसिओ अइ-यारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

आठवां, अणट्ठादण्डविरमणव्रत—चउव्विहे अणत्थदंडे पण्णत्ते, तंजहा—अवज्झाणाचरिए, पमायाचरिए, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवएसे, एवं आठवां अणट्ठादंड सेवन का पच्चक्खाण (जिसमें आठ आगार-आए वा, राए वा, नाए वा, परिवारे वा, देवे वा, नागे वा, जक्खे वा, भूए वा, एत्तिएहिं आगारेहिं अन्नत्थ) जावजीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, एवं आठवां अणट्ठादंडविरमणव्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं—कंदप्पे, कुक्कुइए मोहरिए, संजुत्ताहिगरणे, उवभोग-परिभोगाइरित्ते जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

नववां सामायिकव्रत—सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, ऐसी सद्दहणा परूपणा तो है सामायिक का अवसर आये सामायिक करूँ तब फरसना करके शुद्ध होऊँ, एवं नववें सामायिकव्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं—मणदुप्पणिहाणेणं, वयदुप्पणिहाणेणं, कायदुप्पणिहाणेणं, सामाइयस्स सइ अकर-

णयाए, सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणयाए जो मे देवसियो अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

दसवाँ देसावगासिकव्रत—दिनप्रति प्रभातसे प्रा रंभ करके पूर्वादिक छहों दिशाकी जितनी भूमिका की मर्यादा रक्खी हो उसके उपरान्त आगे जाकर पाँच आस्रव सेवने का पच्चक्खाण, जाव अहोरत्तं दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा जितनी भूमिका की हद रक्खी उसमें जो द्रव्यादिक की मर्यादा की है उसके उपरान्त उपभोग परिभोग निमित्त से भोगने का पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं एग विहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा, एवं दशवाँ देसावगासिक व्रतके पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं—आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाए, रूवाणुवाए, बहियापुग्गलपक्खेवे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

ग्यारहवाँ पडिपुन्न पोषधव्रत—असणं पाणं खाइमं साइमं का पच्चक्खाण, अबंभसेवन का पच्चक्खाण, अमुक मणिसुवर्ण का पच्चक्खाण,माला-वन्नग-विलेव ण का पच्चक्खाण,सत्थ-मुसलादिक-सावज्जजोग सेवन

का पच्चक्खाण, जावअहोरत्तं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा, ऐसी सद्दहणा परूपणा तो है पोसहका अवसर आये पोसह करूं तब फरसना करके शुद्ध होऊं, एवं ग्यारहवां पडिपुन्नपोपधव्रतका पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं— अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-सेज्जासंथारए, अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-सेज्जासंथारए, अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-उच्चारपासवण भूमी, अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-उच्चारपासवण-भूमी, पोसहस्स सम्मं अणणुपालणया, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

बारहवाँ अतिथिसंविभागव्रत—समणे निग्गंथे फासुयएसणिज्जेणं — असणपाणखाइमसाइमवत्थुपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं पाडिहारियपीढफलगसेज्जासंथारएणंओसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणे विहरामि, ऐसी हमारी सद्दहणा परूपणा है, साधु साध्वी का योग मिलने पर निर्दोष दान दूं तब शुद्ध होऊं। एवं बारहवें अतिथिसंविभागव्रत के पंच अइआरा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते

आलोउं—सचित्तनिक्खेवणया, सचित्तपिहणया कालाइक्कमेपरोववएसे मच्छरियाए जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

॥ बड़ी संलेखणा का पाठ ॥

अह भंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा झूसणा आराहणा पौषधशाला पूंजे, पूंजके उच्चार-पासवण भूमिको पडिलेहे, पडिलेहके गमणागमणे पडिक्कमेपडि क्कमके दर्भादिक संथारा संथारे संथारके दर्भादिक संथारा दुरूहे दुरूहके पूर्व तथा उत्तर दिशि सन्मुख पल्यं कादिक आसन से बैठ बैठ के "करयलसंपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—"नमो त्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं" ऐसे अनन्त सिद्धों को नमस्कार करके, "नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपाविउकामाणं" अयवंते वर्तमानकाले महा विदेह क्षेत्र में विचरतेहुए तीर्थंकरों को नमस्कार करके अपने धर्माचार्यजी को नमस्कार करता हूँ। साधुप्रमुख चारों तीर्थ को खमाके, सब जीव राशि को खमाके पूर्व जो व्रत आदरे हैं उनमें जो अतिचार दोष लगे हों वे सब आलोयके पडिक्कमकरके निंदके निःशल्य होकरके, सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि, सव्वं मुसा

वायं पच्चक्खामि, सव्वं अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, सव्वं मेहुणं पच्चक्खामि, सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि, सव्वं कोहं माणं जाव सव्वं मिच्छादंसणसल्लं, सव्वं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, मणसा वयसा कायसा, ऐसे अठारह पापस्थानक पच्चक्खके सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि, जावजीवाए ऐसे चारों आहार पच्चक्खके जंपि य इमं सरीरं, इट्ठं, कंतं, पियं, मणुण्णं, मणामं, धिज्जं, विसासियं, समयं, अणुमयं, बहुमयं, भण्डकरण्डगसमाणं, रयणंकरंडगभूयं मा णं सीया, मा णं उण्हा, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं वाला, मा णं चोरा, मा णं दंसमसगा, मा णं वाहियं पितियं, कप्फियं, संभीमं, सन्निवाइयं विविहा रोगायंका परिसहा उवसग्गा फासा फुसंतु-एवं पि ये णं चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु, ऐसे शरीर वोसरा के, "कालं अणवकंखमाणे विहरामि" ऐसी मेरी सद्दहणा परूपणा तो है, फरसना करूं तो शुद्ध होऊं, ऐसेअपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-आराहणाए पंच अइआरा जाणियव्वा न समायरि-

भाषोउं—सचित्तनिक्खेवणया, सचित्तपिहणया कालाइक्कमेपरोवएसे मच्छरियाए जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

॥ पड़ी संलेखणा का पाठ ॥

अह भंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा झूसणा आराहणा पौषधशाला पूंजे, पूंजके उच्चार-पासवण भूमिको पडिलेहे, पडिलेहके गमणागमणे पडिक्कमेपडि क्कमके दर्भादिक संथारा संथारे संथारके दर्भादिक सं थारा दुरूहे दुरूहके पूर्व तथा उत्तर दिशि सन्मुख पल्यं कादिक आसन से बैठ बैठ के "करयलसंपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—"नमो त्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं" ऐसे अनन्त सिद्धों को नमस्कार करके, "नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपाविउकामाणं" जयवंत वर्तमानकाले महा विदेह क्षेत्र में विचरतेहुए तीर्थंकरों को नमस्कार करके अपने धर्माचार्यजी को नमस्कार करता हूँ। साधुप्रमुख चारों तीर्थ को खमाके, सर्व जीव राशि को खमाके पूर्व जो व्रत आदरे हैं उनमें जो अतिचार दोष लगे हों वे सर्व आलोयके पडिक्कमकरके निंदके निःशल्य होकरके, सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि, सव्वं मुसा

वायं पच्चक्खामि, सव्वं अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, सव्वं मेहुणं पच्चक्खामि, सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि, सव्वं कोहं माणं जाव सव्वं मिच्छादंसणसल्लं, सव्वं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, मणसा वयसा कायसा, ऐसे अठारह पापस्थानक पच्चक्खके सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि, जावजीवाए ऐसे चारों आहार पच्चक्खके जंपि य इमं सरीरं, इट्ठं, कंतं, पियं, मणुण्णं, मणामं, धिज्जं, विसासियं, समयं, अणुमयं, बहुमयं, भण्डकरण्डगसमाणं, रयणंकरंडगभूयं मा णं सीया, मा णं उण्हा, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं वाला, मा णं चोरा, मा णं दंसमसगा, मा णं वाहियं पितियं, कप्फियं, संभीमं, सन्निवाइयं विविहा रोगायंका परिसहा उवसग्गा फासा फुसंतु-एवं पि ये णं चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु, ऐसे शरीर वोसरा के, "कालं अणवकंखमाणे विहरामि" ऐसी मेरी सद्दहणा परूपणा तो है, फरसना करूं तो शुद्ध होऊं, ऐसे अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-आराहणाए पंच अइआरा जाणियव्वा न समायरि-

यव्वा तंजहा ते आलोउं-इहलोगासंसप्पओगे, पर लोगासंसप्पओगे जीवियासंसप्पओगे मरणासंसप्प ओगे, कामभोगासंसप्पओगे, जो मे देवसिओ अइ- यारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स धम्मस्स का पाठ ।

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए तिविहेण पडि क्कंतो वंदामि जिणचउव्वीसं ।

॥ पांच पदों की वंदना ॥

पहिले पद श्री अरिहंतजी जघन्य बीस तीर्थंकरजी, उत्कृष्ट एक सौ साठ तथा एक सौ सित्तर देवाधिदेवजी, उन में वर्तमान काल में बीस विहरमानजी महाविदेहक्षेत्र में विचरते हैं एक हजार आठ लक्षण के धरणहार चौंतीस अतिशय पैंतीस वाणी करके विराजमान चौंसठ इन्द्रों के वंदनीय अठारह दोष रहित, बारह गुण सहित अनन्त ज्ञान अनन्त-दर्शन अनन्त चारित्र, अनन्त-बल-वीर्य्य अनन्त सुख दिव्यध्वनि भामण्डल स्फटिक-सिंहासन, अशोक वृक्ष कुसुमवृष्टि देवदुन्दुभि छत्र और चँवर, इन आठ महा प्रतिहार्यों से युक्त, पुरुषाकार पराक्रम के धरणहार, अढाई

द्वीप पन्द्रह क्षेत्र में विचरें, जघन्य दो क्रोड केवली, और उत्कृष्ट नवक्रोड़ केवली, केवलज्ञान केवलदर्शन के धरणहार सर्व द्रव्य क्षेत्र काल भाव के जाननहार।

॥ सवैया ॥

नमो श्री अरिहंत, करमों का किया अन्त, हुवा सो केवलवंत, करुणा भंडारी हैं, अतिशय चौतीस धार, पैंतीस वाणी उच्चार, समझावें नर नार, पर उनकारी हैं। शरीर सुन्दराकार, सूरज सो झलकार, गुण हैं अनन्तसार, दोष परिहारी हैं, कहत तिलोक-रिख, मन वच काय करि, लुलि लुलि वारम्वार वंदना हमारी हैं ॥ १ ॥

ऐसे अरिहंत भगवन्त दीनदयाल महाराज! आप की अविनय आशातना (दिवस सम्बंधी) की हो तो बारम्बार हे अरिहंत भगवन्! मेरा अपराध क्षमा करिये, हाथ जोड, मान मोड़, सीस नमा कर १००८ वार नमस्कार करता हूँ।

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि।

आप मंगलीक हो उत्तम हो हे स्वामी! हे नाथ! आपका इस भव परभव भव भव में सदाकाल शरण हो।

दूजे पद श्री सिद्ध भगवान् महाराज पन्द्रह भेदे अनन्त सिद्ध हैं, आठ कर्म खपाय के मोक्ष पहुँचे हैं। (१) तीर्थसिद्धा (२) अतीर्थसिद्धा (३) तीर्थंकरसिद्धा (४) अतीर्थंकरसिद्धा (५) स्वयं-बुद्धसिद्धा (६) प्रत्येकबुद्धसिद्धा (७) बुद्धबोधितसिद्धा (८) स्त्री-लिंगसिद्धा (९) पुरुषलिंगसिद्धा (१०) नपुंसकलिंगसिद्धा (११) स्वलिंगसिद्धा (१२) अन्यलिंगसिद्धा (१३) गृहस्थलिंगसिद्धा (१४) एकसिद्धा (१५) अनेकसिद्धा, जहां जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, भय नहीं, रोग नहीं, शोक नहीं दुख नहीं, दारिद्र नहीं, कर्म नहीं काया नहीं मोह नहीं, माया नहीं चाकर नहीं, ठाकर नहीं भूख नहीं तृषा नहीं, जोत में जोत विराजमान सकल कार्य सिद्ध करके चवदे प्रकारे पन्द्रह भेदे अनन्ते सिद्ध भगवन्त हुए, अनन्त सुखों में तल्लीन, अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन क्षायिक समकित, निराबाध अटल अवगाहना, अमूर्त, अगुरु लघु, अनन्त-वीर्य आठ गुण करके सहित हैं।

॥ सवैया ॥

सकल करम टार कर किये वास मुगति में एक भाव आतमा का वासी है। देखत सकल भाव हुआ है अलख रूप भया है [illegible] भाव [illegible] है। [illegible] [illegible] नाहीं [illegible] अगुण [illegible] ऐसे सिद्धधारी है। [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] प्रभु, [illegible] [illegible] [illegible] वंदना हमारी है ॥ १ ॥

ऐसे सिद्ध भगवन्तजी महाराज आपकी (दिवस सम्बन्धी) अविनय अशातनाकी हो तो बारम्बार हे सिद्ध भगवन् मेरा अपराध क्षमा करिये, हाथ जोड़, मान मोड़ सीस नमाकर १००८ वार नमस्कार करता हूँ।

"तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि"।

यावत् भव भव आपका शरण होओ।

तीजे पद श्री आचार्यजी* छत्तीस गुण करके विराजमान पाच महाव्रत पालें पाँच आचार पालें, पाच इन्द्रिय जीतें, चार कषाय टालें, नव वाड सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य्य पालें, पाच समिति तीन गुप्ति शुद्ध आरधें, आठ सम्पदा (१ आचारसम्पदा, २ श्रुतसम्पदा, ३ शरीरसपदा, ४ वचनसंपदा, ५ वाचनासपदा, ६ मतिसंपदा, ७ प्रयोगमतिसंपदा, ८ सग्रहपरिता) सहित हैं।

॥ सवैया ॥

गुण हैं छत्तीस पुर, धरत धरम उर, मारत करम कुर, सुमति विचारी है। शुद्ध सो आचारवंत, सुन्दर है रूप कंत, भणिया सबही सिद्धत, वाचणी सुप्यारी है। अधिक मधुरवेण, कोई नहीं लोपे केण, सकल जीवाका सेण, कीरत अपारी है, कहत हैं

---

*आचार्यजी—संप्रदाय के आचार्य

गिलेस्तरीख हितकारी देत सीख ऐसे आचार्य तक संयम रमती है ॥

ऐसे आचारज न्याय पक्षी, मंत्रिक परिणामी, परमपूज्य, कल्पनीक, अचित्त वस्तु के महणाहार, सचित्त के त्यागी, वैरागी, महागुणी, गुण के अनुरागी सौभागी हैं, ऐसे श्री आचार्यजी महाराज आपकी (दिवस सम्बन्धी) अविनय आशातना की हो तो बार-म्बार हे आचार्यजी महाराज मेरा अपराध आप क्षमा करिये, हाथ जोड़, मान मोड़ शीस नमा कर १००८ बार नमस्कार करता हूँ।

"तिक्खुत्तो आयाहियं पयाहियं वंदामि नमं-सामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि"

आपका भव भव आप का शरण होवो ॥

श्री धर्माचार्यजी महाराज को वंदना—नमस्कार हो, जो पांच आचार पालें पांच इन्द्रिय जीतें जियकोहे, जियमाणे, जियमाये जियलोभ नाणसम्पन्ने दंसणसम्पन्ने चरित्तसम्पन्ने तप-सम्पन्न मंजमगा सबमा अप्पाणं भावेमाणे, ग्राम नगर पुर पट्टण सन्निवेशादि म विचरें, धन्य है वह ग्राम नगर जहाँ हमारे धर्माचार्य विराजे हैं जिनका वचनामृत सुने हैं, कान पवित्र कर है दर्शन कर नेत्र पवित्र कर हैं सूजता आहार पानी शुद्ध भाव से बहराये हैं परम उपकारी अनेकगुणधारी हमारे

धर्माचार्य* श्री श्री श्री १००८ श्री ....के चरण कमल में एक हजार आठ तिक्खुत्ता के पाठ से त्रिकाल विधिसहित मन वचन काया करके हाथ जोड़ मान मोड वंदना करूं हूं, अविनय आशातना हुई हो भुज्जो भुज्जो अपराध खमजो, भव भव में आप का शरण होजो।

चौथे पद श्री उपाध्यायजी, पच्चीस गुण करके सहित (ग्यारह अंग बारह उपांग चरणसत्तरी करणसत्तरी इन पच्चीस गुण करके सहित) तथा ग्यारह अंग को पाठ अर्थ सहित सम्पूर्ण जानें और १४ पूर्व के पाठक निम्नोक्त बत्तीस सूत्र के जानकार, ग्यारह अंग (१) आचाराग, (२) सूअगडाग, (३) ठाणांग, (४) समवायाग, (५) विवाहपन्नत्ती (६) णायाधम्मकहा (ज्ञाता धर्मकथा), (७) उपासगदसा (८) अंतगडदसा, (९) अणुत्तरोववाई, (१०) पण्हावागरणं (प्रश्नव्याकरणं) (११) विवागसुय (विपाकश्रुत)।

बारह उपाग—(१) उववाई, (२) रायप्सेणी, (३) जीवाभिगम, (४) पन्नवणा, (५) जबूदीवपन्नत्ती, (६) चन्दपन्नत्ती, (७) सूरपन्नत्ती, (८) निरयावलिया, (९) कप्पवडंसिया, (१०) पुप्फिया, (११) पुप्फचूलिया (१२) वण्हिदसा।

चार मूलसूत्र—(१) उत्तरज्झयणा (उत्तराध्ययन), (२) दसवेआलियसुत्त, (दशवैकालिक), (३) णंदीसुत्त (नंदीसूत्र), (४) अणुयोगद्दारं—(अनुयोगद्वारा)।

---

* धर्माचार्यजी—गुरु महाराज, जिन के पास समकित ली हो।

चार छेद—(१) दसासुयक्खंधो (दशाश्रुतस्कन्ध), (२) बिहक्कप्पो (बृहत्कल्प), (३) ववहारसुत्त (व्यवहारसूत्र) (४) णिसीहसुत्त (निशीथसूत्र) और बत्तीसवाँ आवस्सगं (आवश्यक), इत्यादि अनेक ग्रन्थ के जानकार, सात नय, निश्चय व्यवहार, चार प्रमाण आदि स्वमत तथा अन्य मत के जानकार, मनुष्य या देवता कोई भी विवाद में जिनको छलने में समर्थ नहीं, जिन नहीं पण जिन सरीखे, केवली नहीं पण केवली सरीखे हैं।

॥ सवैया ॥

पढत इग्यार अंग करमोंसु करे जंग पाखण्डी को मान भंग करण हुसियारी है। चवदे पूरब धार जानत आगम सार भविन के सुखकार भ्रमता निवारी है। पढावे भविक जन स्थिर कर देत मन तप कर तावे तन ममता निवारी है। कहत है तिलोकरिख ज्ञानभानु परतिख ऐसे उपाध्याय ताकूं वन्दना हमारी है।

ऐसे उपाध्यायजी महाराज मिथ्यात्वरूप अंधकार का मेटनहार, समकित रूप उद्योत का करनहार, धर्म से डिगते प्राणी को स्थिर कर सारए, वारए, धारए इत्यादिक अनेक गुण करके सहित हैं। ऐसे श्री उपाध्यायजी महाराज आपकी (दिवस सम्बन्धी) अविनय आशातना की हो तो वारम्वार हे उपाध्यायजी महाराज मेरा अपराध क्षमा करिये हाथ जोड़ मान मोड़ शीस नमा कर १००८ बार नमस्कार करता हूं।

"तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमं-सामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि"

यावत् भव भव आप का शरण होश्रो ॥

पांचवें पद 'नमो लोए सव्वसाहूणं' कहिये अढाई दीप पंद्रह क्षेत्र रूप लोक के विषे सर्व साधुजी जघन्य दो हजार करोड, उत्कृष्ट नव हजार करोड जयवंता विचरें, पांच महाव्रत पालें, पांच इन्द्रिय जीतें, चार कषाय टालें, भावसच्चे, जोग-सच्चे, करणसच्चे, क्षमावंत, वैराग्यवंत, मनसमाधारणीया, वयस-माधारणीया, कायसमाधारणीया, नाणसम्पन्ना, दसणसम्पन्ना, चारित्तसम्पन्ना, वेदनीयसमा अहियासनीया, मरणान्तिकसमा अहियासनीया हैं, ऐसे सत्ताईस गुण करके सहित, पांच आचार पालें, छह काय की रक्षा करें, सात कुव्यसन, आठ मद छोड़े, नव वाड सहित ब्रह्मचर्य्य पालें, दश प्रकार यति धर्म धारें, बारे भेदे तपस्या करें, सत्रह भेदे संयम पालें, अठारह पाप को त्यागें, बाईस परिषह जीतें, तीस महामोहनीय कर्म निवारें, तेतीस आशा-तना टालें, बयालीस दोष टाल के आहार पानी लेवें, सैतालीस दोष टाल के भोगें, बावन अनाचार टालें, तेडिया [बुलाया] आवे नहीं, नोतिया जीमे नहीं, सचित्त के त्यागी, अचित के भोगी, लोच करें, खुले पैर चालें, इत्यादि कायक्लेश करें, और मोह ममता रहित हैं ॥

चार छेद—(१) दसासुयक्खंधो (दशाश्रुतस्कन्ध), (२) बिहक्कप्पो (बृहत्कल्प) (३) ववहारसुत्त (व्यवहारसूत्र) (४) निसीहसुत्त (निशीथसूत्र) और बत्तीसवाँ आवस्सग (आवश्यक), इत्यादि अनेक ग्रन्थ के जानकार, सात नय, निश्चय व्यवहार, चार प्रमाण आदि स्वमत तथा अन्य मत के जानकार, मनुष्य या देवता कोई भी विवाद में जिनको छलने में समर्थ नहीं, जिन नहीं पण जिन सरीखे केवली नहीं पण केवली सरीखे हैं।

॥ सवैया ॥

पढ़त इग्यार अंग करमोंसु लरे जंग पाखण्डी के मान भंग करण हुसियारी है। चवदे पूरव धार जानत आगम सार भविन के सुखकार भ्रमता निवारी है। पढ़ावे भविक जन स्थिर कर देत मन तप कर तापे तन ममता निवारी है। ध्यावत है जिनचरित्र शासनगुन परसिद्ध ऐसे उपाध्याय ताकूं वन्दना हमारी है।

एस उपाध्यायजी महाराज मिथ्यात्वरूप अंधकार का मेटनहार, समकित रूप उद्योत का करणहार धर्म से डिगते प्राणी को स्थिर कर सारण वारण, धारण, इत्यादिक अनेक गुण करके सहित हैं। एस श्री उपाध्यायजी महाराज आपकी (दिवस सम्बन्धी) अविनय आशातना की हो तो वारम्बार हे उपाध्यायजी महाराज मेरा अपराध क्षमा करिये हाथ जोड़ मान मोड़, शीश नमा कर १००८ वार नमस्कार करता हूं।

"तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि"

यावत् भव भव आप का शरण होजो ॥

पांचवें पद 'नमो लोए सव्वसाहूणं' कहिये अढाई द्वीप पंद्रह क्षेत्र रूप लोक के विषे सर्व साधुजी जघन्य दो हजार करोड, उत्कृष्ट नव हजार करोड जयवंता विचरें, पांच महाव्रत पालें, पांच इन्द्रिय जीतें, चार कषाय टालें, भावसच्चे, जोगसच्चे, करणसच्चे, क्षमावंत, वैराग्यवंत, मनसमाधारणीया, वयसमाधारणीया, कायसमाधारणीया, नाणसम्पन्ना, दंसणसम्पन्ना, चारित्तसम्पन्ना, वेदनीयसमा अहियासनीया, मरणान्तिकसमा अहियासनीया हैं, ऐसे सत्ताईस गुण करके सहित, पांच आचार पालें, छह काय की रक्षा करें, सात कुव्यसन, आठ मद छोड़े, नव वाड सहित ब्रह्मचर्य्य पालें, दश प्रकार यति धर्म धारें, बारे भेदे तपस्या करें, सत्रह भेदे संयम पालें, अठारह पाप को त्यागें, बाईस परिषह जीतें, तीस महामोहनीय कर्म निवारें, तेतीस आशातना टालें, बयालीस दोष टाल के आहार पानी लेवें, सैंतालीस दोष टाल के भोगें बावन अनाचार टालें, तेडिया [बुलाया] आवे नहीं, नोतिया जीमे नहीं, सचित्त [illegible] अचित्त के भोगी, लोच करें, खुले पैर चालें, इत्यादि [illegible] करें, और मोह ममता रहित हैं।

॥ सवैया ॥

आदरी संजम भार करिवि करे अपार समिति गुपति धार विकथा निवारी है अयथा करे छ काय सावद न वेदे बाय सुमत कपाय याय किरिया संभारी है। ज्ञान धर्मे ध्यान बास देवेँ उपदेश भास ताप के करें काम समता उ भारी है। कहत हैं तिलोक रिख कर्मों को हरावें विख, ऐसे मुनिराज ताकूं वंदना हमारी है।

ऐसे मुनिराज महाराज आप की (दिवस सम्बन्धी) अविनय आशातना की हो तो बारम्बार हे मुनिराज मेरा अपराध क्षमा करिये हाथ जोड़, मान मोड़, सीस नमाकर १००८ बार नमस्कार करता हूं।

"तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमं सामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि ॥

सदा काल आपका शरणा होओ ॥

॥ दोहा ॥

अनंत चौबीसी जिन नमूं, सिद्ध अनन्ते कोड़।
केवल ज्ञानी गणधरा वंदू बे कर जोड़॥
दोय कोड़ केवलधरा विहरमान जिन बीस।
सहस्र युगल कोडी नमूं साधु वंदू निशदीस॥
धन साधु धन साध्वी धन धन है जिनधर्म।
ये समरया पातक झरे टूटे आठों कर्म॥

अढाई द्वीप पन्द्रह क्षेत्र मे श्रावक श्राविका दान देवें, शील पाले, तपस्या करें, शुद्ध भावना भावें, संवर करें, सामायिक करें, पोसह करें, प्रतिक्रमण कर, तीन मनोरथ चिंतवें, चौदह नियम चितारें, जीवादिक नव पदार्थ जाने, श्रावक के इक्कीस गुण करके युक्त एक व्रतधारी, जाव बारह व्रतधारी भगवंत की आज्ञा मे विचरें ऐसे बडों से हाथ जोड पैर पडके क्षमा मागता हूँ, आप क्षमा करें आप क्षमा करने योग्य हैं, और छोटों से समुचे खमाता हूँ ॥

॥ चौरासी लाख जीवाजोंणी (जीवयोनि) का पाठ ॥

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अपकाय, सात लाख तेउ-काय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख बेइन्द्रिय, दो लाख तेइन्द्रिय, दो लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य। ऐसे चार गति में चौरासी लाख जीवाजोणी के सूक्ष्म बादर पर्याप्त अपर्याप्त हालते चालते जीवों को उठते बैठते जानते अजानते किसी जीव को हनन किया हो, कराया हो, हनता प्रति अनुमोदन किया हो, छेदा हो, भेदा हो, किलामणा उपजाइ हो, मन, वचन, काया, करके अठारह लाख चोवीस हजार एक सौ बीस (१८२४१२०) प्रकारे *तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

---

*नोट—जीवतत्त्व के ५६३ भेदोंको अभिहयादि दशोंके साथ गुणाकार करने से ५६३० भेद होते हैं। फिर इनको राग और

॥ खामेमि सव्वे जीवा का पाठ ॥

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ॥
एवमहं आलोइय, निंदिय गरहिय दुगंछियं सम्मं।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं॥

देवसियपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं

(मैं दिवस सम्बन्धी प्रायश्चित्त की शुद्धि के लिए कायोत्सर्ग करता हूँ)

॥ समुच्चय पच्चक्खाण का पाठ ॥

गंठिसहियं, मुट्ठिसहियं, नमुक्कारसहियं पोरिसियं साड्ढपोरिसियं, (अपनी अपनी इच्छा अनुसार) तिविहंपि चउविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं,

---

इसके साथ त्रिगुणाकार करने से ११२६ भेद बनते हैं। फिर इन्हीं को मन वचन काया के साथ त्रिगुणा करने से ३३७८ भेद होते हैं अपितु इनको ही तीन करणों के साथ संमिश्रण कर देने से १०१३४ भेद बन जाते हैं अपितु इनको भी फिर तीन कालके साथ गुणाकार करने से ३०४०२ भेद हो जाते हैं। फिर इनको अरिहन्त, सिद्ध साधु देव गुरु और आत्मा इस प्रकार छः से गुणाकार करने पर १८२४१२ भेद बनते हैं अर्थात् इस प्रकार से मैं मिच्छामि दुक्कडं देता हूं और फिर पाप कर्म न करने की इच्छा करता हूं॥

साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तारागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं * वोसिरामि ।

दोहा

आगे आगे दव वले, पीछे हरिया होय ।
बलिहारी उस वृक्ष की, जड़ काट्या फल होय ॥

शम संवेग निर्वेद अनुकम्पा आस्था देव अरिहंत, गुरु निर्ग्रन्थ, धर्म केवली भाषित दयामय, और सच्चे की सद्दहणा झूठे का बार बार मिच्छा मि दुक्कडं ॥ मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण, अविरति का प्रतिक्रमण, प्रमाद का प्रतिक्रमण, कषाय का प्रतिक्रमण, अशुभ योग का प्रतिक्रमण, इन पांच प्रतिक्रमणों में से किसी का प्रतिक्रमण न किया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

गये काल का प्रतिक्रमण, वर्त्तमान काल का संवर, भविष्य (आवते) काल का पच्चक्खाण में कोई दोष लगा हो तो तस्स मि मिच्छा दुक्कडं ।

---

* स्वयं पच्चक्खाण करना हो तब 'वोसिरामि' ऐसा बोले और जब दूसरे को पच्चक्खाण कराना हो तो 'वोसिरे' ऐसा बोले ।

॥ खामेमि सव्वे जीवा का पाठ ॥

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झं न केणइ ॥
एवमहं आलोइय निंदिय गरहिय दुगंछियं सम्मं ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥

देवसियपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं
(मैं दिवस सम्बन्धी प्रायश्चित्त की शुद्धि के लिए कायोत्सर्ग करता हूँ)

॥ समुच्चय पच्चक्खाण का पाठ ॥

गंठिसहियं, मुट्ठिसहियं, नमुक्कारसहियं पोरिसियं साड्ढपोरिसियं, (अपनी अपनी इच्छा अनुसार) तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं, असणं पाणं, खाइमं,

इनके साथ द्विगुणाकार करने से ११२६ भेद बनते हैं । फिर इन्हीं का मन वचन काया के साथ त्रिगुणा करने से ३३७८ भेद होते हैं । पुनः इनको ही तीन करणों के साथ संयोजन करने से १०१३४ भेद बन जाते हैं पुनः इनको भी फिर तीन कालों के साथ गुणाकार करने से ३०४०२ भेद हो जाते हैं । फिर इनको अरिहन्त सिद्ध साधु देव गुरु और आत्मा इस प्रकार छः से गुणा करने पर १८२४१२ भेद बनते हैं अर्थात् इस प्रकार से मैं मिच्छामि दुक्कडं देता हूं और फिर पाप कर्म न करने की इच्छा करता हूं ॥

साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागा-रेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं * वोसिरामि ।

दोहा

आगे आगे दव बले, पीछे हरिया होय ।
बलिहारी उस वृक्ष की, जड़ काट्या फल होय ॥

शम संवेग निर्वेद अनुकम्पा आस्था देव अरिहंत, गुरु निर्ग्रन्थ, धर्म केवली भाषित दयामय, और सच्चे की सद्दहणा झूठे का बार बार मिच्छा मि दुक्कडं ॥ मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण, अविरति का प्रतिक्रमण, प्रमाद का प्रतिक्रमण, कषाय का प्रतिक्रमण, अशुभ योग का प्रतिक्रमण, इन पांच प्रतिक्रमणों में से किसी का प्रतिक्रमण न किया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

गये काल का प्रतिक्रमण, वर्त्तमान काल का संवर, भविष्य (आवते) काल का पच्चक्खाण में कोई दोष लगा हो तो तस्स मि मिच्छा दुक्कडं ।

---

* स्वय पचक्खाण करना हो तब 'वोसिरामि' ऐसा बोले और जब दूसरे को पचक्खाण कराना हो तो 'वोसिरे' ऐसा बोले ।

॥ प्रतिक्रमण करने की विधि ॥

निरवद्य स्थान में शुद्धतापूर्वक एक आसन पर बैठ कर तीन-बार तिक्खुत्तो के पाठ से श्रीशासनपति को या वर्तमान में अपने गुरु महाराज को खड़े हो वंदना करके चउवीसत्थ की आज्ञा ले कर चउवीसत्थ करें। चउवीसत्थ में इरियावहियाए का पाठ १ तस्स-उत्तरी का पाठ १ कहके काउस्सग्ग करें। काउस्सग्ग में दो लोगस्स का ध्यान करें, मन में १ नवकार मंत्र, बोलके काउस्सग्ग पारें, फिर प्रगट चार ध्यान का पाठ (ध्यान में मन वचन काया चलित हुए हों आर्तध्यान रौद्रध्यान ध्याया हो, धर्मध्यान शुक्लध्यान न ध्याया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं) बोलकर १ लोगस्स का पाठ बोल कर दो बार नमोत्थुणं का पाठ बाया गोडा ऊँचा रखके बोलें। पीछे श्रीमहावीरस्वामी की अथवा गुरु की देवसिय प्रतिक्रमण ठाने की आज्ञा लेवें। बाद इच्छामि णं भंते का पाठ बोलें। पीछे नवकार मंत्र का उच्चारण करें फिर तिक्खुत्तो का पाठ। कहकर प्रथम आवश्यक की आज्ञा मांगें। प्रथम आवश्यक में करेमि भंत का पाठ बोलकर पीछे "इच्छामि ठामि" का पाठ कहें, पीछे तस्सउत्तरी का पाठ उच्चारण करके काउस्सग्ग करें। काउ

नोट—सामायिक की विधि सामायिक सूत्र पुस्तक से जान लेवें।

स्सगमें १४ ज्ञानके अतिचार का, ५ सम्यक्त्व का; ६० वारह व्रतों का, १५ कर्मादान का, ५ संलेखणा का, एवं ९९ अतिचारों का, अठारह पापस्थानकों का, इच्छामि ठामि का और नवकार मंत्र का पाठ चिंतवन करके काउस्सग्ग पालें, काउस्सग्ग में प्रत्येक पाठ की समाप्ति में मिच्छा मि दुक्कडं के वदले 'आलोउं' चिंतवें। काउस्सग्ग पालते समय "नमो अरिहंताणं" यह शब्द प्रगट कह कर आर्तध्यान रौद्रध्यान आदि बोलके पहला आवश्यक समाप्त करें। बाद तिक्खुत्तो के पाठ से दूसरे आवश्यक की आज्ञा मांगें।

दूसरे आवश्यक मे एक लोगस्स का पाठ कह के सामायिक चउवीसथव ये दो आवश्यक पूरे हुए। बाद तिक्खुत्तो के पाठ से तीसरे आवश्यक की आज्ञा मांगें, तीसरे आवश्यक मे इच्छामि खमासमणो का पाठ दो वक्त बोलें।

खमासमणो की विधि ॥

प्रथम जहाँ निसीहियाए शब्द आवे तब दोनों गोडे खडे करके दोनों हाथ जोडकर वैठे तथा ६ आवर्तन करें सो इस प्रकार-प्रथम 'अहो' 'कायं काय' यह शब्द उच्चारते ३ आवर्तन होतें हैं सो कहते हैं—दोनों हाथ लंवे कर हाथ की दश अगुलियाँ भूमि पर लगा के तथा गुरुचरण स्पर्श करके मुँह से "अ" अक्षर नीचे स्वर से कहें, फिर ऐसे ही दश अंगुलियाँ अपने मस्तक पर लगा के "हो" अक्षर ऊँचे स्वर से कहें, ये दोनों अक्षर कहने से पहिला आवर्तन

होता है, इस प्रकार "का" और "यं" ये दो अक्षर उचारते दूसरा आवर्त्तन हुआ, इस तरह "का" और "य" ये दो अक्षर कहने से तीसरा आवर्त्तन हुआ। फिर "जत्ता मे जवणिज्जं च मे" शब्द उचारते ३ आवर्त्तन होते हैं, वे इस तरह—प्रथम "ज" अक्षर मंद स्वर से "त्ता" अक्षर मध्यम स्वर से और "मे" अक्षर उच्च स्वर से, इस तरह से ऊपर मुजब बोलें, ये तीन अक्षर बोलने से प्रथम आवर्त्तन हुआ। और इसी प्रकार "ज, व, णि" ये तीन अक्षर त्रिविध स्वर से ऊपर मुजब कहने से दूसरा आवर्त्तन हुआ। तथा इसी प्रकार "ज्जं, च, मे" ये तीन अक्षर त्रिविध स्वर से पूर्ववत् बोलने से तीसरा आवर्त्तन हुआ, एवं ३ + ३ = ६ आवर्त्तन १ पाठ में बोलें और जहाँ "तित्तीसन्नयराए" शब्द आवे तब खड़ा होकर पाठ समाप्त करें, इसी मुताबिक खमासमणो का दूसरा पाठ बोलें इसमें भी ६ आवर्त्तन पूर्ववत् करें। दूसरे खमासमणो में "आवस्सियाए पडिक्कमामि" ये १० अक्षर न कहें। इस प्रकार दो खमासमणा देकर सामायिक एक, चउवीसत्थव दो वंदना तीन ये तीन आवश्यक पूरे हुए। अब चौथा आवश्यक की क्रियासूची के पाठ से आज्ञा लें।

नोट—खमासमणा में जहाँ "तित्तीसन्नयराए" शब्द आवे उस वक्त पहिले एक पांव होवे दूसरा पीछे नहीं।

पीछे खड़े हो कर ६६ अतिचारों का पाठ जो काउस्सग्गमें चिंतन किया था वह सब यहा प्रगट कहें, फरक इतना ही है कि काउस्सग्ग में प्रत्येक पाठ की समाप्ति में "मिच्छा मि दुक्कडं" की जगह 'आलोउ' कहा था सो आलोउं के वदले प्रगट "मिच्छा मि दुक्कड" कहें वाद श्रावक सूत्र पढने की आज्ञा मागे, पीछे "तस्स सव्वस्स" का पाठ उच्चारण करें, फिर नीचे वैठकर दाहिना (जीवणा) गोडा ऊंचा रखकर दोनों हाथ की दशों ही अंगुलियाँ मिलाकर गोडे के ऊपर रक्खें, पीछे नवकार मंत्र कह के "करेमि भंते" का पाठ पढकर "चत्तारि मंगल" का पाठ बोलें, वाद 'इच्छामि ठामि" का पाठ तथा "इरियावहियाए" का पाठ करें, वाद "आगमे तिविहे" का पाठ पढकर दंसणसमकित तथा वारह अणुव्रत स्थूलसहित कहें। फिर ऐसे समकित पूर्वक वारह-व्रत सलेखणा सहित, इनके विषय जो कोई अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार अनाचार जानते अजानते मन, वचन, काय करके सेवन किया हो, सेवन कराया हो सेवन करते हुए को अनुमोदन किया हो तो अनन्त सिद्ध केवली भगवान् की साख से "मिच्छा मि दुक्कडं" कह के अठारह पापस्थानक और "इच्छामि ठामि" का पाठ वोलें फिर खडे होकर हाथ जोड के "तस्स धम्मस्स" का पाठ उच्चारण करें, वाद दो खमासमणा पूर्ववत् विधि सहित दे करके भाववंदना करने की आज्ञा लें, फिर दोनों गोड़ा नमाय के गोडा ऊपर दोनों हाथ जोड के मस्तक को नीचे नमाय कर एक

नवकार मंत्र कह के पांच पदों को वंदना करें। फिर नीचे बैठ के अनंत चौबीसी कह के अढाई द्वीप का पाठ बोलकर चौरासी लाख जीवयोनि का पाठ उचार के "खामेमि सब्वे जीवा" का पाठ बोलकर अठारह पापस्थान कहें, फिर सामायिक एक, चउवीसत्थव दो वंदना तीन, प्रतिक्रमण चार, ये चार आवश्यक पूरे हुए, बाद खड़े होके पांचवां आवश्यक की निक्खुत्तो के पाठ से आज्ञा लेकर " देवसियपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं" बोलकर बाद नवकार मंत्र, करेमि भंते का पाठ, इच्छामि ठामि का पाठ, और तस्स उत्तरी का पाठ कह के काउस्सग्ग करें काउस्सग्ग में दैवसिक रात्रिक प्रतिक्रमण में ४ लोगस्स पाक्षिक प्रतिक्रमण में १२ लोगस्स, चौमासी प्रतिक्रमण में २ लोगस्स संवत्सरी प्रतिक्रमण में ४० लोगस्स का काउस्सग्ग करें। फिर काउस्सग्ग पारें, आर्तध्यान रौद्रध्यान आदि चार ध्यान का पाठ प्रगट बोलके एक लोगस्स कहें, बाद दो खमासमणा विधिसहित देवें, सामायिक एक चउवीसत्थव दो, वंदना तीन प्रतिक्रमण चार काउस्सग्ग पांच, ये पांच आवश्यक पूरे हुए। बाद छट्ठे आवश्यक का स्वामी श्री श्रीमहावीर स्वामी अन्तरयामी ऐसे कहें छट्ठे आवश्यक में बड़ा हो साधुजी महाराज हों तो उनसे अपनी शक्ति अनुसार पच्चक्खाण करें तथा वे न हों तो बड़े श्रावक से पच्चक्खाण मांगे और बड़े श्रावक न हों तो स्वयमेव समुच्चय पच्चक्खाण के पाठ से पच्चक्खाण करें। फिर सामायिक

एक, चउवीसथव दो, वंदना तीन, प्रतिक्रमण चार, कायोत्सर्ग पाच, पचक्खाण छह, ये छहों आवश्यक समाप्त हुए।

ऐसे कह कर इन छह आवश्यक में जानते अजानते जो कोई अतिचार दोष लगा हो तथा पाठ उच्चारते काना मात्रा 'अनुस्वार, पद, अक्षर अधिक न्यून आगे पीछे कहा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण १, अव्रत का प्रतिक्रमण २; कषाय का प्रतिक्रमण ३, प्रमादका प्रतिक्रमण ४, अशुभ योग का प्रतिक्रमण ५, ये पाच प्रतिक्रमण माहिला कोई भी प्रतिक्रमण न किया हो हालते चालते उठते बैठते पढते गुणाते मन वचन काया करके, ज्ञान दर्शन चारित्र तप सम्बन्धी जानते अजानते द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, आश्रयी कोई भी प्रकार से पाप दोष लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं। गये काल का प्रतिक्रमण, वर्तमान काल का सवर-सामायिक, आवता काल का पचक्खाण, उन में जो कोई दोष लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कड।

फिर नीचे बैठकर डावा गोडा ऊंचा रख के दोनों हाथ मस्तक पर रखकर दो वक्त नमोत्थुण पूर्वोक्त विधि से बोल के जो साधु मुनिराज विराजते हों, उनको तिक्खुत्तो के पाठ से तीन वक्त विधि-सहित वंदना नमस्कार कर के, तथा कोई साधु मुनिराज नहीं विराजते होवें तो पूर्व तथा उत्तर दिशि की तरफ मुंह करके श्रीमहावीर स्वामी को, तथा धर्माचार्य (धर्मगुरु) को वंदना नमस्कार

करके फिर स्वधर्मी भाइयों के साथ क्षमत क्षामणा भन्त करके स करें, बाद चौवीस स्तवन उच्चारण करें। प्रतिक्रमण में जहां देवसिय शब्द आवे, वहां देवसिय प्रतिक्रमण में तो देवसिय सम्बंधी राइय प्रतिक्रमण में राइय सम्बन्धी, पक्खीप्रतिक्रमण में पक्खी सम्बन्धी, चौमासी प्रतिक्रमण में चौमासी सम्बन्धी और संवत्सरी प्रतिक्रमण में संवत्सरी संबंधी कहें।

नोट—पुरुष 'करता हूं' ऐसा कहे उस जगह स्त्री को 'करती हूं' ऐसा कहना चाहिये

॥ इति प्रतिक्रमणसूत्रं विधिसहितं समाप्तम् ॥

न्यूनाधिक आगे पीछे एवंविपरीत हुआ हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

सूचना—प्रतिक्रमण के जानकार से सीखे और पढ़ कर कंठस्थ कर लेवे।

सर्वं तु कथञ्चिगम्यं,

ॐ शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

चोवीस जिनस्तवन

श्रीऋषभ अजित संभव स्वामी, अभिनन्दनजी अन्तर्यामी, अन्तर्यामी; कर्म खपाय मुक्ति गया ए। सुमति पद्म जिनेश्वरो, सुपारसजी परमेश्वरो, स्वामी सुखकरो; चन्द्रप्रभस्वामी शिव लियो ए॥ १ ॥ सुवि- धिनाथ शीतल ध्याऊँ, श्रेयांस तणाँ गुण मुख गाऊँ, यश मुख गाऊँ; वासुपूज्य वंदूँ सही ए। विमलनाथ अनन्तज्ञानी, श्रीधर्मनाथ शुक्लध्यानी निर्मलज्ञानी; श्री शान्तिजिनेश्वर सोलमा ए॥२॥ कुंथुनाथ अरनाथ नमूँ, श्रीमल्लिनाथ उगनीसमाँ, उगनीसमाँ; यशकीर्ति मुनिसुव्रत, तणी ए। नेमिनाथ नेमीश्वरो, श्रीपारसजी परमेश्वरो,स्वामी सुखकरो; महावीर शासनरा धणीए, (श्रीवर्द्धमान शासन का धणीए) ॥ ३ ॥ ये चौवीस जिनवर राया, ये चौवीसे शिवपद पाया, शिवपद पाया; अष्ट कर्मज्याँने क्षय कियाए। चारबीस जिनवर जपसी, अष्ट कर्म तेनाँ खपसी, तेनाँ खपसी; दुर्लभ नरभव पामियो ए॥४॥ पूज्य श्री दौलतरामजी, रिख लालचन्दजी कर जोड़ नमूँ, कर जोड़ नमूँ; रामपुरे गुण गाविया ए। रामपुरे गुण गाविया, चारों तीर्थ के मन भाविया, चित्त चाविया; पूज्यजी के परसादसुँ ए ॥५॥

करके सर्व स्वधर्मी भाइयों के साथ क्षमत क्षामणा उत्कृष्ट से करें, बाद चौबीस स्तवन उच्चारण करें। प्रतिक्रमण में जहां देवसिय शब्द आवे, वहां देवसिय प्रतिक्रमण में तो देवसिय सम्बन्धी, राइय प्रतिक्रमण में राइय सम्बन्धी, पक्खीप्रतिक्रमण में पक्खी-सम्बन्धी, चौमासी प्रतिक्रमण में चौमासी सम्बन्धी और संवत्सरी प्रतिक्रमण में संवत्सरी सम्बन्धी कहें।

नोट—पुरुष 'करता हूं' ऐसा कहें तथा स्त्री को 'करती हूं' ऐसा कहना चाहिये

॥ इति प्रतिक्रमणसूत्रं विधिसहितं समाप्तम् ॥

न्यूनाधिक आगे पीछे सूत्रविपरीत होगया हो, तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

सूचना—प्रतिक्रमण के आगार से सीखे और शुद्ध उच्चारण कर बोलें।

तस्स तु कयविगम्मं,

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

चोवीस जिनस्तवन

श्रीऋषभ अजित संभव स्वामी, अभिनन्दनजी अन्तर्यामी, अन्तर्यामी; कर्म खपाय मुक्ति गया ए। सुमति पद्म जिनेश्वरो, सुपारसजी परमेश्वरो, स्वामी सुखकरो; चन्द्रप्रभस्वामी शिव लियो ए॥ १ ॥ सुवि· धिनाथ शीतल ध्याऊँ, श्रेयांस तणाँ गुण मुख गाऊँ, यश मुख गाऊँ; वासुपूज्य वंदूँ सही ए। विमलनाथ अनन्तज्ञानी, श्रीधर्मनाथ शुक्लध्यानी निर्मलज्ञानी; श्री शान्तिजिनेश्वर सोलमा ए॥२॥ कुंथुनाथ अरनाथ नमूँ, श्रीमल्लिनाथ उगनीसमाँ, उगनीसमाँ; यशकीर्ति मुनिसुव्रत, तणी ए। नेमिनाथ नेमीश्वरो, श्रीपारसजी परमेश्वरो,स्वामी सुखकरो; महावीर शासनरा धणीए, (श्रीवर्द्धमान शासन का धणीए) ॥ ३ ॥ ये चौवीस जिनवर राया, ये चौवीसे शिवपद पाया, शिवपद पाया; अष्ट कर्मज्याँने क्षय कियाए। चारबीस जिनवर जपसी, अष्ट कर्म तेनाँ खपसी, तेनाँ खपसी; दुर्लभ नरभव पामियो ए॥४॥ पूज्य श्री दौलतरामजी, रिख लालचन्दजी कर जोड़ नमूँ, कर जोड़ नमूँ; रामपुरे गुण गाविया ए। रामपुरे गुण गाविया, चारों तीर्थ के मन भाविया, चित्त चाविया; पूज्यजी के परसादसुँ ए॥५॥

करके सर्व साधर्मी भाइयों के साथ क्षमत क्षामणा अन्तःकरण से करें, बाद चौवीस स्तवन उच्चारण करें। प्रतिक्रमण में जहाँ देवसिय शब्द आवे, वहाँ देवसिय प्रतिक्रमण में तो देवसिय सम्बंधी, राइय प्रतिक्रमण में राइय सम्बन्धी, पक्खीप्रतिक्रमण में पक्खी-सम्बन्धी, चौमासी प्रतिक्रमण में चौमासी सम्बन्धी और संवत्सरी प्रतिक्रमण में संवत्सरी संबंधी कहें।

नोट—पुरुष 'करता हूँ' ऐसा कहे उस जगह स्त्री को 'करती हूँ' ऐसा कहना चाहिये

॥ इति प्रतिक्रमणसूत्रं विधिसहितं समाप्तम् ॥

न्यूनाधिक आगे पीछे सुविपरीत होगया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

सूचना—प्रतिक्रमण के सामायिक से सीखे और मन में रख कर बोलें।

॥ शुभं तु केवलिगम्यं,

ॐ शान्तिः ! शान्ति !! शान्ति !!!

चोवीस जिनस्तवन

श्रीऋषभ अजित संभव स्वामी, अभिनन्दनजी अन्तयामी, अन्तर्यामी; कर्म खपाय मुक्ति गया ए। सुमति पद्म जिनेश्वरो, सुपारसजी परमेश्वरो, स्वामी सुखकरो; चन्द्रप्रभस्वामी शिव लियो ए॥ १ ॥ सुवि- धिनाथ शीतल ध्याऊँ, श्रेयांस तणॉ गुण मुख गाऊँ, यश मुख गाऊँ; वासुपूज्य वंदूॅ सही ए। विमलनाथ अनन्तज्ञानी, श्रीधर्मनाथ शुक्लध्यानी निर्मलज्ञानी; श्री शान्तिजिनेश्वर सोलमा ए ॥२॥ कुंथुनाथ अरनाथ नमूॅ, श्रीमल्लिनाथ उगनीसमॉ, उगनीसमॉ; यशकीर्ति मुनिसुव्रत, तणी ए। नेमिनाथ नेमीश्वरो, श्रीपारसजी परमेश्वरो, स्वामी सुखकरो; महावीर शासनरा धणीए, (श्रीवर्द्धमान शासन का धणीए) ॥ ३ ॥ ये चौवीस जिनवर राया, ये चौवीसे शिवपद पाया, शिवपद पाया; अष्ट कर्मज्यॉने क्षय कियाए। चारवीस जिनवर जपसी, अष्ट कर्म तेनॉ खपसी, तेनॉ खपसी; दुर्लभ नरभव पामियो ए ॥४॥ पूज्य श्री दौलतरामजी, ति लालचन्दजी कर जोड़ नमूॅ, कर जोड़ नमूँ; रामपुरे गुण गाविया ए। रामपुरे गुण गाविया, चारों तीर्थ के मन भाविया, चित्त चाविया; पूज्यजी के परसादसुं ए ॥५॥

पुस्तक मिलने का पता—

अगरचन्द भैरोंदान सेठिया

जैन शास्त्रभण्डार (लाइब्रेरी)

बीकानेर [राजपूताना]

मुद्रक—गणेश पाण्डेय भार्गवी प्रेस दारागंज प्रयाग।